उपोद्घात।

इस पुस्तकके लिखनेका उद्यम सेठ बैजनाथ सरावगी मालिक फर्म सेठ जोखीराम मूंगराज नं० १७२ हरिशनरोड कलकत्ताकी प्रेरणासे हुआ है। इसके पहले बंगाल, विहार, उड़ीसा, संयुक्तप्रांत व बम्बई प्रांतके तीन स्मारक प्रगट हो चुके हैं। इस पुस्तकमें मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजपूतानाके जैन स्मारक जो कुछ सर्कारी रिपोर्टसे मालूम हुए हैं उनका संग्रह कियागया है। मध्य-प्रदेशके हरएक जिलेका वर्णन जाननेके लिये पुस्तकोंकी सहायता नागपुर म्यूजियमके नायब क्यूरेटर मि० इ० ए० डिरोब्रू एफ० झेड० एस० तथा मि० एम० ए० सुबूर एम० एन० एस० क्वा-इन एक्सपर्टने दी जिनके हम अतिशय आभारी हैं। मध्यभारत और राजपूतानाके सम्बन्धमें अनेक पुस्तकोंके देखनेकी सहायता रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझा क्यूरेटर म्यूजियम अजमेरने दी जिनके भी हम अति आभारी हैं। Imperial Gazetteer इम्पीरियल गजेटियर आदि पुस्तकोंकी सहायता व एपिग्रेफिका आदि पुस्तकोंके देखनेमें मदद इम्पीरियल लाइब्रेरी कलकत्ता तथा बम्बई रायल एसियाटिक सोसायटी लाइब्रेरी बम्बईसे प्राप्त हुई है जिनके भी हम अति कृतज्ञ हैं।

इस पुस्तकके पढ़नेसे ज्ञात होगा कि जैनियोंके मंदिर व उनमें स्थापित बड़ी २ मूर्तियें उन स्थानोंमें जैनियोंके न रहनेसे अब किस अविनयकी दशामें हैं।

हमें विदित होता है कि इन तीनो जिलोंमें सर्कारद्वारा बहुत कम खोज हुई है। यदि विशेष खोज की जावे तो जैनियोंके और भी स्मारक मिल सक्ते हैं। जो कुछ मिले हैं उनसे यह तो स्पष्ट है कि जैनियोंका प्रभुत्व बहुत अधिक व्यापक था व अनेक राजाओंने जैनधर्मकी भक्तिसे अपने आत्माको पवित्र किया था। जनियोंका कर्तव्य है कि अपने स्मारकोंको जानकर उनकी रक्षाका उपाय करें। इस पुस्तकके प्रकाश होनेमें द्रव्यकी खास सहायता रायबहादुर साहू जगमंधरदासजी रईस नजीबाबादने दी है इसके लिये हम उनके आभारी हे।

सजोत
१०–६–२६ } जैनधर्मका प्रेमी–ब्र० सीतलप्रसाद।
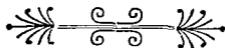
भूमिका।

इस पुस्तकमें ब्रह्मचारीजीने मध्यप्रदेश, मध्यभारत और राजपूताना इन तीन प्रान्तोंके जैन स्मारकोंका परिचय दिया है।

मध्यप्रदेश।

मध्यप्रदेश दो भागोंमें वटा हुआ है:–(१) मध्यप्रान्त खास जिसमें १८ जिले हैं और (२) वरार जिसमें चार जिले हैं। मध्यप्रांत खासको गोंडवाना भी कहते हैं कारणकि एक तो यहां गोंडोंकी संख्या बहुत है, दूसरे मुसलमानी समयके लगभग यहां अनेक गोंड घरानोंका राज्य रहा है। यह प्रान्त संस्कृतिमें बहुत पिछड़ा हुआ गिना जाता है, और लोगोंका ख्याल है कि इस प्रान्तका प्राचीन इतिहास कुछ महत्वपूर्ण नहीं रहा, पर यह लोगोंकी भारी भूल है। यथार्थमें भारतके प्राचीन इतिहासमें इस प्रान्तका बहुत ऊंचा स्थान है। प्राचीन ग्रंथों और शिलालेखोंसे सिद्ध होता है कि यह प्रान्त कोशल देशका दक्षिणी भाग था। इसीसे यह दक्षिणकोशल कहा गया है। इसके ऊपर उत्तरकोशल था। दक्षिणकोशलका विस्तार उत्तरकोशलसे अधिक होनेके कारण उसे महाकोशल भी कहते थे। कलचुरि नरेशोंके शिलालेखोंमें इसका यही नाम पाया जाता है। इस प्रान्तका पौराणिक नाम दण्डकारण्य है जो विन्ध्य और सतपुड़ाके रमणीक वनस्थलोंसे व्याप्त है। रामायण–कथा–पुरुष रामचन्द्रने अपने प्रवासके चौदह वर्ष व्यतीत करनेके लिये इसी भूभागको चुना था। उस समय यहां अनेक ऋषि मुनियोंके आश्रम थे• और वानरवंशी राजाओंका राज्य था। वाल्मीकि

रामायणमें इन राजाओंको पुछल्लेबन्दर ही कहा है, पर जैन पुराणानुसार ये राजा बन्दर नहीं थे, किन्तु उनकी ध्वजाओंपर बानरका चिन्ह होनेसे वे बानरवंशी कहलाते थे। उनकी सभ्यता बढ़ी चढ़ी थी और वे राजनीति, युद्धनीति आदिमें कुशल थे। वे जैन धर्मका पालन करते थे। इन्ही राजाओंकी सहायतासे रामचन्द्र रावणको परास्त करनेमें सफलीभूत होसके थे।

कुछ खोजों और अनुमानोंपरसे आजकल कुछ विद्वानोंका यह भी मत है कि रावणका राज्य इसी प्रान्तके अन्तर्गत था। इसका समर्थन इस प्रान्तसे सम्बन्ध रखनेवाली एक पौराणिक कथासे भी होता है। महाभारत और विष्णुपुराणमें यहांके एक बड़े योगी नरेशका उल्लेख है। इनका नाम था कार्तवीर्य व सहस्रार्जुन। इन्होंने अनेक जप, तप और यज्ञ करके अनेक ऋद्धियां सिद्धियां प्राप्त की थीं। इनकी राजधानी नर्मदा नदीके तटपर माहिष्मती (मंडला) थी। एकवार यह राजा अपनी स्त्रियोंके साथ नदीमें जलक्रीड़ा कर रहा था। कल्लोलमें उसने अपनी भुजाओंसे नर्मदा नदीका प्रवाह रोक दिया जिससे नदीकी धारा ठिलकर अन्यत्रसे बह निकली। प्रवाहसे नीचेकी ओर एक स्थानपर रावण शिवपूजन कर रहा था। नदीकी धारा उच्छृंखल होकर बह निकलनेसे रावणकी सब पूजापत्री बह ग । इसपर रावण बहुत क्रोधित हुआ और उसने कार्तवीर्यपर चढ़ाई करदी, पर कार्तवीर्यने उसे परास्तकर कैद कर लिया और बहुत समयतक अपने बंदीगृहमें रक्खा। इसका उल्लेख कालिदास कविने अपने रघुवंश काव्यमें इस प्रकार किया है:—

ज्यावंघनिष्पन्दभुजेन यस्य विनिश्वसद्वक्त्रपरम्परेण ।
कारागृहे निर्जितवासवेन लंकेश्वरेणोषितमाप्रसादात् ॥

अर्थात् जिस लंकेश्वरने इन्द्रको भी पराजित किया था वही कार्तवीर्यके कारागारमें मौर्वीसे भुजाओंमें बंधा हुआ और अपने अनेक मुखोंसे बड़ी२ सांसें लेता हुआ कार्तवीर्यकी प्रसन्नता होनेके समयतक रहा ।

ऐतिहासिक कालमें इस प्रांतका सबसे प्राचीन संबन्ध मौर्य साम्राज्यसे था । जबलपूरके पास रूपनाथमें जो अशोक सम्राट्का लेख पाया गया है उससे सिद्ध होता है कि आजसे लगभग अढाई हजार वर्ष पूर्व यह प्रांत मौर्यसाम्राज्यके अंतर्गत था। चंद्रगुप्त मौर्य और भद्रबाहुस्वामी उज्जैनसे निकलकर इसी प्रांतमेंसे होते हुए दक्षिणको गये होंगे । उस समय यहां जैनधर्मका खूब प्रचार हुआ होगा । विक्रमकी चौथी शताब्दिसे लगाकर आगेके अनेक राजवंशोंके यहां शिलालेख, ताम्रपत्र आदि मिले हैं । डॉ॰ विन्सेन्ट स्मिथका अनुमान है कि समुद्रगुप्त अपनी दिग्विजयके समय सागर, जबलपूर और छत्तीसगढ़मेंसे होकर दक्षिणकी ओर बढ़े थे । उस समय चांदा जिलेमें बौद्ध राजाओंका राज्य था । पांचवी छटवीं शताब्दिके दो राजवंश उल्लेखनीय हैं क्योंकि ये दोनों ही राजवंश भारतके इतिहासमें अपने ढंगके विलक्षण ही थे । इनमेंसे एक परिव्राजक महाराजा कहलाते थे । जिनका राज्य जबलपूरके आसपास था । दूसरे राजर्षि राज्यकुल नरेश थे जिनका राज्य छत्तीसगढ़में था । इसी समय जबलपूरके पास उच्छकल्पके महाराजा भी राज्य करते थे । इसकी राजधानी आधुनिक उच्छ-

हुआ थी। मध्यप्रांतका सबसे बड़ा राजवंश कलचूरि वंश था जिसका प्राबल्य आठवीं नौवीं शताब्दिमें बहुत बढ़ा। शिलालेखोंमें इस वंशकी उत्पत्ति उपर्युक्त सहस्रार्जुन व कार्तवीर्यसे बतलाई गई है। एक समय कलचूरि साम्राज्य बंगालसे गुजरात और बनारससे कर्नाटक तक फैल गया था, पर यह साम्राज्य बहुत समयतक स्थायी नहीं रह सका। क्रमशः इस वंशकी दो शाखायें होगईं। एक शाखाकी राजधानी जबलपूरके पास त्रिपुरी थी जिसे चेदि भी कहते हैं और दूसरीकी बिलासपुर जिलेके रतनपुरमें। यद्यपि कलचूरि नरेशोंका राज्य बहुत समय तक बना रहा, पर तीन चार शताब्दियोंके पश्चात् उसका जोर बहुत घट गया।

कलचूरी नरेश प्रारम्भमें जैनधर्मके पोषक थे। पाँचवीं छटवीं शताब्दिके अनेक पाण्ड्य और पल्लव शिलालेखोंमें उल्लेख है कि 'कलभ्र' लोगोंने तामिल देशपर चढ़ाई की और चोल, चेर, और पांड्य राजाओंको परास्तकर अपना राज्य जमाया। प्रोफेसर रामस्वामी अय्यन्गारने वेल्विकुडिके ताम्रपत्र तथा तामिल भाषाके 'पेरियपुराणम्' परसे सिद्ध किया है कि ये कलभ्रवंशी प्रतापी राजा जैनधर्मके पक्के अनुयायी थे (Studies in South Indian Jainizm P. 53-56) इनके तामिल देशमें पहुंचनेसे जैनधर्मकी वहां बड़ी उन्नति हुई। इनके एक राजाका नाम या उपनाम 'कल्वरकल्वम्' था। इन नरेशोंके वंशज अब भी विद्यमान हैं और वे कलार कहलाते हैं। श्रीयुक्त अय्यन्गारजीका अनुमान है कि ये 'कलभ्र' आर्य नहीं द्राविण जातिके होंगे, पर अधिक सम्भव यह प्रतीत होता है कि ये

'कलभ्र' कल्चुरिवंशकी ही शाखा होंगे। कल्चुरि संवत् सन् २४८ ईस्वीसे प्रारम्भ होता है। अतएव पांचवीं शताब्दिमें इनका दक्षिण पर चढाई करना असम्भव नहीं है। अय्यन्गारजीका अनुमान है कि सम्भवतः दक्षिणके जैनियोंने ही शैवराजाओंसे त्रासित होकर कलभ्रराजाको दक्षिणपर चढाई करनेके लिये आमन्त्रित किया था। इस विषयपर अभी बहुत थोडा प्रकाश पड़ा है। इसकी खोज होनेकी अत्यन्त आवश्यक्ता है। ईस्वी पूर्व दूसरी शताब्दिका जो उदयगिरिसे कलिंगके जैन राजा खारवेलका लेख मिला है उसमें खारवेलके साथ 'चेतराजवसवधन' विशेषण पाया जाता है। इसकी संस्कृत छाया 'चैत्रराजवंशवर्धन' की जाती है। पर वह 'चेदिराजवंशवर्धन' भी हो सक्ता है जिससे खारवेलका कल्चुरिवंशीय होना सिद्ध होता है। अन्य कितने ही कल्चुरि नरेशोंने अपनेको 'त्रिकलिङ्गाधिपति' कहा है। आश्चर्य नहीं जो खारवेलका कल्चुरिवंशसे सम्बंध हो। प्रॉफेसर शेषगिरिरावका भी ऐसा ही अनुमान है।

(South Indian Jainizm P. 24)

मध्यप्रान्तके कल्चुरि नरेश जैनधर्मके पोषक थे इसका एक प्रमाण यह भी है कि उनका राष्ट्रकूट नरेशोंसे घनिष्ट सम्बन्ध था और राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मके बड़े उपासक थे। इन दोनों राजवंशोंमें अनेक विवाह सम्बन्ध भी हुए थे। उदाहरणार्थ कृष्णराज (द्वि०) ने कोकल्लदेव (चेदिनरेश) की राजकुमारीसे विवाह किया था। कोकल्लके पुत्र शंकरगणकी दो राजकुमारियोंको कृष्णराजके पुत्र जगत्तुंगने विवाहा था। इसी प्रकार इन्द्रराज और अमोघवर्षने

पाये जाते हैं वे इन्हीं कलचुरियोंकी सन्तान हैं। अनेक भारी मंदिर जो आजतक विद्यमान हैं वे प्रायः इसी गिरती के समयमें निर्माण हुए हैं। जैनियोंके मुख्य तीर्थ इस प्रांतमें बेतूल जिलेमें मुक्तागिरि, निमाड़ जिलेमें सिद्धवरकूट और दमोह जिलेमें कुंडलपुर हैं। मुक्तागिरि, अपरनाम मेढागिरि और सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र हैं जहांसे प्राचीन कालमें करोडों मुनियोंने मोक्षपद प्राप्त किया है। मुक्तागिरिमें कुल अड़तालीस मंदिर हैं जिनमें मूर्तियोंपर विक्रमकी चौदहवीं शताब्दिसे लगाकर सत्तरहवीं शताब्दि तकके उल्लेख हैं। इन मंदिरोंमें पांच बहुत प्राचीन प्रतीत होते हैं और सम्भवतः बारहवीं तेरहवीं शताब्दिके हैं। सिद्धवरकूटके प्राचीन मंदिर ध्वंस अवस्थामें हैं। कुछ मूर्तियोंपर पन्द्रहवीं शताब्दिके तिथि–उल्लेख हैं। कुण्डलपुरके मंदिरोंकी संख्या ५२ है। मुख्य मदिरमें महावीरस्वामीकी वृहत् मूर्ति है और १७हवीं शताब्दिका शिलालेख है। मंदिरोंसे अलंकृत पर्वत कुंडलाकार है इसीसे इसका नाम कुण्डलपुर पड़ा है, पर कई भाइयोंको-इससे महावीरस्वामीकी जन्मनगरी कुन्दनपुरका भ्रम होता है। इन तीनों क्षेत्रोंका प्राकृतिक सौन्दर्य बड़ा ही चित्तग्राही और प्रभावोत्पादक है।

बरार।

इसका प्राचीन नाम 'विदर्भ' पाया जाता है। पं० तारानाथ तर्कवाचस्पतिने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की है:–विगताः दर्भाः कुशाः यतः ' अर्थात् जहां दर्भ न ऊगे, पर यह निरी व्याकरणकी खींचातानी ही प्रतीत होती है। यह भी दन्तकथा है कि यहां विदर्भ नामका एक राजा होगया है इसीसे इसका

नाम विदर्भ देश पड़ा, इसका समर्थन 'भागवतपुराण' से भी होता है। भागवतपुराणके पांचवे स्कन्धमें ऋषभदेव महाराजका वर्णन है। वहां कहा गया है कि ऋषभदेवने अपने कुल राज्यके नव हिस्सेकर उन्हें अपने नव पुत्रोंमें वितरण कर दिये। कुश नामके पुत्रको जो भाग मिला वह कुशावर्त कहलाया। ब्रह्मको जो देश मिला उसका नाम ब्रह्मावर्त पड़ा, इसी प्रकार विदर्भ नामक कुमारको जो प्रदेश मिला वह विदर्भ देश कहलाया। जैन पुराणोंमें ऐसा कथन नहीं है। आजकल इस देशको वहाड कहते हैं जो विदर्भका ही अपभ्रंश है, पर वहाडकी व्युत्पत्तिके विषयमें भी अनेक दन्तकथायें, अनुमान और तर्क लगाये जाते हैं। कोई कहता है वरयात्रा व 'वरहाट' व 'वरात' से वहाड बना है। इसका सम्बंध कृष्ण और रुक्मणीके विवाहकी वरातसे बतलाया जाता है। कोई वर्धाहार व वर्धातट—अर्थात् वर्धाके पासका—देशसे वहाडरूप सिद्ध करता है। कोई विराट व वैराट राजासे वहाडका सम्बन्ध स्थापित करता है इत्यादि, पर ये सब निरी कल्पनायें ही प्रतीत होती हैं।

विदर्भ देशका उल्लेख रामायण और महाभारतमें अनेक जगह पाया जाता है। अगस्त्य ऋषिकी पत्नी लोपामुद्रा, इक्ष्वाकुवंशके राजा सगरकी रानी केशिनी, अजकी रानी इन्दुमती, नलराजाकी रानी दमयन्ती, कृष्णकी रानी रुक्मिणी, प्रद्युम्नकी रानी शुभांगी, अनिरुद्धकी रानी रुक्मावती ये सब विदर्भ देशकी ही राजकुमारियां थीं। रुक्मिणी भीष्मक राजाकी कन्या व रुक्मीकी बहिन थीं। भीष्मककी राजधानी कौण्डिन्यपुर थी जिसका आधुनिक नाम

कुंडिनपुर है। यह अमरावतीसे लगभग बीस मील है। कहा जाता है कि आधुनिक अमरावती उस समयमें कौण्डिन्यपुरके ही अंतर्गत थी। अमरावतीमें जो अम्बकादेवीकी स्थापना है वह कौण्डिन्यपुरकी अधिष्ठात्रीदेवी कही जाती है। यहींपर रुक्मिणी अम्बिकादेवीकी पूजा करने आई थीं और यहींसे कृष्णने उसका अपहरण किया था। रुक्मिणीका भाई रुक्मी जब कृष्णसे पराजित हो गया और रुक्मिणीको वापिस नहीं लेसका तब वह बहुत लज्जित हुआ। लज्जाके मारे उसने कौण्डिन्यपुरको जाना ही उचित नहीं समझा। उसने एक दूसरे ही स्थानपर अपनी राजधानी बनाई। इसका नाम उसने भोजकट (भोजकटक) रक्खा। इस स्थानका नाम आजकल भातकुली है जो अमरावतीसे लगभग दस मील है। यहां जैनियोंका बड़ा प्राचीन मंदिर है और वार्षिक मेला लगता है।

विक्रमकी ८ वीं ९ वींतथा १० वीं शताब्दिमें विदर्भ क्रमशः चालुक्य और राष्ट्रकूट राजाओंके राज्यमें सम्मिलित था। ये दोनों ही राजवंश जैन धर्मके पोषक थे और इसलिये उक्त शताब्दियोंमें यहां जैन धर्मका खूब प्रचार रहा। कहा जाता है कि मुसलमानोंके आगमनसे प्रथम दशवीं शताब्दिके लगभग वह्राडान्तर्गत एलिचपूरमें 'ईल' नामका एक जैनधर्मी राजा राज्य करता था। उसने वि० सं० १०००में अपने नामसे ईलिचपुर (ईलेशपुर) शहर बसाया। एक बार ईल राजाने एक मुसलमान फकीरके साथ बुरा वर्ताव किया इसका समाचार गजनीके तत्कालीन राजा शाह रहमानके पास पहुंचा। उस समय शाह रहमानका विवाह हो रहा था। उनको फकीरके अपमानसे इतना बुरा लगा कि उन्होंने अपना

विवाह छोड़ ईलरानापर चढाई कर दी। इसीसे उनका नाम दुल्हारहमान पड़ा। दूल्हारहमान और ईलके बीच घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों ही राजा काम आये। मुसलमानोंके ग्यारह हजार योद्धा इस युद्धमें मारे गये, पर अन्तमें मुसलमानोंकी ही जीत हुई। युद्धमें मारे गये योद्धा सब एक ही स्थानपर दफन किये गये और उस स्थानपर एक इमारत बनवाई गई। यह इमारत अब भी विद्यमान है और 'गंजीशहीदा' नामसे प्रसिद्ध है। पास ही शाह दूल्हारहमानकी कबर भी बनी हुई है।

उक्त कथाका उल्लेख तवारीख-इ-अमज़दीमें पाया जाता है, पर अन्य कोई पुष्ट प्रमाण इस वृत्तान्तके अभीतक नहीं पाये गये। सम्भव है कि दशवीं-शताब्दिके लगभग यहां ईल नामका कोई जैनी राजा राज्य करता रहा हो, पर एलिचपुर उसका बसाया हुवा है यह बात कदापि नहीं मानी जासक्ती। अनेक ग्रंथों और शिला-लेखोंमें इस नगरका प्राचीन नाम अचलपुर (अच्चलपुर) पाया जाता है। इस नगरके पास ही जो मुक्तागिरि नामका सिद्धक्षेत्र है वहांकी कई मूर्तियोंपर यह नाम खुदा हुआ पाया जाता है। यही नाम ' निर्वाणकाण्ड ' ग्रंथमें भी आया है; यथा 'अच्चलपुर वरणयरे' इत्यादि। अचलपुरका ही अपभ्रंश अचलपुर (एलिचपुर)... है और यह नाम विक्रमकी १२ हवीं शताब्दिमें सुप्रचलित हो गया था। उस समयके एक बडे भारी वैयाकरण हेमचन्द्राचार्यने अपनी व्याकरण 'सिद्ध हैमचन्द्र' में इस नामकी व्युत्पत्ति करनेके लिये एक स्वतंत्र सूत्रकी ही रचना की है। वह सूत्र है 'अचल-पुरे चलोः'। ८, ११८, इसकी वृत्ति करते हुए कहा गया है

'अचलपुरशब्दे चकारलकारयोः व्यत्ययो भवति अचलपुरं' ॥ इससे स्पष्ट है कि उस समयके एक प्रसिद्ध विद्वान्, इतिहासज्ञ और वैयाकरण ईलराजासे ईलिचपुर नामकी उत्पत्तिको स्वीकार नहीं करते थे।

विदर्भ प्रान्तमें संस्कृतके अनेक बड़े२ कवि हो गये हैं। भारवि, दण्डी, भवभूति, गुणाढ्य, हेमाद्रि, भास्कराचार्य, त्रिविक्रमभट्ट, भास्करभट्ट, लक्ष्मीधर आदि संस्कृतके अमर कवियोंका विदर्भसे सम्बन्ध बतलाया जाता है। यहांके कवियोंने प्राचीनकालमें इतनी ख्याति प्राप्त की थी कि संस्कृत साहित्यमें एक रचनाशैली ही इस देशके नामसे प्रख्यात हुई। काव्यरचनामें 'वैदर्भी रीति' सर्वोच्च और सर्वप्रिय मानी गई है क्योंकि इस रीतिमें प्रसाद, माधुर्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारत्व आदि गुण विशेषरूपसे पाये जाते हैं। इस देशमें अनेक जैन कवि भी हो गये हैं। ये कवि विशेषतः कारंजाके बलात्कारगण और सेनगणके भट्टारकोंमेंसे हुए हैं। इन्होंने धार्मिक ग्रन्थोंकी रचना की है, पर ये ग्रन्थ अभीतक प्रकाशित नहीं हुए। वे वहांके शास्त्रभंडारोंमें ही रक्षित हैं। अपभ्रंश भाषाके प्रसिद्ध कवि धनपाल जिनकी 'भविष्यदत्त कथा' जर्मनी और बड़ौदासे प्रकाशित हो चुकी है, सम्भवतः इसी प्रांतमें हुए हैं। क्योंकि ये कवि धाकड़वंशी थे और यह जाति इसी प्रांतमें पाई जाती है। भविष्यदत्त कथाकी दो अति प्राचीन प्रतियां भी इस प्रान्तके ही अन्तर्गत कारंजाके शास्त्रभंडारोंमें पाई गई हैं। बुलडाला जिलेके मेहकर (मेघंकर) नामक ग्रामके बालाजीके मंदिरमें एक खंडित जैन मूर्ति संवत् १२७२ की है जिसे

आशाधरकी स्त्री पद्मावतीने प्रतिष्ठित कराई थी (पृ० ९०)। संवत्के उल्लेखसे अनुमान होता है कि सम्भवत ये आशाधर उन प्रसिद्ध जैनाचार्य 'कलिकालिदास' आशाधरजीसे अभिन्न हैं, जिनके रचाये हुए ग्रन्थोंका जैन समाजमें भारी आदर है। ये आशाधर बघेरवाल जातिके थे और राजपूतानामें शाकम्भरी (साम्हर) के निवासी थे। मुसलमानोंके त्राससे वे वि० स० १२४९में धारा नगरीमें और वि० स० १२६९में नालछे (नलकच्छपुर) में आ गये थे। उनके वि० स० १३०० तकके बने हुए ग्रन्थोंमें नल कच्छपुरका उल्लेख मिलता है पर मेहकरकी मूर्तिके लेखपरसे अनु मन होता है कि वि० स० १२७९के लगभग आशाधरजी विदर्भ प्रान्तमें ही रहे होंगे। वे बघेरवाल जातिके थे और इस जातिकी बरारमें ही विशेष सख्या पाई जाती है। उनकी स्त्रीका नाम अन्यत्र सरस्वती पाया जाता है, पर सरस्वती और पद्मावती पर्यायवाची शब्द हैं अत उनका तात्पर्य एक ही व्यक्तिसे हो सक्ता है। यह भी अनुमान होता है कि सम्भवत आशाधरजी जब बरारमें थे तभी उन्होंने अपने 'मूलाराधनादर्पण' नामक टीका ग्रन्थकी रचना की थी। इस ग्रन्थका उल्लेख उनके वि० स० १२८९से लगाकर १३०० तकके बने हुए ग्रन्थोंकी प्रशस्तियोंमें पाया जाता है और वि० स० १२७९के पूर्वके ग्रंथोंमें नहीं पाया जाता। इस ग्रथकी प्रति भी अबतक केवल बरार प्रान्तान्तर्गत कारंजामें ही पाई गई है, अन्यत्र नहीं। इन सब प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि *आशाधरजीने वि० स० १२७९के लगभग कुछ काल बरार* प्रान्तमें निवास किया और ग्रन्थ रचना भी की।

बरार प्रान्तमें जैनियोंका मुख्य स्थान अकोला जिलेमें कारंजा है। यहां लगभग चार पांचसौ वर्षसे दिगंबर संप्रदायके भिन्न२ तीन गणोंके पट्टोंकी स्थापना है। बलात्कारगण, सेनगण और काष्टासंघ, इन तीनों ही गणोंके मंदिरोंमें एक२ शास्त्रभंडार है। बलात्कारगण और सेनगणके मंदिरोंके शास्त्रभंडार बड़े ही विशाल और महत्व-पूर्ण हैं। इनमें अनेक अप्रकाशित और अश्रुतपूर्व संस्कृत, प्राकृत व हिन्दीके ग्रन्थ हैं। इनका उद्धार होनेकी बड़ी आवश्यक्ता है*। अकोला जिलेमें दूसरा जैनियोंका पवित्र स्थान सिरपुर है जहां अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर है।

मध्यभारत।

मध्यभारतके अन्तर्गत अनेक अत्यन्त प्राचीन और इतिहास प्रसिद्ध स्थान हैं। अवंती देशकी गणना भारतके प्राचीनसे प्राचीन राज्योंमें की गई है। जिस दिन अन्तिम तीर्थंकर महावीरस्वामी-का मोक्ष हुआ था उसी दिन अवन्ती देशमें पालक राजाका अभिषेक हुआ था। जैन ग्रंथोंके अनुसार मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त भी अधिकांश अवन्ती (उज्जैनी) नगरीमें ही निवास करते थे। श्रुतकेवली भद्र-बाहुने उज्जैनीमें ही प्रथम द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षके चिन्ह देखे और चंद्रगुप्तको तत्सम्बंधी भविष्यवाणी सुनाई। चंद्रगुप्त सम्राट्ने यहां ही उनसे जिनदीक्षा लेली और यहांसे ही मूल जैन संघकी वह

* कारंजा और वहाके गणों व शास्त्र भंडारोंका विशेष परिचय प्राप्त करनेके लिये देखें:- १) दिगम्बर जैन खास अंक वर्ष १८ वीर सं० २४५१ 'कारंजा' वहाके गण और शास्त्रभंडार' (२) सी० पी० गवर्नमेंन्ट द्वारा प्रकाशित-Catalogue of Sanskrit-Prakrit Mss. in C. P. & Berar.

दक्षिण यात्रा प्रारम्भ हुई जिसका केवल जैनधर्मके ही नहीं भारत-वर्षके इतिहासपर भी भारी प्रभाव पड़ा। विक्रमादित्य नरेशके सबन्धमें आधुनिक विद्वानोंका मत है कि विक्रम संवत्के प्रारम्भ कालके समय किसी उक्त नामके राजाका ऐतिहासिक अस्तित्व सिद्ध नहीं होता, पर जैन ग्रन्थोंमें महावीरस्वामीके ४७० वर्ष पश्चात् उज्जैनीके राजा विक्रमादित्यका उल्लेख मिलता है व उनके जीवनकी बहुतसी घटनायें भी पाई जाती हैं। 'कालिकाचार्य कथानक' के अनुसार विक्रमादित्यने महावीरस्वामीसे ४७० वर्ष पश्चात् विदेशियों (शकों)से युद्धकर उन्हें परास्त किया और अपना सम्वत् चलाया। इसके १३९ वर्ष पश्चात् शकोंने विक्रमादित्यको हराया और दूसरा संवत् स्थापित किया। स्पष्टतः उक्त दोनों संवतोंका अभिप्राय क्रमशः विक्रम और शक संवत्से है, पर इन संवतोंके बीच १३९ वर्षका अन्तर होनेसे शकोंके विजेता विक्रम और उनसे पराजित होनेवाले विक्रम एक नहीं माने जासके। जो हो पर अनेक जैन ग्रन्थ यह प्रमाणित करते हैं कि उस समय एक बड़ा प्रतापी विक्रमादित्य नामका नरेश हुआ है जो जैनधर्मावलम्बी था। इसका समर्थन इस बातसे भी होता है कि 'वैताल पंचविंशतिका' 'सिंहासन द्वात्रिंशिका' आदि विक्रमादित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले कथानक जैनियोंने ही विशेष रूपसे अपने ग्रन्थ भंडारोंमें सुरक्षित रक्खे हैं।

गुप्तवंशी राजाओंके समयमें यद्यपि जैनधर्मको विशेष उत्तेजन नहीं मिला, तथापि राज्यमें शांति होनेसे उसका प्रचार होता रहा। इसी समयमें ' हूण ' जातिके विदेशी लुटेरोंके आक्रमणसे देशकी भारी क्षति हुई और मध्यभारतमें जैनधर्मको विशेष हानि हुई।

जैन ग्रंथोंमें इस समयके 'कल्कि' नामक राजाके निर्ग्रन्थ मुनियोंपर भारी अत्याचारोंका उल्लेख है। उत्तरपुराणमें कहा गया है कि उसने परिग्रहरहित मुनियोंपर भी कर लगाया था। कुछ विद्वान् इस कल्किराजको हूणवंशी, महा दुराचारी मिहिरकुल ही अनुमान करते हैं। कल्किका अधर्मराज्य बहुत समयतक नही चला—४२ वर्षके अधर्म राज्यसे भूतलको कलंकितकर कल्कि कुगतिको प्राप्त हुआ और उसके उत्तराधिकारियोंने पुनः धर्मराज्य स्थापित किया।

नौवीं दशवीं शताब्दिसे मध्यभारतमें जैनधर्मकी विशेष उन्नति हुई और कीर्ति फैली। 'धारा'के नरेशोंने जैन धर्मको खूब अपनाया, 'महासेनसूरि' ने मुञ्जनरेशसे विशेष सन्मान प्राप्त किया और उनके उत्तराधिकारी सिन्धुराजके एक महासामन्तके अनुरोधसे उन्होंने 'प्रद्युम्नचरित' काव्यकी रचना की। ग्वालियर रियासतके शिवपुर परगनान्तर्गत दूबकुंडसे जो सं० ११४५का शिलालेख मिला है उसमें तत्कालिक राजवंश परिचयके अतिरिक्त 'लाटवागट' गणके आचार्योंकी परम्परा दी है। इस परम्पराके. आदिगुरु देवसेन कहेगये हैं (पृ० ७३–७७)। ये देवसेन संभवतः वे ही हैं जिन्होंने संवत् ९९०में दर्शनसार नामक एक जैन ऐतिहासिक ग्रंथकी रचना की थी। इनके बनाये हुए संस्कृत, प्राकृत और भी अनेक ग्रन्थ पाये जाते हैं। भोजदेवके समयमें अनेक प्रसिद्ध२ जैनाचार्य हुए हैं। ब्रह्मदेव टीकाकारके अनुसार द्रव्यसंग्रह ग्रंथके रचयिता नेमिचन्द्राचार्य भोजदेवके दरबारमें थे। नयनंदि आचार्यने अपना अपभ्रंश भाषाका एक काव्य 'सुदर्शनचरित्र' भी इन्हींके राज्यमें सं० ११००में समाप्त किया था जैसा उसकी प्रशस्तिमें है:—

'तिहुवणनारायणसिरिनिकेउ, तहिं णरवरु पुंगमु भोयदेउ ।
णिव विक्कमकालहो ववगएसु, एयारह संवच्छरसएसु ॥
त हि केवलिचरिउ अमच्छरेण, णयणंदिय विरइउ वच्छरेण ।

तेरहवीं शताब्दीमें आशाधरजी राजपूतानेसे मुसलमानोंके भयसे धारामें आगये थे। धारा और नालछेमें रहकर ही उन्होंने अपने अधिकांश ग्रंथोंकी रचना की। यह समय जैनधर्मकी खूब समृद्धिका था। मेलसाके समीपका 'वीसनगर' जैनियोंका बहुत प्राचीन स्थान है। वह शीतलनाथ तीर्थंकरकी जन्मभूमि होनेसे अतिशयक्षेत्र है। जैन ग्रंथोंमें इसका नाम मद्दलपुर पाया जाता है। भट्टारकोंकी गद्दी यहींसे प्रारम्भ होकर मान्यखेट गई थी। इसी समय मध्यभारतमें विशेषतः बुन्देलखण्डमें अनेक जैन मंदिर निर्मापित हुए जिनके अब अधिकतः खण्डहर मात्र शेष रह गये हैं। खजराहाके प्रसिद्ध जैन मंदिर इसी समयके हैं। आगामी तीन चार शताब्दियोंमें मंदिरनिर्माणका कार्य खूब प्रचुरतासे जारी रहा, बडे२ सुन्दर कारीगरीके मंदिर बनगये और अनेक मूर्तियोंकी प्रतिष्ठायें हुईं। सोनागिरि (दतिया) चड़वानी, नयनागिरि (पन्ना), द्रोणगिरि (बीजावर) आदि अतिशय क्षेत्र इसी समय अनेक मंदिरोंसे अलंकृत हुए। सत्तरहवीं शताब्दिसे यहां जैनधर्मका ह्रास होना प्रारम्भ हुआ। जहां किसी समय हजारों लाखों जैनी थे वहां अब कोसों तक अपनेको जैनी कहनेवाला ढून्ढनेसे नहीं मिलता। वहां अब जैनधर्मका पता उन्हीं मंदिरोंके खण्डहरों और टूटीफूटी हजारों जिनमूर्तियोंसे चलता है।

राजपूताना।

जैनधर्म आदिसे क्षत्रियोंका धर्म रहा है, और इसलिये इसमें

कोई आश्चर्य नहीं जो क्षत्रिय–भूमि राजपूतानेमें इस धर्मका विशेष प्रचार अत्यन्त प्राचीन कालसे पाया जाय। जैनधर्म क्षत्रियोंके लिये अत्यन्त उपयोगी था यह इसी बातसे सिद्ध है कि ऐतिहासिक कालमें ही अन्य धर्मावलंबियोंको जैनी बनानेका कार्य जितना राजपुतानेमें सफल हुआ उतना अन्यत्र कदाचित् ही हुआ होगा। जैनियोंकी प्रसिद्ध२ जातियोंका जैसे ओसवाल, खण्डेलवाल, बघेरवाल, पल्लीवाल आदिका उद्गम स्थान राजपूताना ही है। इन जातियोंको कब कौन आचार्यने जैनी बनाया इसका बहुतसा वृत्तांत जैन ग्रन्थोंमें पाया जाता है। विक्रम सम्वत्की प्रथम ही कुछ शताब्दियोंमें राजपुतानेमें जैनधर्मका खासा प्रचार हो गया था। इसके आगेकी शताब्दियोंमें यहांके जैनियोंने अपने अहिंसामयी धर्मके साथ२ अपने क्षत्रिय कर्तव्यका पूर्णरूपसे निर्वाह किया। चित्तौड़का प्रसिद्ध प्राचीन कीर्तिस्तम्भ जैनियोंका ही निर्माण कराया हुआ है। उदयपुर रज्यके केशरियानाथजी आदि जैनियोंके ही प्राचीन पवित्र स्थान हैं जिनकी पूजा वंदना आजतक अजैन भी बड़ी भक्तिसे करते हैं। सिरोही राज्यके अंतर्गत 'आबू' के पास देलवाडे (देवलवाडे) के विमलशाह और तेजपालके बनवाये हुए जैन मंदिर कारीगरीमें अपनी शानी नहीं रखते। विमलशाहके आदिनाथ मंदिरके विषयमें कर्नल टॉडसाहबने लिखा है कि 'यह मंदिर भारतके संपूर्ण देवालयोंमें सबसे सुन्दर हैं और आगरेके ताजमहलको छोड़कर और कोई भी इमारत ऐसी नहीं है जो इनकी समता कर सके'। इस अनुपम मंदिरका कुछ हिस्सा मुसलमानोंने तोड़ डाला था जिससे वि० सं० १३७८में लल्ल और वीजड़

नामक दो साहूकारोंने इसका जीर्णोद्धार करवाया और ऋषभदेवकी मूर्ति स्थापित की। इस बातका उल्लेख जिनप्रभसूरिने अपने तीर्थ-कल्प नामक ग्रन्थमें किया है।

आदिनाथ मंदिरके पास ही वस्तुपालके छोटे भाई तेजपाल द्वारा अपने पुत्र और स्त्रीके कल्याणार्थ बनवाया हुआ नेमिनाथका मंदिर है। यही एक मंदिर है जो कारीगरीमें उपर्युक्त आदिनाथ मंदिरकी समता कर सकता है। इसके विषयमें भारतीय भवनक-लाके प्रसिद्ध ज्ञाता फर्ग्यूसन साहबने कहा है कि 'संगमर्मरके बने हुए इस मदिरमें अत्यन्त परिश्रम सहन करनेवाली हिन्दुओंकी टांकीसे फीते जैसी बारीकीके साथ ऐसी मनोहर आकृतिया बनाई गई हैं कि उनकी नकल कागजपर बनानेको कितने ही समय तथा परिश्रमसे भी मैं समर्थ नहीं हो सका'। इसी मंदिरकी गुम्मटकी कारीगरीके विषयमें कर्नल टॉड साहब कहते हैं कि "इसका चित्र तैयार करनेमें लेखनी थक जाती है और अत्यन्त परिश्रम करने-वाले चित्रकारकी कलमको भी महान् श्रम पड़ता है"। मदिरमें छोटे बडे ५२ जिनालय हैं और कई लेख है जिनमें वस्तुपाल तेजपालके वशका तथा बघेल राणाओंके वशका ऐतिहासिक वर्णन पाया जाता है। मूल गर्भगृहके द्वारकी दोनों ओर बडी कारीग-रीसे बने हुए दो ताक हैं जिन्हें तेजपालने अपनी दूसरी स्त्री सुह-डादेवीके कल्याणके निमित्त बनवाया था। तेजपाल पोरवाड जातिके थे और लेखसे सुहड़ादेवी मोढ़ जातीय महाजन जल्हणके पुत्र ठाकुर आसाकी पुत्री सिद्ध होती है। इससे सिद्ध है कि उस समय मोढ़ व पोरवाडोंमें परस्पर विवाहसम्बंध था। (पृ० १७६–१७७)

*

जैन समाजमें अन्यत्र तो क्षत्रियत्व बहुत समयसे लुप्त हो गया पर राजपूतानेमें वह अभी२ तक बना रहा है। राजत्व, मंत्रीत्व और सेनापतित्वका कार्य जैनियोंने जिस चतुराई और कौशलसे चलाया है उससे उन्होंने राजपूतानेके इतिहासमें अमर नाम प्राप्त कर लिया है। आदिनाथ मंदिरके निर्मापक विमलशाहने भीमदेव नरेशके सेनापतिका कार्य बहुत अच्छी तरहसे किया था। सोलहवी शताब्दिमें अकबरके भीषण षड्यंत्र जालमें फंसे हुए राणा प्रतापसिंहका उद्धार जिन भामाशाहकी अतुल द्रव्य और चतुराईसे हुआ था वे ओसवाल जातिके जैनी ही थे। अपने अनुपम स्वदेश प्रेम और स्वार्थ त्यागके लिये यदि भामाशाह मेवाड़के जीवनदाता कहे जांय तो अत्युक्ति नहीं होगी। सन् १७८७के लगभग मारवाडके महाराना विजयसिंहके सेनापति और अजमेरके सूबेदार डूमराजने मरहटोंके प्रति घोर युद्धकर अपनी वीरता और स्वामिभक्तिका अच्छा परिचय दिया था। ये डूमराज भी ओसवाल जैन जातिके सिंघी कुलके नररत्न थे। इसी प्रकार गत शताब्दिके प्रारम्भिक भागमें बीकानेर राज्यके दीवान और सेनापति अमरचंद्रजीने भटनेरके खान जब्ताखांको भारी शिकस्त दी थी तथा अनेक युद्धोंमें अपनी वीरताका अच्छा परिचय दिया था। सन् १८१७ ईस्वीमें पिंडारियोंका पक्ष करनेका झूठा दोष लगाकर उनके शत्रुओंने उनके असाधारण जीवनकी असमय ही इतिश्री करा डाली। ये भी ओसवाल जैन जातिके वीर थे। और भी न जाने कितने जैन वीरोंके वीरतापूर्ण जीवनचरित्र आज इतिहासकी अंधेरी कोठरीमें पड़े हुए हैं। इन्हीं शताब्दियोंमें राजपूतानेने ही ढूंढारी हिन्दीके कुछ ऐसे भारी जैन

धार्मिक विद्वानोंको पैदा किया जिन्होंने संस्कृत प्राकृत ग्रन्थोंपर हिन्दीमें टीका और भाष्य लिखकर जनताका भारी उपकार किया है। इनमें जयचंद्र, किसनसिंह, जोधराज, टोडरमल, दौलतराम, सदासुखजी छाबड़ा आदिके नाम मख्यात हैं जिनका अधिक परिचय देनेकी आवश्यक्ता नहीं। राजपूतानेमें अनेक जगह जैसे—जैसलमेर, जयपुर आदिमें प्राचीन शास्त्रभंडार हैं जिनका अभीतक पूरा२ शोध नहीं हुआ है। वह दिन जैन संसारके लिये बड़े सौभाग्यका होगा जब प्राचीन मंदिरों, खण्डहरों, मूर्तियों, शिलालेखों और ग्रन्थोंके आधारपर जैन धर्मके उत्थान और पतनका जीता जागता इतिहास तैयार होकर विद्वत्समाजके सन्मुख रक्खा जासकेगा। ब्रह्मचारीजीकी संकलित की हुई इन प्राचीन स्मारकोंकी पुस्तकोंको पढ़कर पाठकोंके हृदयमें यह भाव उठे विना नहीं रहेगा कि:—

"अबतक पुराने खंडहरोंमें, मंदिरोंमें भी कहीं,
बहु मूर्तियां अपनी कलाका पूर्ण परिचय दे रहीं।
प्रकटा रही हैं भग्न भी सौन्दर्यकी परिपुष्टता,
दिखला रही हैं साथ ही दुष्कर्मियोंकी दुष्टता ॥ १ ॥
यद्यपि अतुल, अगणित हमारे ग्रन्थ–रत्न नये नये,
बहु बार अत्याचारियोंसे नष्टभ्रष्ट किये गये।
पर हाय ! आज रहींसहीं भी पोथियां यों कह रहीं,
क्या तुम वही हो, आज तो पहचानतक पड़ते नहीं ॥ २ ॥

गांगई। } हीरालाल जैन।
३०-६-२६

सूचीपत्र।

शुद्धाशुद्धि ।

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
९३	११	१९८२	११८२
१४६	२०	करेड	करेडा
१४८	१७	नादाल	नाडोल
१९०	४	कालिंजर	कलिंजरा
१९१	३	मादोर	माडोर
,,	११	नादोल	नाडौल
,,	१९	मगलोद	मागलोद
१९६	४	रानापुर	राणपुर
,,	२२	सादरी	सादडी
१९७	९	पीपर	पाड
,,	१३	दीदवाना	डीडवाना
१९८	१३	ओसियान	ओसिया
१९९	३	वारमेर	बाड़मेर
,,	११	मेरत	मेडता
१६१	४	सचोर	साचोर
,,	११	नाना	नाणा
१६३	२	छवल	घवल
,,	१०	सेवाटी	सेवाडी
,,	१८	धनेरवा	धाणेराव
,,	२२	संदेखा	साडेराय

१९४	७	कोरता	कोरटा
१६९	१८	वारल्ह	वड़ल्ह
१६६	३	जासोल	जसोल
१६८	१४	लोडवरा	लोद्रुवा
१६९	१७	मुगथल	मुंगथला
१७०	३	पतनारायण	पाटनारायग
१७१	३	बलदा	बालदा
,,	८	कलार	कोलर
,,	११	पालदी	पालडी
,,	१९	यागिन	बागिण
,,	१९	उथमन	ऊथमन
१७२	३	जावल	जावाल
,,	९	कातन्द्री	कालन्द्री
,,	८	उदरत	उदरट
,,	१३	बरमन	वरमाणा
१७३	१२	कामद्रा	कायद्रा
१७४	१	दत्ताणी	दन्ताणी
,,	३	हणाद्री	हणाद्रा
,,	६	सणापुर	सणपुर
,,	१३	सीवरा	सीवेरा
१७६	२३	अससराज	आसराज
१८०	१९	नेरेना	नराणा
१८९	१६	मुरंद्वारा	मुकंदरा

मध्यप्रान्त, मध्यभारत और राजपूतानाके—

प्राचीन जैन स्मारक।

प्रथम भाग—मध्य प्रान्त।

Imperial Gazetter of India C. P. (1908).

भारतके बादशाही गजटियर मध्य प्रांत (१९०८) से जो समाचार विदित हुआ है उसको मुख्यतया ध्यानमें लेकर मध्य प्रांतका वर्णन प्रारम्भ किया जाता है। बीच २ में और पुस्तकोंका वर्णन भी आयगा। बहुतसा मसाला हरएक जिलेके गजटियर, मध्य प्रान्तका इतिहास और कौनन साहबकी रिपोर्टसे लिया गया है जबलपुर जिलेमें रूपनाथपर महाराजा अशोकका शिला स्तंभ है जिससे प्रमाणित है कि महाअशोकका* राज्य मध्यप्रांतके इस भागमें था। सागर जिलेके एरन स्थानपर चौथी या पांचमी शताब्दीके लेखोंसे प्रगट है कि यहां मगधके गुप्तवंशके पीछे श्वेत हून तूरानियोंने राज्य किया। शिवनी और अजन्टाकी गुफाके लेखोंसे जाना जाता है कि वाकातक वंशने शतपुरा और नागपुरके मैदानोंपर तीसरी

---

* यह जैन सम्राट चन्द्रगुप्त (जो श्री भद्रबाहु श्रुतकेवलीके शिष्य मुनि होगए थे) का पोता था यह अपने राज्यके २९ वर्षतक जैनी रहा फिर बौद्ध होगया था। यह अहिंसाका प्रचारक था।

१ वाकातक जो प्रवरपुरमें राज्य करते थे उन राजाओंके कुछ नाम "Discriptive list of inscriptions in C. P. & Berar by R. S. Hiralal B. A. 1916." नामकी

शताब्दीसे राज्य किया था। उनकी राजधानी चांदाके भांदकमें थी जो प्राचीन कालमें एक बड़ा नगर था।

वर्धा जिलेके भीतर नागपुरके कुछ भागपर सन् ई०से दो शताब्दी पहले विदर्भ या वरारके हिन्दुओंका राज्य था। यही राज्य तेलुगूके अंध्र लोगोंके हाथमें सन् ११३में पहुंचा फिर उस पर दक्षिणके राष्ट्रकूट[1] वंशवालोंने सन् ७५० से १८०७ तक राज्य किया।

उत्तरमें हैहय राजपूतोंकि कलचूरी या चेदी वंशजोंने नर्वदा नदीकी ऊपरी घाटीपर राज्य किया। इनकी राज्यधानी त्रिपुरा या करणवेल थी जहां अब जबलपुरमें तेवर ग्राम है। इस वंशवालोंने अपने लेखोंमें अपने खास सम्वत्‌का व्यवहार किया था। तीसरी शताब्दीमें इनकी शक्ति बहुत जमी हुई थी। जबसे नौमी शताब्दीतक इनका नाम नहीं सुन पड़ा। अंतमें इनका वर्णन सन् ११८१ के लेखमें आया है। *

पुस्तकमें हैं वे इस प्रकार हैं—(१) विन्ध्यशक्ति (२) प्रवरसेन प्रथम (३) रुद्रसेन प्रथम गौतम पुत्रका बेटा, यह गौतम प्रवरसेनका पुत्र था (४) पृथ्वीसेन प्रथम (५) रुद्रसेन द्वि० (६) प्रवरसेन द्वि० (७) नरेन्द्रसेन (८) देवसेन (९) पृथ्वीसेन द्वि० (१०) हरिषेन।

१ राष्ट्रकूट वंशके बहुतसे राजा जैनधर्मके माननेवाले थे जिनमें महाराज अमोघवर्ष बहुत प्रसिद्ध हुए हैं।

*भाग्डारकर बम्बई प्रांतके गजेटियर जिल्द २१ वीमें प्रगट होता है कि कलचूरी वंशवाले जैन थे। इनका यह पद प्रसिद्ध था। 'कालंजर पुरवराधीश्वर' अर्थात् सर्वोत्तम नगर कालंजरके स्वामी इनकी उत्पत्ति इस नगरसे विदित होती है। यह बुंदेलखण्डमें अब एक गढ़ (किला)

नौवींसे १३ वीं शताब्दीतक सागर और दमोह महोवाके चन्देल राजपूतोंके राज्यमें गर्भित थे। उसी समयके अनुमान असीरगढ़का वर्तमान किला चौहान राजपूतोंके हाथमें था। नर्बदा घाटीके पश्चिम शायद मालवाके परमार राज्यने ११वीं और १२वीं शताब्दीके मध्यमें राज्य किया होगा। सन् ११०४-५का एक लेख नागपुरमें है कि कमसेकम एक परमार राजा लक्ष्मणदेवने नागपुरको अपने राज्यमें मिला लिया था। छत्तीसगढ़में हैहयवंश या चेदीवंशने रतनपुरमें स्थान जमाया था और रायपुर तथा बिला-

---

है। कनिंघम साहबकी रिपोर्ट जिल्द ९ से मालूम होता है कि नौवीं, दशवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दीमें इस वंशकी एक बलवती शाखा बुंदेलखण्डमें राज्य करती थी जिसको चेदी भी कहते थे। इनका प्रारम्भ सन् २४९ से मालूम होता है। इनकी राज्यधानी त्रिपुरा थी जो जबलपुरसे पश्चिम ६ मील तेवर ग्राम है।

कलचूरी वंशके त्रिपुरा निवासियोंने कई दफे राष्ट्रकूटोंसे और पश्चिम चालुक्योंसे विवाह सम्बन्ध किये थे। इस कलचुरी वंशकी एक शाखा छठी शताब्दीमें कोंकण (बंबईप्रांत) में राज्य करती थी। यहांसे इनको पुलकेशी द्वि० (सन् ६१०-६३४) के चाचा चालुक्य वंशी मंगलीसने भगा दिया था।

कलचूरी लोग अपनेको हैहय वंशी कहते हैं और अपनी उत्पत्ति यदुवंशसे कार्त्तवीर्य या सहस्रबाहु अर्जुनसे बताते हैं।

नोट संपादकीय-मध्यप्रान्तमें जैन कलवार नामकी जाति प्रसिद्ध है। यही जाति कलचूरी वंशकी सन्तान है ऐसा मध्यप्रांत सेन्सस रिपोर्ट सन् १९११ पृष्ठ २२०में बताया गया है। ये जैन कलवार बहुत संख्यामें है। अब जैनधर्मको भूल गए हैं। आचार भी कुछ २ बिगड़ गया है।

कनिंघम साहबकी रिपोर्ट न० ९ में कलचूरी राजाओंकी वंशावली दी है वह इस प्रकार है—

सपुरके जिलोंपर राज्य फैलाया था। लेख १२वीं शताब्दी तक ले जाता है। यहांसे १५वीं व १६वीं शताब्दी तकका हाल प्रगट नहीं

चेदी संवत	सन् ई०	नाम राजा
०	२४९	चेदी या कलचूरी संवत प्रारम्भ
१	२५०	काकवर्ण शिशुपालकी संतानोंमें
		मध्यके राजाओंके नाम प्रगट नहीं
२७१	५२०	शंकर गण
३०१	५५०	बुद्धराज जिसको मंगलीश चालुक्यने हराया।
		कुछ नाम बीचके नहीं प्रगट
४३१	६८०	हैहय जिसको विनयादित्त चालुक्यने हराया
४८१	७३०	हैहय वंशकी राजकुमारी लोका महादेवी जो
		विक्रमादित्य द्वि० चालुक्यको विवाही गई
		बीचके राजा प्रगट नहीं
६२६	८७५	कोकल्ल प्रथम कन्नौजके भोजका समकालीन
६५१	९००	मुग्धतुंग प्रसिद्ध धवल प्रथम
६७२	९२१	युवराज केयूरवर्ष
७०१	९५०	लक्ष्मणराज या लक्ष्मणराय (जैसा बिल्हारी लेखमें है)
७२६	९७५	युवराज, वाक्पतिका समकालीन
७५१	१०००	कोकल्ल द्वि०
७७१	१०२०	गांगेयदेव विक्रमादित्य
७९१	१०४०	कर्णदेव
८३१	१०८०	यशःकर्ण देव
८६६	१११५	गयाकर्ण या गयकर्ण देव
९०२	११५१	नारसिंहदेव
९२०	११३५	जयसिंहदेव
९३२	११८१	विजयसिंहदेव

जबलपुर जिलेमें गजटियर सन् १९०९ में जो कलचुरी राजाओंके

है। जबतक गोंदलोगोंकी शक्ति बढ़ गई थी सबमें पहला गोंद राजा बेतूलके खेरलामें था। इसका नाम १३९८में प्रगट होता है जब

नाम दिये हैं वे भी यहां हैं। कुछ अन्तर है वह यह है कि मुग्धतुंगके पीछे बालाहर्ष है, फिर केयूरवर्ष युवराजदेव है। लक्ष्मणराजके पीछे शंकरगण (९८०) है फिर युवराजदेव द्वि० (९७५) है।

कनिंघम साहबने कुछ शिलालेख भी दिये हैं जिनमें चेदी या कलचूरी वंशके राजाओंके नाम आए हैं।

(१) जबलपुरसे उत्तर ३२ मील बहुरीबन्द ग्राममें एक १२ फुट ऊंची बड़ी नग्न जैन मूर्तिके लेखमें कलचूरी राजा गजकर्ण देव संवत १०xx आता है।

(२) इनके पुत्र नरसिंहदेवका लेख भेराघाट पर है।

(३) बिल्हारी के प्राचीन नगरके एक शिलालेखमें चेदी वंशके हैहय राजाओंके नाम हैं। यह पाषाण नागपुरके म्यूजियममें है। वे नाम हैं- कोकल्ल मुग्धतुंग, केयूरवर्ष, लक्ष्मण, शंकरगण युवराज।

कोकल्लके पोतेका पोता गयकर्ण था जिसने धारके राजा उदयादित्यकी बड़ी कन्याको विवाहा था। यह भी कहा जाता है कि इस कोकल्लने दक्षिणके कृष्णराजको पराजित किया था। मैं इसे कृष्णराष्ट्रकूट समझता हूं जिसने अनुमान ८६०से ८८० ई० तक राज्य किया था। यह दंतिदुर्गा (शाका ६७५ या सन् ७५३) से पांचवीं पीढ़ीमें था तथा यह कृष्ण गोविन्द राष्ट्रकूट (शाका ८५५-सन ८३३) का परपोता (Great grand father) भी था। राष्ट्रकूटोंके एक शिलालेखमें लिखा है कि कृष्णराजने कोकल्ल प्रथमकी कन्या महादेवीको विवाहा था। दूसरे राष्ट्रकूट लेखमें (R. A. S. J. III 102) है कि कृष्णके पुत्र जगतरुद्रने चेदी राजा शंकरगणकी दो कन्याओंको विवाहा था। यह शंकरगण कोकल्ल प्रथमका पुत्र था। तीसरे राष्ट्रकूट लेख (B. A S. J IV P. 97) में है कि इन्द्रराजाने कोकल्ल प्रथमकी परपोती द्विजम्बाको विवाहा था। इस इन्द्रराजा और उसकी रानीका समय निश्चयपूर्वक उनके पुत्र गोविन्दराजके लेखसे शाका ८५५ या

खेरलाके राजा नरसिंहरायके पास (जैसा फारसी कवि फरिश्ताने कहा है) बहुत सम्पत्ति व शक्ति थी तथा गोंदवानाकी सर्व पहाड़ियां व

सन् ९३३ सिद्ध होता है । राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष स्वयं कोकल्ल प्रथमका परपोता अपनी माता गोविन्दम्बाकी तरफसे था तथा लक्ष्मणके ही वंशका था । मेरी सम्मतिमें कन्दकादेवीका पिता लक्ष्मण था ।

चौथे कारितलाईके लेखमें युवराजदेवके पुत्र लक्ष्मण राजाका नाम आया है जिसने अनुमान ९५०से ९७५ तक राज्य किया था ।

पांचवें बनारसमें राजघाटके किलेमें हैहय वंशी कर्णदेवका लेख संवत ७९३ का मिला है, जिसमें चेदी राजाओंकी नीचे लिखी वंशावल है —

कार्तवीर्यदेव
|
कोकल्ल जिसने चंदेलाकी नंदादेवीको विवाहा था ।
|
प्रसिद्ध धवल
|
बालहर्ष
|
युवराजदेव
|
लक्ष्मण
|
शंकरगण
|
युवराजदेव
|
कोकल्लदेव
|
गांगेयदेव
|
कर्णदेव

नोट—कोकल्ल प्रथमने ग्वालियरमें राजा भोजके साथ संवत ९३३ या सन् ई० ८७६में युद्ध किया था । यह राजा भोज कनौजका महाराजा था जिसने सन् ८६० से सन् ८८० तक राज्य किया था तथा कोकल्ल प्रथमका राज्य सन् ८५० से ८७० तक था।

दूसरे देश थे। इस राजाने उन युद्धोंमें भाग लिया था जो मालवा और खान्देशके राजाओंके और बहमनी बादशाहोंके साथ

स० नोट–चेदी व राष्ट्रकूट वंश दोनों जैन धर्मके भक्त थे इसीसे दोनोंमें सम्बन्ध भी होते थे। कलचुरी शब्दके अर्थ होते हैं–कल=देह, देहोंका चूरनेवाला मुनि नामी, हैहय शब्द शास्त्रमें अरहय। अहहय होगा जिसका भी भाव शत्रुओंको चूरनेवाला है। चेदीका अर्थ आत्माको चेतानेवाला, ये तीनों नाम इस वंशको जैन धर्मी सिद्ध करते हैं। "Descriptive list of inscriptions of C. P. & Berar by Hiralal B. A. 1916." नामकी पुस्तकसे विदित हुआ कि पहले जो कर्णवर्मसे विजयसिंहदेव तक राजाओंकी सूची दी है वह त्रिपुरके कलचुरी राजाओंकी है।

रतनपुरकी शाखाके कलचुरी राजाओंकी सूची नीचे प्रमाण है, इनको महाकौशलके हैहय वंशी भी कहते थे—

(१) कलिंगराज त्रिपुरीके कोक्कल द्वि० का पुत्र (२) कमल (३) रत्नराज या रत्नदेव (४) पृथ्वीदेव (५) जाजल्लदेव सन् ११२४ ई० (६) रत्नदेव द्वि० (७) पृथ्वीदेव द्वि० ११४५ (८) जाजल्लदेव द्वि० ११६८ (९) रत्नदेव तृ० ११८९ (१०) पृथ्वीदेव तृ० ११९० (११) भानुसिंह १२०० (१२) नारसिंहदेव १२२१ (१३) भूसिंहदेव १२५१ (१४) प्रतापसिंहदेव १२७५ (१५) जयसिंहदेव १३१९ (१६) धरमसिंहदेव १३४७ (१७) जगन्नाथसिंह १३६९ (१८) वीरसिंहदेव १४०७ (१९) कमलदेव १४२६ (२०) शंकरसहाय १४३६ (२१) मोहनसहाय १४५४ (२२) दादूसहाय १४७२ (२३) पुरुषोत्तमसहाय १४९७ (२४) बाहरसहाय या बाहरेन्द्र १५१९ (२५) कल्याणसहाय १५४६ (२६) लक्ष्मणसहाय १५८३ (२७) मुकुन्दसहाय १५९१ (२८) शंकरसहाय १६०६ (२९) त्रिभुवनसहाय १६१७ (३०) जगमोहनसहाय १६३२ (३१) आदितिसहाय १६४५ (३२) रंजीतम० १६६९ (३३) तख्तसिंह १६०५ (३४) राजसिंहदेव १६८९ (३५) सरदारसिंह १७२० (३६) रघुनाथसहाय १७३२।

हुए थे। मालवाके होशंगशाहने इसके देशपर आक्रमण किया तब नरसिंहराय हार गया और मारा गया। १६ वीं शताब्दीमें गढ़ मांडलाके गोंद वंशके ४७ वें राजा संग्रामशाहने अपना राज्य पर-गढ़ों या जिलोंमें जमा लिया था, जिनमें सागर, दमोह, भोपाल, नरबुदाघाटी, मांडला और शिवनी भी गर्भित थे। ऐसा निश्चय होता है कि मांडलाका यह वंश सन् ई० ६६० के अनुमान प्रारंभ हुआ था तब जादोराय राज्य करता था। यह प्राचीन गोंद राजाका सेवक था। इसने उसकी कन्या विवाही और राज्याधिकारी होगया। सन् १४८०के संग्रामशाहके होने तक यह वंश एक छोटा राजासा बना रहा। इसके २०० वर्ष पीछे गोंदराजा बख्त बुलन्द "जिसकी राज्यधानी छिंदवाड़ामें देवगढ़ पर था" दिहली गया था और उसने वहाका ऐश्वर्य देखकर अपने राज्यको उन्नत करना चाहा। इसने नागपुर नगर बसाया जो उसके पीछे राज्यधानी होगया। देवगढ़ राज्यका विस्तार बेतुल, छिंदवाड़ा, नागपुर, शिवनीका भाग, भंडारा और बालाघाट तक था। दक्षिणमें कोटसे घिरा नगर चांदा

रायपुर शाखाके चेदी राजा—

(१) लक्ष्मीदेव (२) सिंहाना (३) रामचन्द्र (४) ब्रह्मदेव सन् १४०२ ई० (५) केशवदेव १४२० (६) भुवनेश्वरदेव १४३८ (७) मान-सिंहदेव १४६३ (८) सन्तोषसिंहदेव १४७८ (९) सुरतिसिंहदेव १५०८ (१०) महतसिंहदेव १५१८ (११) चामुंडसिंहदेव १५२८ (१२) वंशी-सिंहदेव १५६३ (१३) धनसिंहदेव १५८२ (१४) जैनसिंहदेव १६०३ (१५) फत्तेसिंहदेव १६१५ (१६) यदवदेव १६३३ (१७) सोमदत्तदेव १६५० (१८) बल्देवसिंहदेव १६६३ (१९) उमेदसिंहदेव १६८५ (२०) बनवीरसिंहदेव १७१५ (२१) अमरसिंहदेव १७३८।

एक दूसरे वंशका स्थान था जो १६ वीं शताब्दीमें प्रसिद्ध था तब एक राजा बाबाजी बल्लालशाहने देहलीकी मुलाकात ली थी। इस चांदा राज्यमें बरारका भाग मिला हुआ था।

संग्रामशाहके उत्तराधिकारीके राज्यमें मुसलमान उत्तरसे आए। उसकी विधवा रानी दुर्गावतीको मुगल सेनापतिने सन् १५६४ में हराया और मार डाला।

स० नोट-इसके पीछे मुसल्मान राज्यके इतिहासकी जरूरत नहीं है। यहां तकका वर्णन इसलिये किया गया है कि जैन मंदिरोंमें जो प्रतिमाएं विराजमान हैं उनके लेखोंका संग्रह होनेसे इनमेंसे बहुतसे राजाओंके नाम मिल जानेकी संभावना है जिससे इतिहासपर बहुत प्रभाव पड़ेगा।

पुरातत्व-उत्तरके जिलोंमें बहुत स्थानोंमें प्राचीन और नवीन जैन मंदिर हैं जिनमें प्राचीन मंदिर अब लगभग नष्टप्रायः हो गए हैं। परन्तु उनके छितरे हुए खंड यह बताते हैं कि ये बहुत सुन्दर बने थे। वर्तमान जैन मंदिरोंका समूह कुंडलपुर (दमोह) में बहुत उपयोगी है जिनकी संख्या ५०से अधिक होगी।

(१) जबलपुर विभाग।

[१] सागर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें झांसी, पन्नाराज्य, बिजावर, चरखारी; पूर्वमें पन्ना और दमोह; दक्षिणमें नरसिंहपुर, भोपाल; पश्चिममें भोपाल और ग्वालियर। इस जिलेमें ३९६२ वर्गमील भूमि है।

इतिहास—सागर नगरसे उत्तर ७ मील गढ़ी पाहरी है जिसको गोंद राजाने बसाया था। गोंदोंके पीछे अहीरोंने (जिनको फौलादिया कहते हैं) रेहलीमें किला बनाया। अनुमान १०२३ सन्‌के चालीनके एक राजपूत निहालसाने अहीरोंको हटा दिया तथा सागर व दूसरे स्थान लेलिये। निहालसाके वंशवालोंने करीब ६०० वर्षों तक राज्य किया परन्तु महोबाके चंदेलोंने उनको परास्तकर अपनाकर दाता बना लिया था। चंदेल राजाओंके दो वीर आल्हा और ऊदल बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। इनकी प्रशंसामें जो गीत हैं उनमें इनकी प्रसिद्धि ९२ युद्धोंमें बताईगई है।

महोबाके एक किसी डांगी सर्दार उदनशाहने सन् १६६०में सागर बसाया। इसने नगरका परकोटा बनाया। उदनशाहके पोते पृथ्वीनीतको प्रसिद्ध बुन्देलाराजा छतरशाहने हटा दिया परंतु जैपुरके राजाने फिर स्थापित किया, तथापि कुरवईके मुसलमान सर्दारने फिर हटा दिया। तब वह बिलहरामें चला गया जहां उसके वंशजोंके पास बिल्हरा और दूसरे ४ ग्राम विना मालगुजारीके अमीतक पाए जाते हैं। सन् १७१९ में मराठा पेशवा बाजीरावके भतीजेने

सागरको ले लिया। उसके प्रतिनिधि गोविंदराव पंडितने नगरकी उन्नति की, इसीने किला बनाया। यह पानीपतके युद्धमें सन् १७६१ में मारा गया। सन् १८१८से सागर इंग्रेजोंके पास है।

सागरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) एरन-ग्राम तहसील खुरई। बामोरा स्टेशनसे ६ मील बीना नदीके तटपर यह पुरातत्वकी बढ़ियां जगह है। यहां सन् ई०से पहलेके सिक्के मिलते हैं। ग्रामके पास आधमील ऊंचेपर ४७ फुट ऊंचा एक बड़ा स्तम्भ है जो एक मंदिरके सामने है। इसमें सन् ४८४ के बुधगुप्तका लेख अंकित है। यहां एक वैष्णव मंदिर है जिसमें १० फुट ऊंची वराहकी मूर्ति है। पत्थरके पास सबसे पुराना ब्राह्मणोंका लेख मिलता है। सागरके गजेटियर सन् १९०६से मालूम हुआ कि इस बड़े खंभेका नीचेका आसन १३ फुट चौरस है तथा गुम्बजके ऊपर एक ५ फुट ऊंची पुरुषकी मूर्ति है जिसका मुंह दोनों ओर है। यह ९ लाइनका लेख है जिसमें लिखा है कि मंत्री विष्णु और धन्य विष्णुने स्थापित किया। एरनका पुराना नाम एराकैना है।

(२) खुरई-सागरसे ३३ मील। यहां जैनियोंके सुन्दर मंदिर हैं। सागर जिलेके गजटियरसे नीचे लिखे स्थान मालूम हुए।

(३) बंडा-सागरसे दक्षिण पूर्व २० मील। यहां जैनमंदिर है।

(४) बीना-ग्राम तहसील रहली। देवरीसे ४ मील। यहां एक बड़ा जैन मंदिर २०० वर्षसे ऊपरका है। यहां अगहन सुदी ९ को ८ दिनके लिये मेला लगता है।

(५) गढ़ाकोटा-तहसील रहली। सागरसे पूर्व २८ मील।

यह ध्वंश स्थान है। यहां एक ऊंची मीनार १०० फुट ऊंचाई पर है। भूमि १९ फुट वर्ग हर तरफ है। इसको राजा मर्दान सिंहने अपनी स्त्रीकी इच्छासे सागर और दमोहको देखनेके लिये बनाया था।

(६) सागर–यहां जैनियोंके कई मंदिर हैं। १९०१ में संख्या १०२७ थी। यहांकी बड़ी झलीको जिसको सागर कहते हैं लक्खा बंजाराने बनवाया था।

कोज़िन साहबकी रिपोर्ट सन् १८९७ से नीचेका हाल विदित हुआ।

(७) मदनपुर–सागर और ललितपुरके मध्यमें प्राचीन नगर है। यहां छः प्राचीन ध्वंश मंदिर हैं जिनमें नगरके उत्तरकी ओर सबसे पुराने तीन जैन मंदिर हैं। झीलके उत्तर पश्चिम दो व उत्तर पूर्वमें एक है। यहां संवत् १२१२ से १६९२ तकके कई शिलालेख हैं।

—≫✻≪—

[२] दमोह जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-पश्चिममें सागर; दक्षिणपूर्व नरसिंहपुर, जबलपुर; उत्तरमें पन्ना और छतरपुर राज्य। यहां भूमि २८१६ वर्गमील है। यह जिला १०वीं शताब्दीमें महोबाके चन्देल राजाओंके राज्यमें शामिल था। चंदेलोंके बनवाए पुराने मंदिर हैं। १३८३में यह देहलीके तुगलकोंके हाथमें था। यहांके स्थान जानने योग्य हैं।

(१) कुंडलपुर–पहाड़ी। दमोहसे पूर्व २० मील। यहां ५२

दि० जैन मंदिर हैं। यहां श्री महावीरस्वामीकी बृहत् मूर्ति बहुत ही मनोज्ञ व दर्शनीय है जिसका आसन ४ फुट ऊंचा है व मूर्ति १२ फुट ऊंची है। यहां २४ लाइनका शिलालेख है जो १७०० सन्‌का पन्नाके बुन्देल राजा छत्रसालके समयका है। पहाड़ीके नीचे जो सरोवर है उसको वर्द्धमान सरोवर कहते हैं। यह सं० १७५७ का है। यह जैनियोंका माननीय क्षेत्र है। ग्राममें बड़ा भारी जैन मेला प्रतिवर्ष लगता है। दमोहके परवार जैनी इसके अधिकारी हैं।

(२) नोहटा–दमोहसे दक्षिण पूर्व १२ मील। यह पहले १२ वीं शताब्दीमें चंदेलोंकी राज्यधानी थी। यहां जैन मंदिरोंके बहुत खंडहर हैं। खंभ व खंड ग्राममें मिलते हैं। जैन मूर्तियां भी यत्र तत्र पड़ी हैं। इनमें श्री चन्द्रप्रभ भगवानकी मूर्ति भी है। एक जैन मंदिर ग्रामके दक्षिण १ मील दूर सड़कपर है जो बहुत पुराना है।

(३) सिंगोरगढ़–दमोहसे दक्षिण पूर्व २८ मील। यह एक पहाड़ी किला है। जबलपुर–दमोहकी सड़कपर सिंग्रामपुर ग्रामसे ३ मील है। महोबाके चंदेलराजा बेलाने बनाया परन्तु कनिंघम साहब ८ लाइनके चौकोर खंभेके लेखपरसे इसे गजसिंह प्रतिहर या परिहर राजपूत द्वारा बनाया गया है ऐसा कहते हैं। उस लेखमें है कि गजसिंह दुर्गादेव संवत् १३६४ व सन् १३०७ है। यह परिहर राजपूत हैहय राजपूतोंके कलचूरी या चेदी वंशकी सन्तान थे।

— ❧ —

[३] जबलपुर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरपूर्व मैहर, पन्ना, रीवां राज्य; पश्चिम दमोह; दक्षिण नरसिंहपुर, सिवनी, मांडला। यहां ३९१२ वर्गमील भूमि है। इतिहास—जबलपुरसे थोड़ी दूर जो तिवार ग्राम है वही प्राचीन नगर त्रिपुरा या करणवेलका स्थान है जो कलचूरी राज्यकी राज्यधानी था। (देखो शिलालेख जबलपुर, छत्तीसगढ़ और बनारस कनिंघम रिपोर्ट नं० ९) ये हैहय राजपूतसे सम्बन्ध रखते हैं। इस वंशकी एक शाखा रतनपुरमें थी जो छत्तीसगढ़ पर राज्य करती थी। इस वंशके राजाओंका युद्ध कन्नौजके राठौड़ व महोबाके चंदेल तथा मालवाके परमारोंके साथ हुआ है। जबलपुरमें पहले अशोकका राज्य था। फिर तुंग वंशने ११२ वर्ष तक सन् ई०से ७२ वर्ष पहलेतक राज्य किया। फिर अंध्रोंने सन् २३६ तक, फिर गुप्तोंने जो परिव्राजक महाराज कहलाते थे। इनके राजाओंके ६ लेख सन् ४७५ और ५२८ के मध्यके पाए गए हैं।

जबलपुरको पहले दाहल या दमाला भी कहते थे। कलचूरी वंशका सबसे पुराना वर्णन ५८० सन्के बुद्धराजके लेखमें है। अनुमान १९ वीं शदीके यह गोंदराजाओंके अधिकारमें था। यह गद्दी मांडलाका वंश था। राज्यधानी गढ़ी थी। १७८१ में मरहठोंने कब्जा किया।

पुरातत्त्व—रीठी, छोटा देवरी, सिमरा, पुरेनी, तथा नांदचन्दमें पुराने स्थान हैं। बड़गांवके ध्वंश स्थान जैनियोंके हैं। बहरी बंद, रूपनाथ व तिगवानके ग्रामोंमें भी प्राचीन स्थान हैं।

बहुरीबन्द एक प्राचीन नगर था जिसको कनिंघमने Tolemy टोलेमीका कहा हुआ थोलावन Tholabau नाम बताया है। तिवारमें प्राचीनताका चिह्न एक बड़ी नग्न जैन मूर्ति है जिसपर कलचूरी वंशका लेख है। तिगवान एक छोटा नगर बहरीबंदसे २ मील है। इसमें बहुतसे प्राचीन मंदिरके खण्डहर हैं जिनको रेलवेके ठेकेदारोंने नष्ट कर दिया है। रूपनाथमें अशोकका स्तंभ है। यहांकि कुछ स्थानोंका वर्णन यह है—

(१) जबलपुर शहर—यहां कुछ जैन मूर्तियें खुरसैदजी कंपनीके बागमें एक मकानमें लगा दी गई हैं। इनकी खुदाई बहुत बढ़िया है। शहरको ४ मील गढ़ी है जो गोंद वंशकी राज्यधानी थी। इनका प्राचीन किला मदनमहल है जो कि टीला है। इसके नीचे मदनमहल नामका बड़ानगर बसता था। इसको मदनसिंहने सन् ११००में बनवाया था। नागपुर म्यूजियममें एक लेखमें जबलपुरका नाम जबलीपाटन भी आया है।

(२) बहरीबंद—तहसील सिहोरा–सलामाबाद रेलवे स्टेशनसे पश्चिम १२ मील। यहां नगरके पास एक पीपल वृक्षके नीचे एक बड़ी जैन मूर्ति है जो ११ फुट ४ इंच ऊंची है। आसनपर ७ लाइनका लेख है (कनिंघम रिपोर्ट नं० ९ पत्रे ३९) ४ री चौथी लाइन नष्ट होगई है। वह लेख जो पढ़ा गया वह यह है—ल० १—संवत १० XX फाल्गुण वदी ९ सोम श्रीमत् गयकर्णदेव विजय रा—

ल० २—जो राष्ट्रकूट कुलोद्भव महासमंताधिपति श्रीमद् गोल्हाण देवस्य प्रवर्द्धमानस्य।

ल० ३—श्रीमद् गोल्हणी........मव........—

इसका भाव यह है कि गोल्हणी राष्टकूट वंशीय गोल्हन देवका सेनापति था। यह देश गोल्हनदेवके अधिकारमें था जो महाराज कलचूरी गयकर्णदेवके आधीन राज्य करता था। इसीका पुत्र नरसिंहदेव था जिसके भेराघाटका लेख सन् ९०७ है।

यह बहुरीबंद जबलपुरसे उत्तर ३२ मील कमूरी पहाड़ीके किनारेपर है जो १२० फुट ऊँची है।

जबलपुर जिलेके गजटियर सन् १९०९में लिखा है कि यह बड़ी मूर्ति छः फुट चौड़ी है तथा लेखसे प्रगट है कि यहां श्री शांतिनाथका मंदिर ११वीं शताब्दीमें बना हुआ था।

(३) बड़गांव—तहसील मुड़वाड़ा। मुड़वाड़ासे उत्तर पश्चिम २७ मील व सलीना स्टेशनसे ६ मील जो कटनी बीना रेल लाइन पर है। यह जैनियोंका प्राचीन स्थान है। उनके मंदिर व प्रतिमाओंके खंड मिलते हैं।

एक जैन मंदिर नीचेसे २१ फुट ऊंचा है। इसमें एक लेख है जो बहुत घिस गया है, पढ़ा नहीं जाता (कनिंघम रिपोर्ट २१ सफा १०१ और १६१) कुछ जैन शिलालेखोंमें कलचूरीके कर्णदेव राजाका नाम आया है।

(४) देमापुर—प्राचीन नाम देवपुर-सिहोरासे पूर्व १० मील। यहां अब भी बहुत सुन्दर खुदाईके पाषाण व मूर्तियें मिलती हैं। यहांसे २ मीलपर तोला ग्राम है उसके एक कूएकी भीतोंके आलोंमें यहांकी कई मूर्तियें रक्खी हैं—ये बहुत ही सुन्दर शिल्पकी हैं—जिनमें बहुतसी जैनधर्मकी हैं। एक मूर्तिके आसनपर कलचूरी वंशका लेख संवत ९०७का है।

(५) कटीनल्ला—प्राचीन नाम कर्णपुर—तहसील मुड़वाड़ा जहांसे उत्तरपूर्व ३२ मील है। यहां ताम्रपत्र गुप्त संवत १७४ या सन् ४९३-९४ का है जिसमें उच्छकल्पपुर (वर्तमान उचहरा) के महाराज जयनाथका उल्लेख है। यह कैमूर पहाड़ीकी पूर्व ओर मैहरसे दक्षिणपूर्व २२ मील व उचहरासे दक्षिण ३१ मील है। यहां बहुतसे मंदिरोंके ध्वंश हैं, उनमें एक नग्न जैन मूर्ति भी है। जबलपुरके म्यूजियममें कटीनल्लाईका एक लम्बा शिलालेख है। जिसमें चेदी वंशके युवराजदेव और लक्ष्मणराजके नाम हैं।

(६) मझौली—तहसील सिहोरा। सिहोरा रेलवे स्टेशनसे १४ मील—यह एक ग्राम है यहां प्राचीन मंदिर है खंडित पाषाण और मूर्तियोंमें एक नग्न जैन मूर्ति भी है जिसमें विदित है कि जैन मंदिर था। यह चेदी वंशकी पुरानी राज्यधानी तिवारसे २२ मील उत्तरको है। तिवारसे बिल्हारी तक पुरानी सड़क गई है। उसीपर यह ग्राम है।

(७) तिवार—जबलपुरसे पश्चिम करीब ८ मील यह ग्राम संगमर्मरकी चट्टान पर बसा है। गढ़के पास है। प्राचीन नाम त्रिपुरा है। यहांसे दक्षिण पूर्व आध मीलपर त्रिपुराके प्राचीन नगरके खंडहर हैं जिसको कलचूरी राजा कर्णदेवने ११वीं शताब्दीमें करणावती या करणबेल नाम दिया था। तिवार ग्राममें बहुतसे खंडित पाषाण हैं तथा तीन नग्न दिगम्बर जैन मूर्तियें हैं—उनमें एक श्री आदिनाथकी है जिनके साथ दो नग्न मूर्तियें और हैं तथा दो मूर्तियें खडगासन २॥ फुट ऊंची हैं जो किसी स्तम्भमें लगी थीं। यहां बालसागर नामका बड़ा तालाब है उसके

आलेमें कुछ बढ़िया मूर्तियें विराजित हैं जिनमें एक जैनधर्मकी है। ऊपर तीर्थंकर हैं नीचे एक स्त्री है जिसकी भुजाओंमें एक बालक है जिसके नीचे एक लेख है उसमें लिखा है कि मानदित्य की स्त्री सोमा नित्य प्रणाम करती है—अक्षर १२वीं शताब्दीके हैं।

म० नोट—ऐसी मूर्तिया मानभूम जिले विहारमें कई स्थानोंमें देखी गई हैं। देखो (प्राचीन जैन स्मारक बगाल, विहार, उडीसा पृष्ठ ९९) तथा एक मूर्ति राजशाही (बगाल) के वरेन्द्ररिसर्च इस्टीट्यूटके मकानमें विराजित है (देखो बगाल वि० उडीसा प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ १३१)

कनिंघमसाहबकी रिपोर्ट न० ९से नीचेका हाल विदित हुआ।

(८) भूमार—उचहरासे पश्चिम १० मील उंचाईपर बसा है। यहां एक प्रसिद्ध स्तंभ है जो गाढ़े लाल वालू पाषाणका है जिसको ठाढा पत्थर कहते हैं इसके नीचे भागमें गुप्त समयके अक्षरोंका ९ लाइनका लेख है जिनमें भिन्न२ वंशके दो राजाओंके नाम हैं उनमेंसे एक उचहराके ताम्रपत्रके प्रसिद्ध राजा हस्तिन् हैं और दूसरे करीतलाइके ताम्रपत्रके राजा जयनाथके पुत्र शर्व्व-नाथ हैं।

ये दोनों राजा समकालीन थे—इन राजाओंके नाम नीचे लिखे ९ शिलालेखोंमें आए हैं।

न०	नाम राजा	गुप्त संवत	कहां रक्खे हैं
१	राजा हस्तिन्	१५६	बनारस कालेज
२	„	१७३	अलाहाबाद म्यूजियम
३	राजा जयनाथ	१७४	कनिंघम साहबके पास

४	राजा जयनाथ	१७७	राजा उचहराके पास
५	राजा हस्तिन्	१९१	राजा उचहराके पास
६	,, सर्वनाथ	१९७	,,
७	,, संखम	२०९	,,
८	,, सर्वनाथ	२१४	कनिंघम साहबके पास
९	राजा हस्तिन् और सर्वनाथ		भूभारके स्तम्भपर

नं० ८के शिलालेखमें पृष्ठपुरी नाम आया है।

(२) पटेनीदेवी–पिथौराकी बड़ी देवी जिसको आजकल पटेनीदेवी कहते हैं। इसकी ४ भुजाएं हैं व साथमें बहुतसी नग्न मूर्तियां हैं जिससे यही समझमें आता है कि यह जैन देवी होनी चाहिये। समुद्रगुप्तके एक शिलालेखमें पृष्ठपुरक, महेन्द्रगिरिक, उद्धारक और स्वामीदत्त नाम हैं। इनमें पहले तीन क्रमसे पिथौरा, महियर और उछहराके लेखोंसे मिलते हैं यह पटेनीदेवी उछहरासे ८ मील है व पिथौरासे पूर्व ४ मील है। इस देवीके चारों तरफ मूर्तियां हैं। ५ ऊपर, ७ दाहनी, ७ बाई व ४ नीचे सर्व २३ हैं। इस देवीकी चार भुजाएं टूट गई हैं, इनके पास नाम भी १०वीं व ११वीं शताब्दीके अक्षरोंमें लिखे हैं। जो मूर्तियां ५ ऊपर हैं उनपर नाम हैं बहुरूपिणी, चामुराड, पदमावती, बिजया और सरस्वती। जो सात बाई तरफ हैं उसके नाम हैं अपराजिता, महामूनसी, अनन्तमती, गंधारी, मानसिजाला, मालनी, मानुजी तथा जो सात दाहनी तरफ हैं उनके नाम हैं जया, अनन्तमती, वैराता, गौरी, काली, महाकाली और वृनंतकशा। (नीचेके ४ नाम इस रिपोर्टमें नहीं लिखे हैं)। द्वारपर बाहर तीन मूर्तियां पद्मासन हैं।

मध्यकी छत्रसहित श्री आदिनाथजीकी है। आसनपर बैलका चिन्ह हैं, दाहनी व वाई तरफकी मूर्तियोंके आसनपर सर्पके चिन्ह हैं तथा दाहनी मूर्तिपर सात फण व वाईपर पांच फण हैं। ये तीन मूर्तियां प्रगटरूपसे जैनकी हैं इससे मुझे पक्का विश्वास होता है कि यह पटेनीदेवी जैनियोंकी है। "I feel satisfied that the enshrined goddess must belong to Jains." इस देवीके दोनों तरफ कायोत्सर्ग आसन नग्न जैन मूर्तियोंकी दो लाइनें हैं। ये अवश्य जैनकी हैं, यह मंदिर लेखके समयसे बहुत पुराना है। (कनिंघम रिपोर्ट नं० ९)

सं नोट-मालूम होता है कि मध्यमें देवीकी मूर्ति न होकर किसी तीर्थंकरकी जैन मूर्ति होगी जिसे देवी मान लिया गया है। इसकी जांच अच्छी तरह होनी चाहिये।

(१०) विलहारी-प्राचीन नगर-कटनीसे पश्चिम १० मील भरहुत और जबलपुरके मध्यमें प्राचीन नाम पुष्पवती है। यहां राजा गोविंदराव संवत ९१९ या सन् ८६२में राज्य करते थे।

(११) रूपनाथ-बहुरीवन्दसे दक्षिणपश्चिम १२ मील तथा सलेमाबाद स्टे०से पश्चिम १४ मील। यहां राजा अशोकका शिलास्तम्भ है।

(१२) भरहुत-यहां बौद्ध स्तूप है। यह जबलपुर और अलाहाबादके मध्यमें है। सतना और उछहराके मध्य रेलसे २ मील करीब है। अलाहाबादसे १२० व जबलपुरसे १११ मील है।

—>>※<<—

(४) मांडला जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरपश्चिम जबलपुर, उत्तर पूर्व रीवां, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम—बालाघाट व सिवनी, दक्षिणपूर्व बिलासपुर और कवर्धा राज्य। यहां ५०५४ वर्गमील स्थान है।

यहां गढ़ी माडलावंशने रामनगरके महलमें पांचवीं सदीमें राज्यप्रारम्भ किया तब जादोराय राजपूतने जो गोंद राजाका सेवक था उसकी कन्याको विवाहा और उसके पीछे राजा हुआ। इस वंशमें अंतिम राजा संग्रामसिंह सन् १४८०में हुआ। दुर्गावतीकी वीरता—सन् १५६४ में जब असफखांने चढ़ाई की तब उसकी रानी दुर्गावती जो अपने छोटे बच्चेकी प्रतिनिधिरूपसे राज्य करती थी निकली और सिंगोरगढ़के किलेके पास युद्ध किया। पराजित होनेपर वह मांडलामें गढके पास आई और उसने अपना दृढ़ बल प्रगट किया। वह हाथीपर चढ़कर युद्ध करने लगी। इसने अपनी सेनाको वीरता दिखानेको प्रेरित किया। स्वयं सेनापतिका काम किया—उसकी आखमें लाल घाव होगया तब भी उसने पीठा न दिखाया। अन्तमें जब उसने देखा कि उसकी सेना असमर्थ होगई तब उसने अपने हाथीके महावतसे कटार लेकर अपनी छातीमें मारी और वह मर गई। फिर मुसरमानोंका राज्य हो गया।

इसका प्राचीन नाम महिषमडल या महिषावती संस्कृत साहित्यमें आता है। यह राजा कार्त्तवीर्यका राज्यस्थान रहा है।

(१) कर्करामठ मंदिर—तहसील डिन्डोरी, डिन्डोरीसे १२ मील। यहां किसी समय पाच मदिर थे उनमेंसे एक मौजूद हैं।

यह विना गारेके फटे हुए पाषाणोंसे बना है और अन्य ध्वंश स्थानोंकी तरह यह भी शायद जैनियोंका ही कार्य है। यहां बहुत सुन्दर शिल्पकी जैन मूर्तियां हैं। डिन्डोरीमे ९ मीलपर भी दक्षिण और नौमीसे १२ वीं शताब्दीके मध्यके जैन मंदिर हैं।

(२) देवगांव–नर्वदा नदी और बुढ़नेरके संगमपर मांडलासे उत्तर पूर्व २० मील यहां भी प्राचीन मंदिर हैं।

(३) रामनगर–यहां आठ राजाओंका राज्य होरहा है–यहां भी कुछ ध्वंश स्थान है।

[५] सिवनी जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है–उत्तर–नरसिंहपुर, जबलपुर, पूर्व–मांडला, बालाघाट और भंडारा, दक्षिण–नागपुर, पश्चिम–छिंदवाड़ा–यहां ३२०६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास–सिवनीमें एक ताम्रपत्र मिला है जिससे जाना जाता है कि शतपुरा पहाडीके मैदान पर वाकतक वंशके राजाओंकी एक शाखा तीसरी शताब्दीसे राज्य कर रही थी–उसमें वंश संस्थापकका नाम विंध्यशक्ति है–ऐसे ही लेख अजन्ताकी गुफाओंमें हैं।

पुरातत्त्व–तालुका सिवनीके घनसोर स्थानपर बहुतसे जैन मंदिर हैं। सिवनीसे २८ मील आष्टामें वरघाटपर तीन मंदिर पाषाणके हैं। ऐसे ही लखनादोन पर हैं। कुरईके पास चीसापुरमें गोंद राजा भोपतकी विधवा मोना रानीका बनवाया हुआ पुराना मंदिर है। मुख्य स्थान ये हैं।

(१) चावरी–तहसील सिवनी, यहांसे दक्षिण पश्चिम ६

मील। यह परवार जैनियोंका प्राचीन स्थान है। पुराने जैन मंदिरोंके ध्वंस हैं।

(२) छपारा—सिवनीसे उत्तर २१ मील। तहसील लखनादोन। यहां जैनियोंके मंदिर हैं।

(३) घनसोर—तहसील सिवनी, यहांसे उत्तर पूर्व ३० मील व केवलारी स्टेशनसे ६ मील। यहां स्नेती नदीके तटपर १॥ मील तक जैन मंदिरोंके ध्वंस स्थान हैं। अब केवल पाषाणोंके ढेर हैं। कुछ पाषाण सिवनीके दूल सागरकी सीढ़ियोंमें लगे हैं। वे बड़े सुन्दर हैं। कुछ जैन मूर्तियें नवीन जैन मंदिरोंमें हैं। खास घनसोरमें एक बहुत सुन्दर और बड़ी जैन मूर्ति है जिसको ग्रामके लोग नांगा बाबाके नामसे पूजते हैं। ये सब शिल्प नौमी शताब्दीके मालूम होते हैं।

(४) लखनादोन—सिवनीसे उत्तर ३८ मील। यहां जैन मंदिरोंके ध्वंश हैं, यहांकी कुछ मूर्तियें नागपुर म्यूजियममें हैं। इस ग्रामसे १ मील एक पहाडी या गढ़ी सौनतोरियाके नामसे है, इसपर किला था। एक पाषाण दो भागोंमें टूटा हुआ मिला था जिसपर छोटा लेख था। इस लेखमें विक्रमसेनका नाम आता है जिसने जैन तीर्थंकरकी भक्तिमें मंदिर बनवाया। यह त्रिविक्रमसेनका शिष्य था। त्रिविक्रम अमृतसेनका शिष्य था। अक्षर १० वीं शताब्दीके हैं।

(५) सिवनी शहर—यहां सुन्दर जैन मंदिर हैं। जिनको शुक्रवारी मंदिर कहते हैं। इनमेंसे एकमें एक प्राचीन जैन मूर्ति सन् १४९१की चावरीसे लाई हुई विराजमान है।

(२) नर्बदा विभाग।

[६] नरसिंहपुर जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है-उत्तर-भूपाल, सागर, दमोह, जबलपुर, दक्षिण-छिंदवाड़ा, पश्चिम-हुशंगाबाद, पूर्व-सिवनी और जबलपुर। यहां १९७६ वर्ग मील स्थान है—

यहांके मुख्य स्थान हैं-

(१) बरहटा-नरसिंहपुरसे दक्षिण पूर्व १४ मील। यहां बहुतसे प्राचीन पाषाण स्तंभ व मूर्तियें मिली थीं इनमें कुछ नरसिंहपुरके टाउनहालके बागमें हैं और कुछ मूर्तियें वहांपर हैं वे जैन तीर्थंकरोंकी हैं। यह बहुत प्राचीन स्थान है-ये दि० जैनकी मूर्तियां कुछ बैठे कुछ खड़े आसन हैं। वर्तमानमें वहां ६ ऐसी मूर्तियें हैं। एक पर चंद्रका चिन्ह है इससे वह चंद्रप्रभु भगवानकी है। यहांके हिन्दू लोग इनको पांच पांडव और कृष्ण मानकर पूजते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि इनके पूजनेसे पशुओंके रोग, शीतला, व दूसरे संक्रामक रोग चले जाते हैं। यहां वैशाख सुदीमें एक सप्ताहतक मेला भरता है। प्रबन्ध जबलपुरके राजा गोकुलदास करते हैं। ये मूर्तियें एक छोटे घेरेमें विराजित हैं। सबसे बढ़िया मूर्तियें यात्री लोग बर्लिन और वरसाको यूरोपमें लेगए।

Best of sculptures said to have been taken to Berlin and Warsa by travellers.

(२) तेंदूखेडा-तालुका गाडरवारा। नरसिंहपुरसे उत्तर पश्चिम २२ मील। यहां एक जैन मंदिर है जिसमे पत्थरकी खुदाई

अच्छी है। प्राचीनकालमें यह लोहेकी कारीगरीके लिये प्रसिद्ध था। पासमें लोहेकी खानें थी। ग्राममें बहुत लुहार काम करते थे अब बहुत कम लोहा निकलता है। यह कारीगरी अब मर गई है।
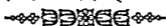
[७] हुशंगाबाद-जिला।

इसकी चौहद्दी है, उत्तरमें भूपाल इन्दौर, पूर्वमें नरसिंहपुर, पश्चिममें नीमाड़ दक्षिणमें छिंदवाड़ा, वेतूल और बरार।

यहां ३६७६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—यहां राष्ट्रकूटोंका एक ताम्रपत्र मिला है। जिसमें लिखा है कि राष्ट्रकूट राजा अभिमन्युने पंच मढीसे ४ मील पेठ पंगारकमें स्थित दक्षिण शिवके मंदिरको उन्तिवातक नामका ग्राम भेटमें दिया। सातवी शताब्दीमें रीवां राज्यके नैनपुरमें राष्ट्रकूट वंश स्थापित हुआ। राठोर राजपूत यही राष्ट्रवंशी राजा हैं।

पुरातत्व—यहां भिन्न २ स्थानोंपर कुछ मूर्तियां मिली हैं। सबसे अधिक उपयोगी एक मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी फणसहित जैन मूर्ति है जो सन्खेरामें मिली व दूसरी एक बड़ी मूर्ति सुहागपुरमें मिली है।

(१) सुहागपुर—हुशंगाबादसे ३२ मील पूर्व है। इसका प्राचीन नाम शोणितपुर है राजा भोजके भाई मुंजने अपनी राज्यधानी उज्जैनसे बदलकर यहां स्थापित की।

(२) टिमरणी—ष्टे० G. I. P. हुशंगाबादसे ९१ मील है। यहां एक खंडित जैन मूर्ति संवत १२६९ या सन् १२०८ की है।

[८] नीमाड जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है। उत्तरमें इन्दौर, धार, पश्चिममें इन्दौर, खानदेश, दक्षिणमे खानदेश, अमरावती और अकोला, पूर्वमें हुशगाबाद और बेतूल। यहा पहाडी और मैदान बहुत है।

इतिहास–सन् ९८५ तक यहा गुप्त और हूनोंने राज्य किया फिर थानेश्वर और कन्नौजके वर्द्धन वशने सन् ६४८ तक फिर बाकतक राजाओंने राज्य किया, जिनके लेख अजन्टाकी गुफा, अमरावती, सिवनी और छिंदवाड़ामें मिलते हैं। नौमीसे १२ वीं शताब्दी तक धारके परमारोंने राज्य किया। यहा सबसे प्राचीन शिलालेख परमार राजाओंका मानधातामें मिला है इसमें लिखा है कि सन् १०५५ में परमार या पवार राजा जयसिंहदेवने अमरेश्वरके ब्राह्मणको एक ग्राम भेटमें दिया। दूसरा शिलालेख सन् १२१८का हरसूदमे मिला जिसमें धारके राजा देवपाल देवका नाम है। तीसरा सिद्धवरके मदिरमें १२२५ का मिला जिसमें देवपालदेवका नाम है। वहीं एक और मिला सन् ११२६का जिसमें राजा जयवर्मनका नाम है। सातवा परमार राजा भोज बहुत प्रसिद्ध हुआ है जो राजा मुंजका भतीजा था। राजा भोज सन् १०१० ई० में प्रसिद्ध हुए। इसने ४० वर्ष तक राज्य किया।

यहाके प्राचीन स्थान हैं।

(१) खंडवा–प्राचीनकालमें जैन समाजका प्रसिद्ध स्थान रहा है। बहुतसे सुन्दर पाषाण जो जैन मंदिरोंसे लाए गए हैं शहरके मकानोंमें दिखाई देते हैं। टोलेमीने इसका नाम कोग्नबन्द

लिखा है। अरबके विद्वान अलबेरुनीने इसे ११ वी १२ वीं शताब्दीमें खंडवाहो लिखा है तथा बताया है कि यह जैन पूजाका महान स्थान था।

यह १९१६में मालवाकी राज्यधानी थी इसे जसवंतराव होल्करने सन् १८०२ में जला डाला फिर सन् १८९८ में इसे तांतियाटोपीने जलाया। जैन पाषाण चार सरोवरोंमें मिलते हैं—रामेश्वरकुंड, पद्मकुंड, भीमकुंड और सूर्यकुंड। सबमे बढ़िया जैन मूर्तियें पुराने खंडवाके किलेमें पद्मकुंड पर मिलती हैं (कनिंघम जिल्द ९ पृ० ११२)

(२) वरहानपुर—यह १६३९ में बहुत बड़ा नगर था Tavernier टेवरनियर यात्री सूरतसे आगरा जाते हुए सन् १६४१ और १६५८में इस नगरमें होकर गया था। वह लिखता है—

"In all the province an enormous quantity of very transparent muslins are made, which are exported to Persia, Turkey, Muscovie, Poland, Arabia, Grand Cairo & other places, some are dyed with various colours and with flowers."

भावार्थ—सब प्रांतभरमें बहुत महीन मलमलें बहुत अधिक बनती हैं जो यहांसे फारस, टर्की, मस्कौ, पोलेंड, अरब, महानकेरो और दूसरे स्थानोंपर भेजी जाती हैं। कुछमें नाना प्रकारके रङ्ग दिये जाते हैं कुछमें फूल बनाए जाते हैं।

(३) असीरगढ़ किला—तहसील वरहानपुर, खण्डवासे २९ व वरहानपुरसे १४ मील है। चांदनी रेलवे स्टेशनसे ७ मील। यह एक पहाड़ी है जो ८५० फुट ऊँची है। यहां कई

वंशोंने राज्य किया है। एक प्राचीन जैन मंदिरका स्तम्भ खोदनेसे मिला है, जिससे प्रगट होता है कि यह शायद उसी जैन वंशके हाथमें था जिनके प्राचीन मकान खण्डवामें बनाए गए थे। इस स्तंभपर पांच राजाओंके नाम हैं। उपाधि वर्मा है, जिनमेंसे दोने गुप्त राजाओंकी कन्याएं १० वीं या ११ वीं शताब्दीके अनुमान विवाही थीं। किलेका नाम आसा या आसापूरणीसे या शायद असी या हैहय राजाओंके वंशकी प्राचीन उपाधिसे निकला हो। ये हैहय राजा इस देशमें महेश्वरसे लेकर नर्बदा तटपर सन् ई० ९००के पहलेसे राज्य करते थे। (Tod's Vol. II. P. 442). इस असीरगढ़की चट्टानों तथा मकानोंपर बहुतसे लेख हैं (C P. Antiquarian journal No. II)

(४) मानधाता—तालुका खंडवा, यहांसे ३२ मील, मोरटका टेशनसे पूर्व ७ मील। पहाड़ीके ऊपर प्राचीन ऐश्वर्ययुक्त वस्तीके चिह्न रूप ध्वंश किले व मंदिर हैं। मुख्य मंदिर सिद्धनाथका है। ओंकारजीका मंदिर हालका बना है परन्तु जो बड़े २ स्तम्भ इसमें लगे हैं कुछ प्राचीन इमारतोंसे लाए गए हैं। नदीके उत्तर तटपर कुछ वैष्णव और जैनके मंदिर हैं। मानधाताके राजा भीलाल हैं जो अपनी उत्पत्ति चौहान राजपूतोंसे बताते हैं। चौहानोंने इसे भील सर्दारसे सन् ११६९ में ले लिया था।

सिद्धवरकूट—पहाड़ीपर प्राचीनकालमें स्थित पुराने जैन मंदिरोंके ध्वंश स्थान हैं। अब जैन जातिने मंदिरोंका नवीन दृश्य प्रगट कराया है। प्राचीन मंदिरमें कुछ मूर्तियोंपर ता० १४८८ हैं। बहुतसी मूर्तियां श्री शांतिनाथ भगवानकी हैं। पर्वतकी चोटीपर

एक पाषाण है जिसको वीरखीला कहते हैं व नीचे भैरोंकी चट्टान है। यह सिद्धवरकूट जैनियोंका बहुत प्राचीन तीर्थ है। यहांसे गत चतुर्थकालमें दो चक्री दस कामदेव और ३॥ करोड़ मुनि मोक्ष पधारे हैं।

प्रमाण—प्राकृत—

रेवाणइए तीरे पश्चिम भायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्की दहकप्पे आहुट्ठयकोड़ि णिव्वुदे वंदे॥ ११॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

भाषा—रेवा नदी सिद्धवरकूट, पश्चिम दिशा देह तह छूट।
द्वेचक्री दस काम कुमार, ऊठ कोड़ि वंदों भवपार॥
(भैया भगवतीदासकृत सं० १७४१)

[९] बेतूल जिला।

इसकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तर पश्चिम हुशंगाबाद, पूर्व छिंदवाड़ा, दक्षिण—अमरावती। यहां ३८२६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—यहां पहले राजपूतवंशी फिर गोंद लोगोंने राज्य किया। विदनूरसे अनुमान ४ मील खेरलाका किला है। १२०० ई०में मुकुन्दराव स्वामीने विवेकसिंधु नामकी पुस्तक बनाई है उसमें खेरलाके गोंद राजाओंका वर्णन है। किलेमें मुकुंदरावकी समाधि है। यहां गुप्त सं० १९९ या सन् ई० ९१८ का ताम्रपत्र बेतूलके कुरमी जमीदारके पास है, जिसमें नागोदके राजा द्वारा त्रिपुरा (जबलपुर)में एक ग्रामके दानका वर्णन है। 'मुलताईके

किसी गोहाना' के पास तीन ताम्रपत्र सन् ७०९ के हैं, जिसमें राष्ट्रकूट राजा नंदराज द्वारा एक ब्राह्मणको ग्राम दानका वर्णन है।

(१) कजली कनोजिया-तहसील मुलताई। छिंदवाड़ा जानेवाली सड़कपर विदनूरके पूर्व २४ मील वेल नदीपर मंदिरोंके ध्वंश हैं उनमें जैन मूर्तियां अच्छी कारीगरी की हैं। उनमेंसे कुछ नागपुर म्यूजियममें गई हैं।

(२) श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र-वर्तमानमें जैन यात्रीगण एलिचपुर होकर जाते हैं जहां मुर्तजापुर (वरार प्रांत) से रेल गई है। एलिचपुरसे ६ मीलके अनुमान है। यह पर्वत बहुत मनोहर है पानीका झरना बहता है। ऊपर बहुतसे दिगम्बर जैन मंदिर हैं उनमे बहुतसोंमें प्राचीन मूर्तियें हैं। वार्षिक मेला होता है। यहांसे ३॥ करोड़ मुनि भिन्न २ समयमें इस कल्प कालमें मोक्ष पधारे हैं। जिसका आगम प्रमाण यह है।

प्राकृत-अचलपुर वर णयरे ईसाणे भाए मेढ़गिरि सिहरे।
आहुट्टयकोडीओ णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥ १६ ॥
(प्राकृत निर्वाणकांड)

अचलापुरकी दिशा ईशान, तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़ेतीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चित लाय ॥१८॥
(भैया भगवतीदास कृत)

इसके प्रबंधकर्ता सेठ लालासा मोतीसा एलिचपुर हैं। हीरालाल बी० ए० कृत सी० पी० लेख पुस्तक १९१६ में सफा ७९ पर दिया है कि यह मुक्तागिरि बदनूरसे ६७ मील है। जैनियोंका पवित्र तीर्थ है। ऊपर ४८ मंदिर हैं जिनमें ८९ मूर्तियां

हैं। नीचे नए बने मंदिरमें २९ मूर्तियां हैं जो सन् १४८८ से १८९३ तककी हैं। कुछ मंदिरोंमें उनके जीर्णोद्धार किये जानेके लेख हैं। एकमें सन् १६३४ है। हालमें एलिचपुरके बापूशाहने २२०००) खर्चकर सन् १८९६ में जीर्णोद्धार कराया।

[१०] छिंदवाडा जिला।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तर हुशंगाबाद, नरसिंहपुर, पश्चिम बेतूल, पूर्व सिवनी, दक्षिण नागपुर—यहां ४६३१ वर्ग मील स्थान है—.

इतिहास—इसका शासन दक्षिणके मलखेड़में राज्य करनेवाले राष्ट्रकूट वंशके आधीन था। एक ताम्रपत्र इस वंशका बेतूलके मुलताईमें, दूसरा वर्धाकी देवलीमें मिला है। देवलीका ताम्रपत्र सन् ९४० कृष्ण तृ० महाराजके राज्यका है। इसमें कथन है कि एक कनड़ी ब्राह्मणको ताल्पुरुनशक नामका ग्राम जो नागपुर नंदिवर्द्धन जिलेमें था भेटमें दिया गया। नागपुर नंदिवर्द्धन जिला छिंदवाडाके दक्षिण भागको कहते थे। छिंदवाड़ामें नीलकंठी पर एक स्तम्भ मिला है, जिसपर लेख है कि यह कृष्ण तृ० राजाके राज्यमें बना। यह नीलकंठी महगांवसे अनुमान ४० मील है इसीके निकट तालपुरनशक ग्राम है। नीलकंठीमें ७वीं व ८वीं शताब्दीके मंदिरोंके ध्वंश हैं। यह स्तम्भ सड़कके किनारे खड़ा है। छिंदवाड़ाके अगवुर्नर सरोवर पर कुछ प्राचीन पाषाण नीलकंठीसे लाए हुए रखखे हैं। राष्ट्रकूट वंशी राजा सोमवंश या यदुवंशकी संतान हैं ऐसा दूसरा लेखोंसे प्रगट है।

देवगढ़—जो छिंदवाड़ासे दक्षिण पश्चिम २४ मील है। यहां छिन्दवाड़ा और नागपुरका प्राचीन राज्यवंशी स्थान था। यह इतना प्रभावशाली हुआ कि इसने मांडला और चांदाको अपने आधीन किया था।

(१) छिन्दवाडा—यहां गोलगंजमें जैन मंदिर हैं।

(२) मोहगांव—ता० सौंसर—यहांसे ९ मील, छिंदवाड़ासे ३७ मील। १० वीं शताब्दीके राष्ट्रकूट लेखमें इसका नाम मोहनग्राम है। यहां दो प्राचीन मंदिर हैं।

(३) नीलकण्ठी—ता० छिंदवाड़ा—यहांसे दक्षिण पूर्व १४ मील कुछ मंदिरोंके ध्वंश हैं। एक मुख्य मंदिरके द्वारपर एक लेख सहित स्तम्भ है, जिस मंदिरके कोटकी भीत २६४ फुट लंबी और १३२ फुट चौड़ी है।

नोट—इन स्थानोंमें जैन चिन्होंको ढूंढ़ना चाहिये।

(३) नागपुर विभाग।

[११] वर्धा जिला।

इसकी चौहद्दी–उत्तरमें अमरावती, पश्चिममें अमरावती व येवतमाल, दक्षिणमें चादा, पूर्वमें नागपुर। यहा २४२८ वर्ग मील स्थान है।

यहा तीसरी शताब्दी तक अंध्र राज्यने राज्य किया। सन् ११३ ई०में निलिवायुकुर द्वि॰ का राज्य बरारमें था।

देवली–वर्धासे ११ मील व देवगांवसे ८॥ मील है। यहा राष्ट्रकूट वशका एक ताम्रपत्र सन् ९४० का मिला है।

[१२] नागपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है–उत्तर छिंदवाडा, शिवनी। पूर्व भडारा, दक्षिण पश्चिम चदा और वर्धा। उत्तर पश्चिम अमरावती। यहा ३८४० वर्गमील स्थान है।

इतिहास–तीसरीसे छठी शताब्दी तक यह जिला वाकातक राजपूत राजाओंके अधिकारमें था जिनके राज्यमें शतपुरा मैदान व बरार भी शामिल था।

(१) रामटेक–नागपुरसे उत्तरपूर्व २४ मील पहाडीके नीचे प्राचीन मदिर हैं। उनमें कुछ जैन मदिर हैं, एकमें श्री शांतिनाथकी कायोत्सर्ग १८ फुट ऊची मूर्ति दर्शनीय मनोज्ञ है।

(२) पर शिवनी–ता० रामटेक नागपुरसे उत्तर १६ मील। यहा एक किलेके ध्वश हैं, यहां श्वेत पाषाणका एक जैन मंदिर है मूर्ति भी श्वेत पाषाणकी है। अभी-भी जैन लोग पूजते हैं।

(३) सावरगांव--नागपुरसे ३६ मील, काटोलसे उत्तर १० मील। यहा एक सुन्दर महावीरस्वामीका मंदिर है। नोट-यहा जैन शब्द नहीं है, जांचना चाहिये।

(४) उमरेर नगर--नागपुरसे दक्षिणपूर्व २९ मील। यहा १०००० कुष्टी लोग हैं जो हाथसे रेशमकी किनारी सहित रुईके कपड़े बुनते हैं। यहांसे प्रतिवर्ष २ लाख रुपयेका कपड़ा बाहर जाता है। नोट-इनमें कुछ जैन कुष्टी होंगे जैसा सेन्ससने प्रगट है तलाश करना चाहिये।

(४) नागपुर--यहा कई जैन मंदिर हैं। यहांके म्यूजियममें जैन मूर्तियें उस नरहपर कोजन साहबकी रिपोर्टके अनुसार सन् १८९७ में थीं।

दो जैन मूर्तिया हुशंगाबादमें, कुछ जैन मूर्तियोंके भाग खंडवासे, कुछ जैन मूर्तिया बरहानपुरसे व कुछ जैन मूर्तिया नीमार, चिचोटी, बाघनदी और हाजीसे लाई हुई थी।

नोट-बरहानपुरकी मूर्तिया अखंडित व पूज्य थीं जो वहांसे मिल गई हैं और परवारोंके दि० जैन मंदिरमें विराजमान हैं।

---

[१३] चांदा जिला।

चौहद्दी-उत्तरमें नांदगाव राज्य और भंडारा, नागपुर, वर्धा, पश्चिम और दक्षिणमें येवतमाल और निजाम राज्य, पूर्वमें वस्तर और कंकड़ राज्य व द्रुग। यहां १०१९६ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास-चन्दाके निकट भांदक ग्राम वाकाटक वंशकी राजधानी थी जिनका शासन बरार, मध्यप्रांत नर्मदाके दक्षिण वाईं गंगातक था। शिलालेखोंसे प्रगट है कि इन राजाओंने चौथीसे

बारहवीं शताब्दी तक राज्य किया फिर गोंद वंशका शासन हुआ। चन्दाके राजाओंको बल्लारशाही कहते थे। गोंद वंशके १९ राजाओंने १७५१ तक राज्य किया। १९ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें नौमा राजा बल्लालशाह हुआ। ११ वां हीरशाह हुआ, जिसने चन्दाका किला बनवाया था। इसका पोता कर्णशाह था जिसने हिंदू धर्म धारण कर लिया था (सं० नोट–मालूम होता है कि पहले ये राजा लोग जैनधर्मी होंगे क्योंकि भांदकमें जैन धर्मके बहुतसे स्मारक हैं)। आईने अकबरीमें कर्णशाहके पुत्रका वर्णन है। यह स्वतंत्र था, अकबरको कर नहीं देता था।

चन्दाका प्राचीन नाम चंद्रपुर था।

पुरातत्व–यह जिला पुरातत्वकी सामग्रीसे पूर्ण है जिनमें कथनयोग्य जरूरी सामग्री भांदक, चदानगर और मारकंडी पर हैं। भांदक, विजवसनी, देवाल तथा घूगुसें गुफाके मंदिर हैं। बल्लालपुरके नीचे वर्धामें पाषाण मंदिर हैं। मारकंडी, नेरी, वहां, अरमोरी देवटेक, मटाल, भांदक, वेरगढ़, वघनक, केसलाबारी, घोरघे पर प्राचीन मंदिर हैं। नोट–इन सबमें जैन स्मारक होंगे। जांच करनेकी जरूरत है।

(१) भांदक–तहसील वरोरा–यहांसे १२ मील, चन्दासे उत्तरपश्चिम १६ मील। यहां बहुत सुन्दर जैन मूर्तियोंके समूह इधरउधर ग्रामके अंत सरोवरके निकट विराजमान हैं। ग्रामसे दक्षिणपश्चिम १॥ मीलपर वीजासन नामकी बौद्ध गुफा है।

(२) देवलवाड़ा–भांदकसे पश्चिम ६ मील। पहाड़ीके ऊपर प्राचीन मंदिर व चार स्तम्भ हैं। चरणपादुका है, गुफाएं हैं। नोट–इसमें जैन चिन्ह अवश्य होने चाहिये, जांचकी जरूरत है।

[१४] भंडारा जिला।

चौहद्दी यह है। उत्तरमें बालाघाट, सिवनी। पूर्वमें छेरीकदन, खैरागढ़ व नांदगांव राज्य। पश्चिममें नागपुर, दक्षिणमें चांदा।

यहां ३९६९ वर्ग मील स्थान है।

इतिहास—रावोली (जि० बालाघाट) में जो ताम्रपत्र मिला है उसमें शैल वंशके राजाका नाम है। राज्यधानी—श्री वर्द्धनपुर। रामटेकके पास जो नगरधन है वह नंदिवर्द्धनका प्राचीन नाम है। इसे शायद इस वंशके राजाने बसाया हो। सन् ९४० के वर्षके देवर्लीके राष्ट्रकूट ताम्रपत्रके अनुसार नगरधन एक प्रसिद्ध स्थान था। १०वीं शदीके अन्तमें भंडाराका एक भाग मालवाके परमार या पंवारके राज्यमें गर्भित था। सीताबल्दी (नागपुरमें) का पाषाण जो सन् ११०४-५ का है बताता है कि उनकी ओरसे नागपुरमें लक्ष्मणदेव अधिकारी थे।

यह बहुत सम्भव है कि नागपुर और भंडारामें जो वर्तमान परवार जाति है वह उन अधिकारियोंकी संतान हों, जिन्हें मालवाके राजाओंने यहां नियत किया हो।

It is possible that the existing Parwar caste of Nagpur and Bhandara are a relic of temporary officers in Name of Kings of Malwa.

(See Bhandara Gazetteer (1908).

पुरातत्व—यहां तिड्डोता-खैरामें पाषाणके स्तम्भ हैं। अमगांवके पास पद्मापुरमें प्राचीन इमारतें हैं। प्राचीन मंदिर अधिकतर हेमदपंतके अर्द्याल, चक्रवेती, करम्बी, पिंगलई व भंडारा नगरमें हैं।

(१) अदूयाल या अदूयार—भंडारासे दक्षिण १७ मील।

यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर प्राचीन है। यहां एक पुरुष प्रमाण कृष्ण पाषाणकी बहुत ही मनोज्ञ जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथजीकी एक मकानकी नींव खोदते हुए मिली है।

भंडाराका प्राचीन नाम 'भानार' है ऐसा रतनपुरके सन् ११०० के लेखसे प्रगट है। यह प्राचीन नगर था।

[१५] बालाघाट जिला।

चौहद्दी–उत्तरमें मंडल, पूर्वमें बिलासपुर, द्रुग। दक्षिणमें भंडारा। पश्चिममें सिवनी। यहां ३१३२ वर्ग मील स्थान है–

इतिहास–यहां लौंजी स्थानपर हैहय वंशी राजाओंने राज्य किया था, जिनकी उत्पत्ति संवत् ४१९ या सन् ई० ३९८ के जादोरायसे थी। यह गढ़ाका राजा था। सन् ६३४में १०वां राजा गोपालशाह था जब मांडला प्राप्त हुआ था।

पुरातत्त्व–यहां कटंगीके पास बीसापुरमें, संखर, भीमलाट, भीरीके पास सावरझिरीमें प्राचीन स्मारक हैं।

(१) भीरी–यहां कुछ जैन मूर्तियें हैं।

(२) बाराशिवनी–चुनई नदीपर–यहां परवारोंके सुन्दर जैन मंदिर हैं।

(३) जोगीमढ़ी–ग्राम धीपुर–बैहरसे उत्तर पश्चिम १९ व बालाघाटसे ४१ मील। यहां बौद्ध स्मारक हैं व मंदिर हैं। (शायद जैनके भी हों)

(४) धनमुआ–यहां बौद्ध शिल्पके प्राचीन मंदिर हैं।

(५) धीपुर–बैहरसे उत्तर पश्चिम १२ मील यहां प्राचीन मंदिर है।

(४) छत्तीसगढ़ विभाग।

[१६] द्रुग जिला।

चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें बिलासपुर, पूर्वमें रायपुर, दक्षिण कंकड राज्य व पश्चिममें खैरागढ नांदगांव राज्य, चादा।

यहां स्थान ३८०७ वर्गमील है।

नागपुरा—ता० द्रुग—यहांसे उत्तर पश्चिम ९ मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर हैं और यह कथा प्रसिद्ध है कि आरंग, देवबलोदा और नागपुरामें एक ही रातको ये मंदिर बनवाए गए थे।

---

[१७] रायपुर जिला।

चौहद्दी यह है कि दक्षिण तरफ महानदीका तट, उत्तर पश्चिम सतपुरा पहाड़ी, दक्षिण पश्चिम महानदी तक खंडित देश।

यहां ११७२४ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—यहां हैहयवंशी, जो कलचूरीके नामसे प्रसिद्ध थे, बहुतकाल राज्य करते रहे। इनका मूल राज्य चेदी देश (चंबल नदी उत्तरपश्चिमसे लेकर चित्रकूटके उतरपूर्व कर्वी नदीतक) में था। बुन्देलखंडके दक्षिणपूर्वकी ओर पहाड़ियोंपर इनका आधिपत्य था। रतनपुरमें—इनका शिलालेख सन् १११४ का मिला है। चेदी राजा कोकछके अठारह पुत्र थे। पहला त्रिपुराका राजा था। छोटेमेंसे एकने कलिंग राजाका पुत्रत्व पाया। अपना देश छोड़ गया, उस देशको दक्षिण कौशल देश कहा। यहां चेदी वंशने १०वीं सदीसे सन् १७४० तक राज्य किया।

पुरातत्व—यहा बहुत स्मारक हैं। उनमेंसे आरग, राजिन और सिरपुरके प्रसिद्ध हैं।

बढिया मंदिर सिहावा, चिपटी, देवकूट, धतरी तहसीलमें बलोद जिलेके उत्तर पूर्व खरारी और नरायणपुर, रायपुरनगरके पास देवबलोदा और कुनार पर हैं।

बौद्धोंके स्मारक द्रुग—राजिना, सिरपुर तथा तुरतुरिया पर हैं।

इस जिलेमें होकर एक बहुत पुरानी व प्रसिद्ध सडक गजम और कटकको जाती है। अब उसका पता भादकके पासमें खडा होकर लगता है। भादक पहले एक बडा नगर था।

(१) आरग—ता० रायपुर—यहासे २० मील। यह जैन मंदिरोंके लिये प्रसिद्ध है। यहाके जैन मंदिरोंके बाहर जैन देवी देवताओंके चित्र हैं। एक मंदिरके भीतर तीन दिशाल नग्न मूर्तिया कृष्ण पाषाणकी बहुत स्वच्छ कारीगरीकी हैं। यहा एक बडा नगर था व जैनियोंके बहुत मंदिर थे अब यह एक ही रह गया है। यह भी गिरजाता। यदि सर्वे करनेवाले लोहेकी सलाखोंसे रक्षित न करते। यह मंदिर देखने योग्य है। रायपुर गजटियर सन् १९०९ पृष्ठ ९१२ पर इस मंदिरका चित्र दिया है। इसको भाण्डदेवल कहते हैं। इस नगरके पश्चिममें एक सरोवरके तटपर एक छोटा मंदिर महामायाका है। यहा बहुतसी खंडित मूर्तिया रक्खी ह। एक खंडित पाषाण है, जिसमें केवल १८ लाइन लेखकी रह गई हैं। इस मंदिरके बाडेके भीतर तीन नग्न जैन मूर्तिया हैं जिनपर चिन्ह हाथी, शंख व गैंडेके हैं जो क्रमसे श्री अजितनाथ, श्री नेमिनाथ व श्री श्रेयांशनाथकी हैं। (सन् १९०९) से पूर्व करीब ६ या ७ वर्ष हुए

यहा एक रत्नकी जैन मूर्ति मिली थी जो ५०००) में दीगई थी। ये सब स्मारक प्रगट करते हैं कि यह आरङ्ग जैनधर्मका बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध स्थान था। यहां अग्रवाल बनिये रहते हैं। (आरङ्गके लेखोंके लिये देखो कनिंघम रिपोर्ट १७ सफा २१ यहा आठवीं शदीके दो ताम्रपत्रोंका वर्णन है) तथा देखो (बगलर रिपोर्ट जिल्द ७ सफा १६०)।

(२) बड़गांव–ता० महासमुद्र। यहांसे उत्तर पूर्व १०मील महानदीकी दाहनी तरफ। यहा अब भी रतनपुरके प्राचीन हैहय राजवशीके वशज रहते हैं।

(३) कुर्रा या कुंवर–रायपुरके उत्तर १४ मील। मधर स्टेशनसे ४ मील। दक्षिण तरफ मिचनी सरोवर तटपर अब चार छोटे मदिर है। पहले ग्राममें यहा बहुत बड़े २ मदिर थे उनमें मुख्य दो जैन मंदिर थे जिनको खूबचन्द जैन वणिकने कुल्हान नदीकी घाटी बनानेके लिये रीड कमिशनरको दे दिये थे। कई खुदे हुए पाषाण अब भी पड़े हुए हैं। कुछ जैन मूर्तिया भी रह गई थीं जो ग्रामके इधर उधर विराजित है। खूबचद स्वय कहते हैं कि उसने स्वय इस ग्राममें तीन तथा मलकाममें दो जैन मदिर गिरवा दिये थे।

(४) सिरपुर–(शिलालेखमें श्रीपुर) महानदीके दाहने तटपर। रायपुरसे पूर्व उत्तर ३७ मील। यह कभी एक बड़ा नगर था। यहा नौमी शताब्दीकी बनी हुई सुन्दर ईंटे पाई जाती हे।

(५) रायपुर–यहा दुधाधारी मठ है, जिस मदिरके आगनमें सिरपुरसे लाए हुए पाषाण खड पडे हैं। ये बहुत सुन्दर बने हे

और प्रमाणित करते है कि सिरपुरमें बौद्ध व जैनका बहुत ऐश्वर्य था।

(६) डूंगरगढ़—खैरागढ़ राज्यमें—रायपुरसे ९६ मील यह प्राचीन नगर कामंतीपुरका स्थान है। (कनिंघम रिपोर्ट १७वीं सफा २)

(७) मालक्रम—(देखो कनिंघम रि० ७ सफा १०८)। यहा प्राचीन सडकका विस्तारसे कथन है। यह सडक मादक या देवलवाड़ा (प्राचीन कुडलपुर) से देवटेक होकर पलासगढ, बंजारी (बड़ा बाजार लगता था) अम्बागढ़ चौकी, बालोद सोरार होती हुई गुरुरको गई है। यहा इसकी दो शाखायें हुई है। एक काकड व सिहावा होती हुई-अशोक स्तभ सहित जौगढके वडे किलेमेंसे होकर गजम (मदरास)की तरफ गई है। दूसरी शाखा धतरी, रायपुर होकर महानदीके किनारे २ उत्तर तरफ सवागेपुर, सिवरी नारायण आदि होकर कटक गई है। आर० सर्वे जिल्द १७ कनिंघम (१८८४) मे नीचेका हाल विदित हुआ—

कलचूरी वश—मने रीवासे उत्तरपश्चिम १० मील रायपुर और देहामें १२०० कलचूरियोंको पाया। इनके मुखियाओको ठाकुर कहते है। ये अपनेको कारचूली राजपूत कहते हैं, ऐसा ही सर्कारी कागजोमें लिखा जाता है। इनके मुख्य ठाकुरोंके नाम हैं। सासदूलसिंह, दलप्रतापसिंह व दरजीरसिंह। ये लोग कहते हैं कि ये हैहय वशज, सहस्रार्जुनके वशमें हैं। उनके वडे यहा रायपुर, रतनपुरसे आए थे। दक्षिणमें राजा नरसिंहदेव कलचूरी (सन् ११९३में) को कालनराधिपति कहते है। ऐसा ही इधरके चेदी वशज कलंचूरी राजाओंको कहते है। इससे सिद्ध है कि दक्षिण

और उत्तरीय कलचूरी एक ही वंशके हैं। सन् २४९ से लेकर १२वीं शताब्दी तक उन्होने दाहल या नर्मदा प्रांतमें राज्य किया। उनका चिन्ह सुवर्ण वृषभध्वज था। कर्णदेव राजाकी मोहरपर एक वृषभ है उसके पास चार भुजाकी देवी एक हाथीपर है। हर ओर उसपर अभिषेक होरहा है।

[१८] बिलासपुर जिला।

चौहद्दी यह है–दक्षिण रायपुर, पूर्वदक्षिण रायगढ़ व सारनगढ़ राज्य, उत्तरपश्चिम शतपुरा पहाडी।

यहां ८३४१ वर्गमील स्थान है।

इतिहास–यहांके शासक रतनपुर और रायपुरके हैहयवंशी राजपूत रहे हैं। जिनका सबसे प्रथम राजा मयूरध्वज हुआ है। इनके पास ३६ किले थे, इसीसे इस प्रांतको छत्तीसगढ कहते हैं। वीसवां राजा सन् १०००में सूरदेव व ४६वां राजा कल्याणशाह था जिसने १५३६से १५७३ तक राज्य किया।

पुरातत्व–विलासपुरसे उत्तर १६ मील रतनपुर–हैहयवंशका प्राचीन राज्यस्थान था। बहुत सुन्दर मंदिर जजगिर, पाली व पेंडरासे ९ मील धनपुरमें हैं।

(१) रतनपुर–इसको १०वीं शताब्दीमें रत्नदेवने वसाया था। इसके ध्वंश स्थान १५ वर्गमीलमें है। ३०० सरोवर हैं व अनेक मंदिर हैं। यहां महामायाका मंदिर है जिसके पास बहुतसी मूर्तियोंका ढेर है, उनमें अनेक जैन मूर्तियां हैं।

(२) अदभार–चन्दनपुर राज्यमें विलासपुरसे ४० मील

देवीके प्राचीन मदिरकी भूमिपर एक झोपडा है जिसमें एक जैन मूर्ति बैठे आसन है ।

(३) धनपुर—जमींदारी पेंडरा—यहासे उत्तर ९ मील । यह भी प्रसिद्ध व प्राचीन स्थान है । धनपुर और रतनपुर दोनोंको हैहय राजपूतोंने बसाया था । भीनर सरोवरसे उत्तर आध मील जाकर कई छोटे२ टीले हैं जो प्राचीन ध्वंश मकानोंसे ढके हुए हैं । इसके पश्चिम ॥ मीलपर ७ मदिरोंका समूह है । सरोवरके दूसरे तटपर चार बडे मदिरोंका समूह है जो देखनेमे जैनके मालूम होते हैं । इससे थोडी दूर एक संभवनाथके नामसे सरोवर है, जिसके तटपर बहुतसी जैन मूर्तियोंके खड है । ये सब मदिर कुछ पाषाणके कुछ ईंट और पाषाण दोनोंके हैं । ईंटे पुरानी रीतिकी बहुत बड़ी हैं जैसी सिरपुरमें मिलती हैं । कुछ प्राचीन वस्तुए पेन्डरामें लाई गई है । यहा ४ वर्गमील तक खड स्थान हैं । (कनिंघम रि० न० ७ पत्र २३७)

(४) खरोद—महानदीसे १ मील व अकलतरा सडकपर सिवरीनारायणसे २ मील । यहा प्राचीन मदिर है । सबसे बडा लक्ष्मेश्वरका है । इसमें चेदी स० ९३३ या सन् ११८१का पुराना शिलालेख है जिसमें कलिंगराजमे लेकर रत्नदेव तृ०तक हैहय राजाओंके पूर्ण नाम हैं ।

(५) मलतर या मलतार—ता० विलासपुर—यहासे दक्षिण पूर्व १६ मील । यह लीलागर नदीसे ८६० फुट ऊचा है प्राचीन कालमे प्रसिद्ध स्थान था । बहुतसे प्राचीन मदिर हैं जहा बड़ी२ नग्न जैन मूर्तियां हैं । उनमेंसे बहुतसी उठा ली गई है बहुत

इधर उधर पड़ी हैं। यहां कई शिलालेख मिले हैं, उनमेंसे एक रतनपुरके कलचूरी राजाओंके सम्बन्धका है जिसमें चेदी सं० ९१९ या ११६७ ई० है, नागपुर म्यूजियममें है।

(९) तुमन–ता० विलासपुर–यहांसे ६० मील। जमींदारी लाका रतनपुरसे ४९ मील। हैहय वंशी "जब छत्तीसगढ़ आए तब पहले यहीं वसे" ऐसा सन् १११४ के जजल्लदेव प्रथमके शिलालेखमें कहा है। उसके बड़े कलिंगराजने तुमनमें स्थान जमाया। रत्नदेवने जो जजल्लदेव देवका दादा था रतनपुरमें राज्यधानी स्थापित की थी।

(१९) संबलपुर जिला।

यहां पाटना राज्यमें कोन्धनके तोप वर्गनेमें तीतलगढ़ है। ग्रामसे एक मील करीब दूर धवलेश्वरका मंदिर है जिसके बाहर श्री पार्श्वनाथजीकी पाषाणकी मूर्ति है व एक बड़े कमरेके ध्वंश हैं। (देखो सी० पी० कौंजिन रिपोर्ट सन् १८९७ जिल्द १९)।

(२०) सरगुजा राज्य।

इस राज्यकी लखनपुर जमींदारीमें रामगढ़ पहाड़ी है। यह लखनपुरसे पश्चिम १२ मील है। "रामगढ़ पहाड़ी" यह २६०० फुट ऊंची है। बंगाल नागपुर रेलवेके खरसिया स्टेशनसे १०० मील है। यहां प्रतिवर्ष यात्री आते हैं। पहाड़के उत्तर भागके पश्चिमी चट्टानकी तरफ गुफाएं हैं। इनकी उत्तरी गुफाको सीताबेंगा और दक्षिणी गुफाको जोगीमारा कहते हैं।

यहां दो लेख अशोककी लिपिके समान ब्राह्मी लिपिमें देखे गए हैं। जो लेख सीतावेंगा गुफामें हैं वह सन् ई० से पहले तीसरी शताब्दीके किसी नाटक काव्यकी प्रशंसामें हैं।

जोगीमाराका लेख मागधी भाषाकी चार लाइनमें है इसमें देवदासी और किसी चित्रकारका नाम है।

इस गुफाकी चौखटपर चित्रकारी है जिसका वर्णन इस प्रकार है—

भाग (१)—एक वृक्षके नीचे एक पुरुषका चित्र है, बाईं तरफ अपसराएं व गंधर्व हैं। दाहनी तरफ एक जलूस हाथी सहित है।

भाग (२)—बहुतसे पुरुष, एक नक्र नक्श अनेक आकारके आभूषण हैं।

भाग (३)—इसका आधा भाग स्पष्ट नहीं है। उसमें पुष्प, प्रासाद, सवस्त्र मनुष्य हैं। इसके आगे एक वृक्ष है उसपर एक पक्षी है और एक पुरुष, बालक है। इसके चारों ओर बहुतसे मनुष्य हैं जो खड़े हैं, वस्त्र रहित हैं जैसा बालक वस्त्र रहित है। मस्तककी बाईं तरफ केशोंमें गांठ लगी है।

भाग (४)-एक पुरुष पद्मासनसे बैठा है जो स्पष्टपने नग्न है इसके पास तीन मनुष्य सवस्त्र खड़े हैं इसीके बगलमें ऐसे ही पद्मासन नग्न पुरुष हैं और तीन ऐसे ही सेवक हैं। इसके नीचे एक घर है जिसमें चैत्यकी खिड़की है सामने १ हाथी है और तीन पुरुष सवस्त्र खड़े हैं। इस समुदायके पास तीन घोड़ोंसे जुता हुआ एक रथ है, ऊपर छतरी है। दूसरा एक हाथी सेवक सहित है। इसके दूसरे आधेमें भी पहलेके समान पद्मासन पुरुष

(२१) अमरावती जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें एलिचपुर ता० वेतुल, पूर्वमें वर्धा नदी, दक्षिणमें येवतमाल, पश्चिममें अकोला।

यहां २७५९ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—वाकातक राजाओंने यहां राज्य किया, उनकी राज्यधानी चांदा जिलेमें भाट्कमें थी। अजन्टा गुफाओंकी १६वीं गुफामें एक लेख है जिसमें ७ वाकातक राजाओंके नाम आए हैं।

(१) भातकुली—अमरावतीसे १० मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर है जिसमें दि० जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी है जो गढ़ी ग्राममें भूमि खोदने मिली थी।

(२) जारद—ता० मोरसी—मकी नदीके तटपर एक जैन मंदिर है।

---

(२२) एलिचपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तर तापती नदी, वेतुल जिला, पूर्वमें अमरावती, दक्षिणमें पूर्ण नदी, पश्चिममें निमावर जिला। इसमें २६०५ वर्गमील स्थान है।

(१) एलिचपुर—नगर, यह कहावत प्रसिद्ध है कि इसको राजा एलने बसाया था, जो जैनी था। यह राजा एलिचपुर जिलेके किसी ग्रामसे सं० ११९५ (सन १०५८) में आया था। उस ग्रामको अब संजमनमर कहते हैं।

यह एक बलवान राजा था। उस समय यह जिला सोमेश्वर प्रथम चालुक्य वंशी महाराजका भाग था। यहां १९०१ के

चैत्यखिड़की सहित गृह तथा हाथी आदि चित्रित हैं। (देखो इंडिया आर्किलो सर्वे रिपोर्ट १९०३–४ सफा १२१)।

सं० नोट–इसमें किनहीं महापुरुषोंका दीक्षा लेनेका या भक्तिका दृश्य झलकता है। संभव है ये सब जैन धर्मसे सम्बन्ध रखते हों इसकी पूरी२ जांच होनी चाहिये।
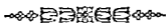
(५) बरार विभाग।

इतिहास–इसका प्राचीन नाम विदर्भ है। जहां कृष्णकी पट्टरानी रुक्मिणीका भाई रुक्मी राज्य करता था। विदर्भके राजा भीमकी कन्या दमयन्ती थी।

सन् ई०से तीन शताब्दी पहलेसे अन्ध्र लोगोंका राज्य था। इस अंध्र वंशका २३वां राजा विलिवायुकुर द्वि० (सन् ११३–१३८) था जिसने गुजरात और काठियावाड़के क्षत्रपोंसे युद्ध किया था। सन् २३६में यहां क्षत्रपोंने राज्य किया, फिर वाकातक वंशने फिर अभीरोंने फिर चालुक्योंने सन् ७५० तक राज्य किया। फिर सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटोंने। पश्चात् चालुक्योंने फिर देवगिरि यादवोंने फिर मुसल्मानोंका राज्य हुआ।

यहां १७७१० वर्ग मील स्थान है।

चौहद्दी यह है–उत्तरमें सतपुरा पहाड़ी और तापती नदी, पूर्वमें–मध्य प्रांत वर्धा, पश्चिममें बम्बई और हैदराबाद।

(२१) अमरावती जिला।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें एलिचपुर ता० वेतुल, पूर्वमें वर्धा नदी, दक्षिणमें येवतमाल, पश्चिममें अकोला।

यहां २७५९ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—वाकातक राजाओंने यहां राज्य किया, उनकी राज्यधानी चांदा जिलेमें भांदकमें थी। अजन्टा गुफाओंकी १६वीं गुफामें एक लेख है जिसमें ७ वाकातक राजाओंके नाम आए हैं।

(१) भातकुली—अमरावतीसे १० मील। यहां प्राचीन जैन मंदिर है जिसमें दि० जैन मूर्ति श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी है जो गढ़ी ग्राममें भूमि खोदने मिली थी।

(२) जारुद—ता० मोरसी—नकी नदीके तटपर एक जैन मंदिर है।

---

(२२) एलिचपुर जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तर तापती नदी, वेतुल जिला, पूर्वमें अमरावती, दक्षिणमें पूर्ण नदी, पश्चिममें निमावर जिला। इसमें २६०५ वर्गमील स्थान है।

(३) एलिचपुर—नगर, यह कहावत प्रसिद्ध है कि इसको राजा एलने बसाया था, जो जैनी था। यह राजा एलिचपुर जिलेके किसी ग्रामसे सं० १११५ (सन १०५८) में आया था। उस ग्रामको अब संजमनगर कहते हैं।

यह एक बलवान राजा था। उस समय यह जिला सोमेस्वर प्रथम चालुक्य वंशी महाराजका भाग था। यहां १९०१ के

अनुसार २३१ जैनी हैं। जैन मंदिर हैं। यहां होकर श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र (जो वैतुल जिलेमें निकट है) को यात्री जाते हैं।

(२३) येवतमाल या ऊन जिला।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें अमरावती पूर्वमें वर्धा, दक्षिणमे पेन गगा, पश्चिममें पूसड व मंगरूल ता०। यहां ३९१० वर्ग मील स्थान है।

(१) कलम–ता० येवतमाल। इस ग्राममें एक भूमिके नीचे श्री चिंतामणि पार्श्वनाथका प्राचीन जैन मंदिर है।

(२४) अकोला जिला।

इसकी चौहद्दी है। उत्तरमे मेलघाट पहाड़ी, पूर्वमें दर्यापुर, मुर्तजापुर, पश्चिममे चिखली, मलकापुर दक्षिणमें मगरूल वासिम। यहा २६७८ वर्ग मील स्थान है।

(१) नरनाल–ता० अकोला–एक पहाड़ी ३१६१ फुट ऊंची है। इसपर चार बहुत ही आश्चर्यकारी पाषाणके कुंड हैं। ऐसा समझा जाता है कि इनको मुसलमानोंके पूर्व जैनियोंने बनवाया था।

(२) पातूर–नगर ता० बालापुर। एक पहाड़ीके उत्तरमें दो गुफाएं हैं, जिनके भीतर एक खण्डित पद्मासन मूर्तिका भाग है और मूर्तियां नहीं है। तथा खम्भोंपर लेख हैं जो अभीतक (१९०९) तक पढ़े नहीं गए थे। ये गुफाएं शायद जैनोंकी हों। सं० नोट–जांच होनी चाहिये।

(२) सिरपुर—वासिमसे उत्तरपश्चिम १९ मील। यह जैनियोंका पवित्र स्थान है।

इम्पीरियल गजेटियर बरार सन् १९०९में नीचे प्रकार कथन है " यहां श्री अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर है जो दिगम्बर जैन जातिका है (b lo1gs to Digamber Jain Community) इसमें एक लेख सन १४०६ का है। इसमें अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ नाम लिखा है। यह मंदिर इस लेखसे १०० वर्ष पहले निर्मापित हुआ था। यह कहावत है कि एलिचपुरके येल्लुक राजाने नदी तटपर इस मूर्तिको प्राप्त किया था और वह अपने नगरको ले जारहा था, परन्तु उसे पीछा नहीं देखना चाहिये था। सिरपुरके स्थानपर उसने पीछा फिरकर देख लिया तब मूर्ति नहीं चल सकी। वहीं बहुत वर्षोतक यह मूर्ति वायुमें अधरी रही।

अकोला जिलेका गजेटियर जो सन् १९११ के अनुमान मुद्रित हुआ होगा उसमें सिरपुरके सम्बन्धमें जो विशेष बात है वह यह है। जैन मंदिरके द्वारके मार्गके दोनों तरफ नग्न जैन मूर्तियां हैं तथा चौखटके ऊपर एक योगी बैठे आसन जैन मूर्ति है। एलराजा जैनी था। इसको कोढ़का रोग था—वह एक सरोवरमें नहानेसे अच्छा हो गया। राजाको स्वप्न आया कि प्रतिमा है। वह प्रतिमा लेकर उसी नगर चला तब प्रतिमा सिरपुरके वहां न चल सकी तब राजाने उसीके ऊपर हेमदपंथी मंदिर बनवाया। पीछे दूसरा मंदिर बनवाया गया। यह मूर्ति एक कुनबी कुटुम्बके अधिकारमें रही आई है जिसको पातलकर कहते हैं। यह बात कही जाती है कि यह मूर्ति इस वर्तमान स्थितिमें बमाख सुदी ३ वि०

सं० ९९९को स्थापित हुई थी जिसको करीब १९०० वर्ष हुए।

"Descriptions of list of inscriptions in C. P. & Berar by R. B. Hiralal B. A. 1916"—
नामकी पुस्तकमें सफा १३९ में इस भांति लिखा है "यह अंतरीक्ष पार्श्वनाथका मंदिर दिगम्बर जैन समाजका है। संस्कृतमें एक बड़ा शिलालेख सन् १४०६ का है परन्तु मि० कौशिनसाहब (Cousin's progress report 1902 P. 3) कहते हैं कि यह मंदिर कमसे कम १०० वर्ष पहले बना है। लेखमें अन्तरीक्ष पार्श्वनाथका तथा मंदिरके बनानेवाले **जगसिंहका** नाम आया है।"

सं० नोट—ऊपर तीनों लेख पढ़नेसे विदित होता है कि १९०० वर्ष हुए तब भौंरेमें मूर्ति स्थापित की गई थी तथा ऊपर दूसरा मंदिर सन् १४०६में बना है।

(४) **तिलहारा**—तालुका अकोला, यहांसे पश्चिम १७ मील। यहां श्वेताम्बर जैन मंदिर है जो हालमें बना है। मूर्ति सुवर्णकी पद्मप्रभुजीकी है।

---

(२५) बुलडाना जिला।

चौहद्दी यह है कि—उत्तरमें पूर्णनदी, पूर्वमें अकोला, दक्षिणमें निजाम, पश्चिममें निजाम और खानदेश।

यहां २८०६ वर्गमील स्थान है।

(१) **मेहकर**—बुलडानासे दक्षिणपश्चिम ४२ मील। यहां बालाजीका एक नवीन मंदिर है, उसमें एक खंडित जैन मूर्ति है उसपर छोटासा लेख है। संवत १२७२ है। इस मूर्तिको आशाधरकी स्त्री पद्मावतीने प्रतिष्ठित कराया था।

(२) सातगांव—बुलडानासे पश्चिम दक्षिण १० मील। खास सड़कपर एक विष्णु मंदिरके उत्तर एक प्राचीन जैन मंदिरके चार खंभे अवशेष हैं तथा दो जैन मूर्तियें हैं। एक श्री पार्श्वनाथजीकी है उसपर शाका ११७३ या सन् १२९१ है। यह दिगम्बर है। इसके उत्तर पश्चिममें थोड़ी दूर एक पीपलके वृक्षके नीचे बहुतसी प्राचीन जैन मूर्तियोंके खंड हैं। तथा एक चबूतरेपर एक खंडित देवीकी मूर्ति है। मस्तकपर फूलोंकी माला बनी है। इसके ऊपर पद्मासन जैन प्रतिमा है। इसलिये यह जैनियोंकी देवीकी मूर्ति है। ऊपर जिस पार्श्वनाथकी मूर्तिका लेख शाका ११७३का दिया है वहांपर यह भी लेख है कि इस मूर्तिकी प्रतिष्ठा नेलुगु जैन कंयतय्या सेठीके पुत्र जैनतैय्याने कराई।

दूसरा भाग—

मध्य भारत-प्राचीन जैन स्मारक।

Imperial Gazetteer of Central India Cal 1908.
इम्पीरियल गजेटियर मध्य भारत कलकत्ता सन् १९०८के अनुसार तथा भिन्न२ गजेटियरोंके आधारसे नीचेका वर्णन लिखा जाता है—

इस मध्य भारतकी चौहद्दी इस भांति है—उत्तर पूर्वमें संयुक्त प्रदेश, पूर्वमें मध्यप्रांत, दक्षिण पश्चिममें खानदेश, रेवाकांठा, पचमुहाल ।

यहां ७८७७२ वर्गमील स्थान है ।

इतिहास—गौतमबुद्धके समयमें बौद्धमतकी पुस्तकोंके आधारसे भारतवर्षमें सोलह मुख्य राज्य थे। उनमें अवन्ती—राजधानी उज्जैन व वत्सदेश—राज्यधानी कौसाम्बी भी थे। उस समय उत्तरसे दक्षिणतक अर्थात् कौशल देशके श्रावस्तीसे दक्षिणमें पैथन तक पुरानी सड़क थी। बीचमें उज्जैन और महिष्मती (महेश्वर) में ठहरनेके स्थान थे। इस मध्य भारतपर जैनधर्मधारी महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य व उसके वंशजोंने सन् ई०से ३२१ वर्ष पूर्वसे २३१ वर्ष पूर्वतक राज्य किया। चन्द्रगुप्तके पीछे उसके पुत्र बिन्दुसारने (२९७ से २७२ पूर्वतक) फिर महाराज अशोकने राज्य किया। अशोकने भिलसाके पास सांचीमें और नागोदके भीतर भारहुतमें स्तूप स्थापित कराए। मौर्योंके पीछे सुंगवंशने राज्य किया, उसकी राज्यधानी पाटलीपुत्र थी। इसी वंशमें अग्निमित्र राजा हुआ है जो मालविकाग्निमित्र नाटकका वीर योद्धा था। इसकी राज्यधानी विदिशा (भिलसा) थी।

सन् ई०के दूसरी शताब्दीपूर्व मध्य एसियाकी बलवान शक जातिका एक भाग मालवामें घुस पड़ा और शक राज वंशावली स्थापित की जिनको पश्चिमी क्षत्रपोंके नामसे जाना जाता है। इन्होंने ३९० सन् ई० तक राज्य किया।

इन शक लोगोंको महाराज चंद्रगुप्त द्वि० (३७५–४१३) ने नष्ट किया। भिलसाके पास उदयगिरि है वहाके शिलालेखसे प्रगट है कि यह चंद्रगुप्त सन् ३८८ और ४०१ के मध्यमें मालवामें घुस पडा और क्षत्रपोंको नष्ट किया। गुप्तोंका राज्य भी अनुमान सन् ४८० के समाप्त हो गया।

तब हून लोगोंने ४९०से ५३३ तक राज्य किया। तोरामन हून ग्वालियर और मालवामें आया और उन प्रदेशोंको लेलिया। ग्वालियर, एरान और मन्दसोरके शिलालेखोंमे प्रगट है कि तोरामन और उसके पुत्र मिहिरकुलने पूर्वीय मालवाको ४० वर्षके अनुमान अपने अधिकारमें रक्खा। स्थानीय राजकुमार उनके नीचे शासन करते रहे। सन् ५२८में मगधके नरसिंहगुप्त बालादित्य और मंदसोरके राजा यशोधर्मनने मिहिरकुलको परास्त किया। फिर थानेश्वर (पंजाब) के राजा प्रभाकरवर्द्धनके पुत्र हर्षवर्द्धन (६०६–६४८) ने जिसकी राज्यधानी कन्नौज थी उत्तरभारतको लेलिया। हर्षवर्द्धनके मरणके पीछे गुर्जर, मालवा, अमीर तथा दूसरे वंश स्वतंत्र हो गए। छठी शताब्दीमे कलचूरी वशंजोंने नर्वदाघाटीको लेलिया जिसमें बुन्देलखंड और बघेलखंड शामिल थे। आठवींसे १० वीं शताब्दीतक धारके परमारोंने, ग्वालियरके तोमरोंने, नर्वरके कछवाहोंने, कन्नौजके राठौरोंने तथा कालिंजर और महोबाके

चंदेलोने राज्य किया। ये सब प्रसिद्ध ऐतिहासिक वश हैं।

गुर्जर—ये लोग राजपूताना और पश्चिम तटकी भूमि गुजरात पर बसते थे। इन्होने मध्य भारतको ८ वीं शताब्दीमे ले लिया। इनकी दो शाखाएं थीं उनमेंसे परिहार राजपूतोने बुन्देलखण्ड पर और परमार राजपूतोने मालवा पर अधिकार किया।

सन् ८८९ मे भोज प्रथमकी मृत्युके पीछे गुर्जरोंकी शक्ति क्षीण हो गई क्योंकि बुन्देलखण्डमें चन्देलवंशी नर्वदाके पास कलचूरी वंशी तथा राष्ट्रकूटोंका प्रभाव बढ़ गया। सन् ९१९ मे मालवाके परमार वंशने इन लोगोकी सत्ता हटा दी। तब मध्यभारतका शासन इस तरह बढ़ गया कि परमार लोग मालवामें जमे। उनकी राज्यधानी उज्जैन और धार हुई; परिहार लोग ग्वालियरमे डट गए; चंदेले बुन्देलखण्डमें जमे—इन्होने अपनी राज्यधानी महोबा और कालिंजरको बनाया। चेदी या कलचूरी वंशज रीवा राज्यमें राज्य करते रहे। जब महमूद गज़नीने भारत पर हमला किया तब बुन्देलखंडका चन्देलराजा धंगा और लाहौरके जयपालने मिलकर लम्घानपर सन् ९८८में सुबुक्तगीनके साथ युद्ध किया था। चौथे हमलेमें महमूदका सामना पेशावरमें लाहोरके आनन्दपालने, ग्वालियरके तोंवरराजाने, चन्देलमहाराज गंदा (सन् ९९९-१०२९) ने मालवाके परमार राजा (यातो भोज हो या उसका पिता सिंधुराज हो) ने युद्ध किया था।

महमूदके १०३०में मरणके पीछे मुसल्मानोने १२वीं शताब्दीतक मध्य भारतकी तरफ मुख नहीं किया। सन् १२०६ से १५२६ तक पठान फिर मुगल बादशाहोने अधिकार रक्खा। सन्

१७४३ मे मरहटोंने अपना अधिकार जमाया। अहल्याबाईने हुल्कर राज्यपर मन १७६७से १७९५ तक राज्य किया। इसकी न्यायप्रियता व योग्यता भारतमें उदाहरणरूप है।

पुरातत्त्व–प्राचीन स्मारकके प्रसिद्ध स्थान नीचे लिखे स्थानोंपर हैं–(१) प्राचीन उज्जैन, (२) वेशनगर, (३) धार, (४) मन्दसोर, (५) नवर, (६) सारंगपुर, (७) अजयगढ़, (८) अमरकंटक, (९) बाघ, (१०) बरो, (११) बडवानी, (१२) भोजपुर, (१३) चन्देरी, (१४) दतिया, (१५) धमनार, (१६) ग्वालियर, (१७) ग्यासपुर, (१८) खजराहा, (१९) मांडू, (२०) नागोद, (२१) नरोद, (२२) ओर्छा, (२३) पथारी, (२४) रीवा, (२५) सांची, (२६) मोनागिरि, (२७) उदयगिरि, (२८) उदयपुर।

प्राचीन सिक्के पहली शताब्दीके साची और भरहुतके स्तूपोंके समयके मिलते हैं। गुप्त समयके दो लेख मिलते हैं–एक गुप्त संवत ८२ या सन् ४०१ का; दूसरा सबसे पिछला गुप्त सं० ३०२ या सन् ६४० का रतलाममें। मंदसोरका शिलालेख जो मालवाके वि० सं० ४९३ या सन् ४३६का है बहुत उपयोगी है। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि विक्रम संवतके साथ मालवाकी शक्तिका क्या प्रभुत्व है? मध्यप्रांतमें चारो तरफ सन् ई०से ३०० वर्ष पहलेसे आगतकके अनेक शिल्प पाए जाते हैं। सन् ई०से ३०० वर्ष पहले बौद्धोंके स्मारक भिलसाके चारों तरफ तथा सबसे बढ़िया सांची स्तूपमें पाए जाते हैं। नागोदमें भरहुतपर जो स्तूप है वह तीसरी शताब्दी पूर्वका है।

जैनियोंके ढंगके बहुतसे मकान व मंदिर थे जो अब लुप्त

हो गए हैं। उनमें प्रसिद्ध ग्यासपुरके मंदिर हैं, प्राचीन मंदिर खजराहाके हैं तथा उदयपुरके मंदिर हैं। जैनियोंके सोलहवीं शताब्दीके मंदिर ओर्छा, सोनागिरि (दतिया) में हैं।

पूर्वी हिन्दी भाषा–इस मध्यप्रांतमें यह भाषा अधिक बोली जाती है। यह उसी प्राचीन भाषाका अपभ्रंश है जिस भाषामें सन् ई०से ६०० वर्ष पूर्व **श्री महावीर** भगवानके तत्व वर्णन किये जाते थे। यही भाषा बादमें **दिगम्बर जैनियोंके** मुख्य शास्त्रोंकी भाषा होगई।

इस हिन्दीका अवधी भाग मध्यभारतमें व बघेली भाग बघेलखंडमें पाया जाता है। बघेलीमें बहुत बड़ा साहित्य है जिसकी रक्षा रीवाके राजालोग सदा करते आए हैं। बघेली हिन्दी बोलनेवाले १४०१०१३ हैं।

जैन धर्म–ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दीमें मध्यभारतके उच्च वर्णोंमें जैनधर्म मुख्यतासे फैला हुआ था। उनके मंदिर व मूर्तियोंके शेष ध्वंश इस प्रांतमें सब तरफ पाए जाते हैं। अभी भी प्राचीन मंदिर खजराहामें, सोनागिरिमें है तथा कई यात्राके स्थान हैं जैसे बावनगजाकी मूर्ति बड़वानीमें। सन् १९०१में यहां दिगम्बर जैनी ९४६०९ व श्वे० जैनी ३९६७९ थे।

मध्यमें भारतके विभाग।

(१) बघेलखंड–इस बघेलखंडमें रीवा, कन्देर, कैमूर, खुंमना व सिरबू चट्टानें शामिल हैं। प्राचीन बौद्ध पुस्तकोंमें व महाभारत तथा पुराणोंमें इस बघेलखंडका सम्बन्ध हैहय या कलचूरी या चेदी

जातिसे बताते हैं। इनका संवत् सन् २४९ ई०से शुरू होता है। उनका मुख्य स्थान नर्वदा नदीपर महिस्मती या महेश्वरपर था। यही उनकी राज्यधानी थी।

छट्टी शताब्दीमें ये कलचूरी लोग प्रसिद्ध शासक हो गए, क्योंकि बादामी (बीजापुर) का राजा मंगलिसी लिखता है कि उसने चेदीके कलचूरी राजा बुद्धवर्मनपर विजय प्राप्त की थी। वृहत् संहिता नामा ग्रंथमें चेदी लोगोंको प्रसिद्ध मध्यप्रांतकी जाति बताया है। सातवी शताब्दीके अंतमें कलचूरी लोगोंने बघेलखंडका सर्व प्रदेश लेलिया था तब उनका मुख्य स्थान कालिंजर पर था। इस समय बुन्देलखंडमें चंदेला, मालवामें परमार, कन्नोजमें राष्ट्रकूट, व गुजरात और दक्षिण भारतपर चालुक्य राज्य करते थे। कलचूरी लेख है कि उन राजाओने चंदेलराजा यशोवर्मा (सन् ९२९–९५) से युद्ध किया था। इस यशोवर्माने कालिंजर लेलिया। अब भी कलचूरी लोग १२वी शताब्दीतक राज्य करते रहे।

यहां नागोदपर भरहुत स्तूप सन् ई०से तीसरी शताब्दी पूर्वका है।

(२) बुन्देलखंड–इसमें जिला जालोन, झांसी, हमीरपुर और बांदा गर्भित हैं। ११६०० वर्गमील स्थान है।

इसका इतिहास यह है–पहले गोहरवारोंने, फिर परिहारोंने, फिर चंदेलोंने राज्य किया। जिस चंदेलवंशका स्थापक नानक शायद नौमी शताब्दीके प्रथम अर्धभागमें हुआ है। चंदेलोंका चौथा राजा राहिल (सन् ८९०–९१०) था। इसने महोबामें रोहिल्यसागर नामका सरोवर तथा एक मंदिर बनवाया जो अब नष्ट होगया है।

इनका सबसे पहला लेख राजा घांगा (९५०—९९) का है जो बहुत बलवान राजा था। इसने महमूदके विरुद्ध सन् ९७८में लाहोरके जयपालको मदद दी थी।

फिर राजा गादा या नंदराय (सन् ९९९—१०२५) ने भी जयपालको महमूदके विरुद्ध मदद दी थी ऐसा मुसल्मान इतिहासकार कहते हैं।

चन्देलोंका ग्यारहवां राजा कीर्तिवर्मा प्रथम था उसका पुत्र सल्लक्षण था, जिसने चन्दी व दक्षिण कौशलके राजा कर्णको जीत लिया था। इसने महोबामें कीरतिसागर नामका सरोवर तथा अजयगढमें कुछ मकान वनवाए। पंद्रहवा राजा मदनवर्मा (११३०—११६५) बडा कठोर राजा था। इसने चेदी राज्यको जीता तथा यह कहा जाता है कि इसने गुजरातको भी विजय किया था।

इसके पीछे परमार्दी देव या वरमाल (११६५-१२०३) हुआ। इसके राज्यमें दिहलीके पृथ्वीराजने सन् ११८२ में बुन्देलखण्डको जीत लिया। कुतबुद्दीनने सन् १२०३ में देशको ध्वंश किया।

चन्देलोंका राज्य इस हदमें था कि पश्चिममें धसान, उत्तरमें जमना नदी, पूर्वमें विन्ध्यापहाडी, पश्चिममें वेतवा, कालिंजर, खजराहा, महोना और अजयगढ तक। शिलालेखोंमें इनके देशको जेजक भुक्ति या जिझोती कहते हैं इसीसे जिझोती ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति है।

बुन्देला लोग—यह कहा जाता है कि इनकी उत्पत्ति पंचम या गहर्वासे हैं। चौदहवीं शताब्दीमें इनका अधिकार जमा हुआ था। ये मऊ, कालिंजर व काल्पीमें बसे। १५०७ ई० में वाबर बाद-

शाहने रुद्रप्रतापको गवर्नर नियत किया था। ओरछाके वीर सिंहरावने झांसीके किलेको बनवाना शुरू किया था। औरङ्गजेबके समयमें महोवेमें चम्पतराय राज्य करते थे, इन्हींका पुत्र छत्रसाल सन् १८०७ में बुन्देलोंका अधिपति था और वर्तमान वृटिश बुन्देलखण्डपर राज्य करता था।

छत्रसाल सन् १७३४में मर गया, तब उसने अपने राज्यका तिहाई भाग मरहटोंको दे दिया।

(३) गोंदवाना प्रदेश—यह मध्यप्रदेश और मध्यभारतमें शामिल था। पूर्वमें रतनपुर, छोटानागपुर; पश्चिममें मालवा; उत्तरमें पन्ना; दक्षिणमें दक्षिण। गोंद लोग बहुत प्रसिद्ध द्राविड़ जाति थी। तीन या चार गोंद वंशोंने यहां १४ वींसे १८ वीं शताब्दी तक राज्य किया।

(४) मालवा—इसमें ७६३० वर्गमील स्थान है। यह बहुत उपजाऊ है। दक्षिणमें विंध्यपर्वत, पूर्वमें विन्ध्य पर्वत, उत्तरमें भूपालसे चन्देरीतक, पश्चिममें अंझोरासे चित्तोड़तक, उत्तरमें मुकुन्दवार पहाड़ी है।

मालवा छः भागोंमें विभक्त हैं—

(१) कौन्तेल—मुख्य नगर मंदसोर मध्यमें
(२) बागड़— ,, ,, बांसवाड़ा
(३) राढ़—झाबुआ और जोवतराज्य
(४) सोंदवाडा—मध्यमें महिदपुर
(५) उमरवाड़ा—राजगढ़ नरसिंहगढ़ राज्य हैं
(६) खीचीवाड़ा—यह खीची चौहानका है, राघोगढ़ राज्य है।

मालवाके विक्रम संवत सन् ५७ पूर्वके लेख राजपूतानासे प्राप्त हुए हैं। केवल एक लेख मंदसोरमें संवत ४९३ या सन् ४३६ का प्राप्त हुआ है।

बौद्धके समयमें जो भारतमें १६ प्रसिद्ध शक्तियें थीं उनमें अवंति देश भी एक था। उज्जैन बड़ी प्रसिद्ध जगह थी। दक्षिणसे नेपालके मार्गमें उज्जैन पड़ता था। बीचमें महिष्मती तथा विदिशा या भिलसा भी पड़ता था।

पश्चिमी क्षत्रप–सन् ई० के प्रारम्भमें इन लोगोंने मालवा पर राज्य किया था। मुख्य राजा चास्थाना और रुद्रदमन (सन् १५०) थे। फिर गुप्तों तथा सर्कदहूनोंने राज्य किया। चंद्रगुप्त द्वि०ने सन् ३९०में मालवा लिया। हूनोंमें तुरामन और मिहिर कुल प्रसिद्ध थे, करीब ५०० ई० तक राज्य किया। करीब ६०० सन् ई० के नरसिंह गुप्त बालादित्य मगधवासी और मंदसोरके राजा यशोधर्मनने राज्य किया। सन् ६०६से ६४८ तक प्रसिद्ध कन्नौज राजा हर्षवर्धनने मालवा पर शासन किया। ८०० से १२०० ई० तक मालवा पर परमार राजपूतोंने राज्य किया जिनकी राज्यधानी पहले उज्जैन फिर धारपर रही। १० वीं से १३ वीं शदीतक १९ राजा हुए हैं उनमें बहुत प्रसिद्ध राजा भोज (सन् १०१०से १०५३) हुए हैं। यह बड़ा विद्वान और वीर था। अन्तमें इस राजाको अहिलवाड़ाके चालुक्योंने और त्रिपुरीके कलचूरियोंने राज्यसे भगा दिया। १२३८के अनुमान मुसल्मानोंका राज्य होगया।

(१) ग्वालियर रेजिडेन्सी।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें चम्बल नदी, दक्षिणमें भिलसा, पूर्वमें बुन्देलखण्ड और झासी, पश्चिममें राजपूताना। इसमें ग्वालियर राज्य, राघोगढ़, खरआ, धानी, पागेन, गढ़ उमरी, भदौरा छोटे राज्य शामिल हैं।

ग्वालियर राज्यमें १७२० वर्गमील उत्तर व ८०२१ वर्ग मील दक्षिणमें कुल २६०४१ वर्गमील स्थान है।

पुरातत्त्व—प्राचीन उज्जैनको खुदवानेकी जरूरत है।

सं० नोट—वास्तवमें इस पुराने उज्जैनमें जैन प्राचीनताके बहुत चिह्न मिलेंगे।

पुराने स्मारक भिलसा, बीसनगर व उदयगिरिमें जहा प्रथम शताब्दीके बौद्ध व ४ या ९ शता०के हिन्दू स्मारक देखे जाते हैं। मधकालीन हिन्दू और जैनकी शिल्पकला बरो, ग्वालियर, ग्यारसपुर नगेद व उदयपुरमें है। यह शिल्प १० से १३ शताब्दी तकका है, परन्तु कुटवार या कामतलपुरमें (नरावादसे उत्तरपूर्व १० मील) तथा पारोली और परॉवली (ग्वालियरसे उत्तर ९ मील) में ९ वी या छठी शताब्दी व उसके पहलेके भी स्मारक हैं। तेराहीके पास रानापुरमें एक स्तुप है।

तेराही, कदवाहा, शिवपुरके पास दूबकुन्डमें प्राचीन स्थान है। ग्वालियरसे उत्तर २५ मील सुहानियोंमें है तथा उज्जैन नगरसे उत्तर ९ मील *कालियादेहमें प्राचीन स्थान हैं। यह सप्रा* नदीकी घाटी है। यहा बहुत प्राचीन स्थान है।

मुख्य २ स्थान ।

(१) वाघ—जि० अमझेरा। मनावरके पास ग्रामके पश्चिम ४ मील बौद्ध गुफाएं हैं जिनको पांच पांडव कहते हैं। यह अजंटाकी गुफाओंके समान ६ तथा ७ शताब्दीकी हैं।

(२) बरो—(बड़नगर) जि० अमझेरा। यह ग्वालियर राज्यमें बहुत प्राचीन स्थान है। अब छोटा नगर है, परन्तु इसके पास प्राचीन नगरके ध्वंश शेष हैं जो पथारी नगर तक चले गए हैं। यह ग्राम गयानाथ पहाड़ीकी तलहटीमें है। यह पहाड़ी विंध्यका भाग है जो भिलसाके उत्तर तक आती है। सरोवरोके निकट हिंदू तथा जैनोंके मंदिर हैं। एक विशाल जैन मंदिर है जिसको जैन मंदिर कहते हैं इसमें सोलह वेदियां हैं जिसमें जेन मूर्तियां हैं। मध्यमें किसी मुनिका समाधि स्थान है। पन्नाके राजा छत्रसालने १७ वी शताब्दीमें इस मंदिरको नष्ट किया।

(३) भिलसा नगर—इसके निकट बौद्धोके ६० स्तूप सन् ई० से तीसरी शताब्दी पूर्वसे १०० सन् ई० तक हैं। प्रसिद्ध स्तूप-सांची, अन्धेरी, भोजपुर, सातधारा व सोनारी (भोपाल)में हैं।

(४) बीशनगर—भिलसाके उत्तर पश्चिम प्राचीन नगर है। उसको पालीमें चैत्यगिरि लिखा है। यहां बौद्धोंके स्मारक हैं। यहां उज्जैनके क्षत्रपोंके, नरवरके, नागोंके व गुप्तोंके सिक्के पाए गए हैं।

जैन शिला लेखोंमें इसको भद्दलपुर कहा है व १०वें तीर्थंकर सीतलनाथका जन्म स्थान माना गया है। वार्षिक मेला होता है। यह नगर सुंग राजा अग्निमित्रका राज्य स्थान था।

(५) चंदेरी–जिला नरवर–नगर व प्राचीन किला। यहांसे ९ मील दूर पुरानी चन्देरी है जो अब ध्वंश स्थानोंका ढेर है। चन्देलोंने इसे बसाया था। इसका सबसे पहला कथन अलबेरूनी (सन् १०३०) ने किया है। यह सुन्दर तनजेबोंके बनानेमें प्रसिद्ध था (कनिंघम रिपोर्ट नं० २ पत्र, ४०२)। चन्देरीके किलेके पास पहाडीपर पुरानी कुछ जैन मूर्तियां अंकित हैं। पुराना किला नगरसे २३० फुट ऊंचा है।

कनिंघम रिपोर्ट नं० २में है कि पुरानी चंदेरीको बूढ़ी चंदेरी कहते हैं। यहां चन्देल राजाओंने सन् ७००से ११८४ तक राज्य किया था। यह ३०० फुट ऊंची पहाड़ीपर बसा है। यहां महल है उसके दक्षिण दो ध्वंश मंदिरोंके शेष हैं। इनमेंसे एकमें एक पाषाण है जिसमें १०वीं या ११वीं शताब्दीके अक्षर हैं। इसकी थोड़ी दूरपर छोटा कमरा है जिसमें २१ जैन मूर्तियें हैं उनमें १९ कायोत्सर्ग व दो पद्मासन हैं। ये दोनो सुपार्श्व तथा चन्द्रप्रभुकी हैं। नई चन्देरीकी पहाडीके नीचे एक सरोवर है जिसका नाम कीरतसागर है।

(६) ग्वालियरका किला—प्राचीन नगरके ऊपर ३०० फुट ऊँची पहाड़ी है उसपर किला है। यह किला छठी शताब्दीसे भारतके इतिहासमें प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस किलेको सूरजसेनने स्थापित किया था। यहां एक साधु ग्वालिय रहता था उसने सूरजसेनका कष्ट दूर किया था। यह ग्वालियर उसी साधुके नामसे प्रसिद्ध है। शिलालेखमें इसको गोपगिरि या गोपाचल लिखा है। किलेमें राना तोरामन और मिहिरकुलका शिलालेख

पाया गया है जिन्होंने गुप्तोंके राज्यको छठी शताब्दीमें नष्ट किया था।

नौमी शताब्दीमें यह किला कन्नौजके राजा भोजके आधीन था। इस राजाका लेख सन् ८७० का चतुर्भुज नामके पाषाण मंदिरमें मिला है। कछवाहा राजपूतोंने १० वीं शताब्दीके मध्यसे सन ११२८ तक राज्य किया। फिर परिहारोंने इसपर अधिकार किया। सन् ११९६में मुहम्मद गोरीने हमला किया और किलेको ले लिया। सन् १२१० में परिहारोंने फिर ले लिया और उसे सन् १२३२ तक अपने आधीन रक्खा। फिर मुसल्मानोंने सन १३९८ तक अधिकारमें रक्खा, पीछे फिर तोमर राजपूतोंने सन १५१८ तक अधिकारमें लिया। पीछे इब्राहीम लोधीने कब्जा किया। तोमर राजा मानसिंह (सन १४८६–१५१७) के राज्यमें यह ग्वालियर बहुत प्रभुत्वपर था। इसने पहाडीकी पूर्व ओर एक सुन्दर महल बनवाया है। इसकी प्यारी रानी गूजरी मृगनेना थी। तब यह ग्वालियर गान विद्याका केन्द्र था। आईन अकबरीमें जिन ३६ गवैयों और वादित्रोंका वर्णन है उनमेंसे १५ ने ग्वालियरमें शिक्षा पाई थी इनहीमें प्रसिद्ध तानसेन गवैया था।

सन् १५२६ में किलेको बाबरने ले लिया। लक्ष्मण दरवाजेके पास चतुर्भुजका मंदिर पहाडमें कटा हुआ ९ मी शताब्दीका है इसीमें कन्नौजके राजा भोजका लेख सन् ८७६ का है। राजाको गोपगिरि स्वामी कहा है।

जैन मंदिर और मूर्तियें–(कनिंघम रिपोर्ट नं० २) हाथी दरवाजा और सास बहू मंदिरोंके मध्यमें एक जैन मंदिर है जिसको

मसजिदमें बदला गया है। खुदाई करनेपर एक नीचेको कमरा मिला है जिसमें कई नग्न जैन मूर्तियें है और एक लेख सवत ११६९ या सन् ११०८ का है। ये मूर्तियें कायोत्सर्ग तथा पद्मासन दोनो प्रकारकी है। उत्तरकी वेदीमें सात फण सहित श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन मूर्ति है। दक्षिणी भीतपर पाच वेदिया है जिनमे दो खाली है। उत्तरकी वेदीमें दो नग्न कायोत्सर्ग मूर्तिया है। मध्यमें ६ फुट ८इच लम्बा आसन एक मूर्तिका है। दक्षिण वेदीमें दो नग्न पद्मासन मूर्तिया है।

उरवाही द्वारपर जैन मूर्तियें–उरवाही घाटीकी दक्षिण ओर २२ नग्न मूर्तिया है उनमे लेख सवत १४९७मे १५१० अर्थात् सन् १४४० और १४५३के मध्यके तोमरवशी राज्यकालके है। इनमे न० १७–२० व २२ मुख्य है। न० १७मे श्री आदिनाथकी मूर्ति है, वृषभ चिन्ह है, इसपर बड़ा लेख न० १८ सवत १४९७ या सन् १४४० का है–डूगरसिंहदेवके राज्यमे स्थापित। सबमे बडी मूर्ति न० २० है जो बाबरके कथन अनुसार ४० फुट है, परन्तु वास्तवमें ५७ फुट ऊची है। पग ९ फुट लम्बा है उससे तीनगुणी लम्बाई है। इस मूर्तिके सामने एक स्तम्भ है जिसके चारो तरफ मूर्तिये है। न० २२ श्री नेमिनाथजीकी मूर्ति ३० फुट ऊची है।

दक्षिण पश्चिम समूह–उरवाहीकी भीतके बाहर एक सभा तालके नीचे ५ मूर्तियें है। न० २–एक सोई हुई स्त्रीकी मूर्ति ८ फुट लम्बी है जिसका मस्तक दक्षिणको व मुख पश्चिमको है।

स० नोट–शायद यह श्री महावीरस्वामीकी माता त्रिशलाकी मूर्ति हो। न० ३–एक मूर्ति है जिसमें स्त्रीपुरुष बैठे है, बच्चा गोदमें है। कनिंघम कहते है कि मैं समझता हू कि यह श्री महा-

वीरस्वामी राजा सिद्धार्थ और त्रिशला सहित है।

उत्तर पश्चिमी समूह—दोंधा द्वारके उत्तरमे श्री आदिनाथकी मूर्ति है। लेख स० १५२७ या सन् १४७० का है।

दक्षिण पूर्वी समूह—गगोलातलावके नीचे यह सबसे बडा और प्रसिद्ध समूह है। यहा १८ मूर्तियें २० फुटसे ३० फुट ऊची हैं तथा बहुतसी ८ फुटसे १५ फुट उची हैं। ऊपरसे लेकर आध मीलकी लम्बाईमें फुलपहाडीपर ये मूर्तियें हैं। इनका वर्णन नीचे प्रकार है—

गु नं०	नाम तीर्थंकर	आसन	ऊंचाई	चिह्न	सम्वत्
१	अप्रगट		३० फुट		
२	...				
३	आदिनाथ	कायोत्सर्ग	७ फुट	वृषभ	७३०
	व ४ और	"	७ "		१५३०
	आदिनाथ	"	१४ "		१५२५
४	नेमिनाथ	"	१४ "	शंख	१५२५
	आदिनाथ	"	१४ "	वृषभ	१५२५
५	..	..	...		
६	पद्मप्रभु	पद्मासन	१५ "	कमल	
७	..	कायोत्सर्ग	२० "		
८	आदिनाथ	पद्मासन	६ "		
९	.	कायोत्सर्ग	२१ "		
१०	चन्द्रप्रभु	"	१२ "		१५२६
	२ और		१२ "		
११	चन्द्रप्रभु	पद्मासन	२१ "	अर्द्ध चन्द्र	१५२७
१२	सम्भवनाथ	"	२१ फुट	घोड़ा	१५२०
	व २ और	कायोत्सर्ग			१५२५
१३	नेमिनाथ	"		शंख	
	सम्भवनाथ	पद्मासन	२० फुट	घोड़ा	
	महावीर	कायोत्सर्ग		सिंह	

४	आदिनाथ	पद्मासन	२६ फुट	वृषभ	१५२५
५	"	"	२८ "	"	
६	...	"	३० "		
७	कुन्थुनाथ	कायोत्सर्ग	२६ "	बकरा	१५२५
	शांतिनाथ	"	२६ "	हरण	१५२५
	आदिनाथ	"	२६ "		
	४ और		२६ "		
१८	...		२६ "		
१९	...		२६ "		
२०	आदिनाथ		८ "		१५२५
२१	...				

ऊपरके समूहमें २१ गुफाएं हैं।

कछवाहा राजा सूरजसेनने सन २७५मे ग्वालियरको बसाया था।

ग्वालियरके कछवाहा वंशके राजा।

संवत्	नाम राजा
९८२	लक्ष्मण
१००७	वज्रदाम
१०३७	मंगल
१०४७	कीर्ति
१०६७	भुवन
१०८७	देवपाल
११०७	पमपाल
१११७	सुर्यपाल
११३२	महीपाल
११५२	भुवनपाल
११६१	[illegible]

इसी वंशमें राजा मानसिंह सन १५०६•में हुए।

ग्वालियरके परिहार वंशके राजा।

संवत	नाम राजा
११८६	परमालदेव
१२०५	रामदेव
१२१२	हमीरदेव
१२२५	कुबेरदेव
१२३६	रत्नदेव
१२५१	लोहंगदेव
१२६८	सारंगदेव

१२६९ में गढको अलतमास मुसलमानने लिया।

ग्वालियरके किलेमें जैनियोके प्रसिद्ध लेख।

न० ९–सवत ११६९ या सन् ११०८ जैन मदिरमे
१८– „ १४९७ या सन् १४४० मूर्ति आदिनाथ
डूगरसिंह राज्य
२१– „ १५२६ या सन् १४६९ मूर्ति चद्रप्रभु
२७– „ १५३० या सन् १४७३ „ आदिनाथ
कीर्तिसिंहे राज्ये

ग्वालियर गजटियर १९०८मे कथन है कि यहा जो तानसेन गवैय्या मानसिंहके स्कूलमे पढकर तय्यार हुआ था वह रीवा महा राज राजा रामचद्रका दर्बार–गवैय्या था और वह सन् १५६२ तक दर्बारमें रहा, तब उसको बादशाह अकबरने बुला भेजा। बाद शाहको यह बहुत प्रिय था। आईने अकबरीमे इसको मिया तानसेन व उसके पुत्रको तातराजखा लिखा है।

ग्वालियर दिगम्बर जैनोका विद्याका स्थान रहा है। सूरजसे नके वशमे ८ वा राजा तेजकरण था जिसको परिहारोंने सन् ११२९में हरा दिया।

(७) ग्यारसपुर–भिल्सासे उत्तर पूर्व २४ मील। यहा प्राचीन मकान बहुत दूर तक चले गए हैं। सबसे प्रसिद्ध मकान **अठखभा** कहलाता है। यह ग्रामके दक्षिण बहुत सुन्दर मदिर है, स्तभ बहुत उत्तम नकाशीके हैं। एक खभे पर एक यात्रीका लेख सन् ९८२का है। सबसे सुन्दर पुराना जैन मदिर पहाडीकी नोक पर **माताका** है जो नौमी या १०वीं शताब्दीका है। इसमें वेदीपर एक नटी दिगम्बर जैन मूर्ति है व ३ या ४ और जैन मूर्तियें हैं।

मरेमें बहुतसी जैन मूर्तियें हैं। वज्रनाथ मंदिर भी जैनियोंका इसमें तीन मंदिर शामिल हैं।

(८) मंदसोर नगर—एक बहुत प्राचीन नगर है। इसका पुराना नाम दशपुर है। नासिकमें सन् ई०के प्रथम भागका क्षत्रपोंका लेख मिला है उसमें इसका नाम है। एक शिलालेख मंदसोरके पास सूर्यके मंदिर बनानेका सन् ४३७में कुमारगुप्त प्रथमके राज्यका है। जैन स्मारक बहुत हैं।

यहांसे दक्षिण पूर्व ३ मील सोंदनी ग्राममें दो सुन्दर स्तम्भ हैं जिनके गुम्बज पर सिंह और वृषभ बने हैं। दोनोंपर जो शिलालेख है उसमें यह कथन है कि मालवाके राजा यशोधर्मनने शायद सन् ५२८में मिहरकुलको हराया।

(Fleet Indian Antiquary Vol XV.)

(९) नरोद—जि० नरवर अहिरावती नदीपर। यहां एक पाषाणका बड़ा मठ है इसको कोकई महल कहते हैं, इसकी एक भीतपर एक बड़ा संस्कृतका लेख है जिसमें मठके बनानेका वर्णन है। इसमें राजा अवन्तिवर्मनका वर्णन है, शायद ग्यारहवीं शताब्दीका हो। (कनिंघम रिपो० नं० २ तथा Epigraphica Indica Vol. VII. P. 35)

(१०) नरवर नगर—सिपरी और सोनागिरके मध्यमें—नैषधके नलचरित्रमें इसका वर्णन है। कनिंघम इसको पद्मावती नगर कहते हैं। यहां नागराजा गणपतिके सिक्के पाए गए हैं जिसका नाम इलाहाबादके समुद्रगुप्तके लेखमें आया है।

(११) शुजालपुर—जि० सुजालपुर (उज्जैन-भोपाल) रेल्वेपर

इस नगरको एक जैन व्यापारीने बसाया था। अभीतक उसके नामसे एक मुहल्ला रायकरणपुर कहलाता है।

(१२) उदयपुर–ग्राम भिलसामें–बरेठ ष्टेशनसे सडकपर ४ मील जाकर। तीन प्राचीन मंदिर हैं। एक उदयेश्वरका लाल पाषाणका है जिसके स्तंभ बहुत सुन्दर हैं। इसके चारो तरफ सात मंदिर ध्वंश हैं। यहा यह कहावत है कि इस मंदिरको उदयदित्य परमारने बनवाया था। एक लम्बा लेख है जिसका आधा नष्ट हो गया है। इसमें उदयदित्य तक राजाओंके नाम हैं। मंदिरमें कई लेखोंसे प्रगट है कि यह उदयदित्य सन् १०८०में राज्य करता था। दो लेख बताते हैं कि मालवाको अनहिल्वाडा पाटनके चालुक्योंने सन् ११६३से ११७९ तक अपने अधिकारमें रक्खा। एक लेखमें धारके राजा देवपालका कथन है।

(Epi Indica Vol. I. P 22?. Indian antiquary Vol. XVIII P 341 and Vol. XX P 83)

(१३) उदयगिरि–जि० भिलसामे–बहुत प्राचीन स्थान है। भिलसासे ४ मील पहाडीमें कटे हुए मंदिर हैं। यह पहाडी ॥। मील लम्बी व ३८० फुट ऊंची है। गुफाओंमें बहुत उपयोगी लेख है।

नं० १०की गुफा जैनियोंकी है। यह २३वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजीकी है। इसमें लेख सन ४२५–४२६का है। इसकी खास खुदाई ५० फुटसे १६ फुट है। इसमें ५ कमरे हैं। दक्षिण कमरेके तीन भाग हैं। यहां बहुतसे बौद्धोंके स्मारक हैं। स्तंभोंपर लेख हैं। एकमें प्रगट है कि मगधके चन्द्रगुप्त द्वि०ने मालवा और

गुजरात विजय किया। एक लेख सन ४२९–४२६ व दूसरा १०३७का है (कनिंघम रि० नं० १०।

(Indian antiquary Vol XVIII P. 185 and Vol. XIV P 61).

(१४) उज्जैन—यह प्राचीन नगर है। यहां जैनी (सन् १९०१ में) १०३९ थे। दूसरी शताब्दीमें यह पश्चिमी क्षत्रपोंकी राज्यधानी थी। राजा चस्थाना थे। टोलिमी (सन् १५०) तथा १०० वर्ष पीछे एरिथियन समुद्रका पेरिप्लस कहते हैं कि यह उज्जैन रत्न, सुन्दर तनजेब, मट्टीके खिलौने आदिके व्यापारका केन्द्र था। माल भरुचके बंदरसे बाहर जाता था। सन ४०० में मगधके चन्द्रगुप्त द्वि० के हाथमें आया। सातवी शताब्दीमें कन्नौजके हर्षवर्द्धनने राज्य किया। नौमी शताब्दीमें राजपूतोंके पास आया। १२ वींमें परमारोंके पास, फिर तोमर और चौहानोंने राज्य किया।

नोट—नीचे लिखा वर्णन ग्वालियर गजेटियर सन १९०८से मालूम हुआ है।

ग्वालियर राज्यमें जैनी सन् १९०१ मे २ सैकडा अर्थात् ,५४०२४ थे जिनमें अधिक दिगम्बर थे।

(१५) अमनचार—पर्गना मुंगौली जि० ईसागढ़—मंगौलीसे उत्तर ७ मील। यह प्राचीन स्थान है। यहां बहुतसी पुरानी जैन मूर्तियें हैं।

(१६) अटेर परगना भिंड—चंबल नदीके ध्वंश स्थानोंमें एक किला है जिसमें घुसना कठिन है। यह भदोरिया राजाओंका स्थान रहा है।

(१७) बरई—ग्वालियर गिर्दमें १ मील। यहां रेलवे स्टेश-

नसे पश्चिम जैन मंदिर है जो अनुमान ६०० वर्ष हुए बने होंगे। भादोंमें दो मेले होते हैं।

(१८) भैरोंगढ़–पर्गना व जिला उज्जैन। यहासे १॥ मील सिप्रा नदीपर एक भैरोंका मन्दिर है। एक पवित्र स्थानपर एक पाषाण है जिसको जैनी पूज्य मानते हैं। यहा आषाढ़ सुदी ११, बैशाख सुदी १४ व कार्तिक सुदी १४ को मेले होते हैं।

(१९) भोगमा–पर्गना सोनकच्छ जिला शाजापुर। देवास नगरसे पूर्व १० मील एक ग्राम है जिसमें प्राचीन जैन मंदिरोंके ध्वंश–काले मध्यदकी कबरें पास पड़े हैं। यहा भुवनेश्वर महादेवका जो मन्दिर है उसमें खुदे हुए पाषाण लगे हैं जो पुराने जैन मंदिरोंसे लाकर लगाए गए हैं क्योंकि बहुतोंपर जैन मूर्तिया बनी हैं।

(२०) दूबकुंड–पर्गना और जिला शिवपुर। एक उजाड़ ग्राम है। एक पहाड़में खुदे हुए सरोवरके कोनेपर दो प्राचीन मंदिर हैं जिनमें एक मुख्य जैनका है। यह ८१ फुट वर्ग है।

यह वि० स० ११४५ या सन् १०८८ का है। यह लेख बहुत उपयोगी है, क्योंकि इसका सम्बन्ध दूसरे लेखोंसे है।

(Cunningham A. S R XX P 99 & Epigraphica Indica II P 237)

नकल लेख दूबकुंड।

Ep I Vol II P, 237,

Dubkund (Gwalior) Jain Temples.

(१) ओं नमो वीतरागाय। आ–द्रष्टि–..टना (द्दत्पा) दपीठ लुठन्म (दा) रस्र गम (द) गुज (द) लि (म) त्रिद्दयूत साराविणम् (त) (२) (त्पा) –वद्द (च) .रसु—–. (ता) .ि द्दि (ग) मिवाकरोत्स ऋषभ स्वामी श्रियेस्तात्सता (म)। विभ्रा–(३) णोगुण महर्ति हततमस्तापो निज ज्योतिषा, युक्तात्मापि जगति सगत जयश्रक्रे मरागाणि य उन्माद्यन्म–(४) करव्वजोर्जित-गजग्रासोछमत्केमरी ससारोग्रगदच्छिदेस्तु स मम श्रीशान्तिनाथो जिन ॥ जाटर सस्वदखण्डित–(५) क्षयमपि क्षीणाखिलोपक्ष य साक्षाद्वीक्षितमक्षिभिर्दधदपि प्रौढ स्ल्क तथा। चिन्हत्त्वाद्यदुपातमाप्य मतत जात (६) स्तथा ? नदत्रचन्द्र सर्वजनस्य पातु निपद–श्चन्द्रप्रभोऽर्हन्स नः॥ शोकानोन्हसकुल रतितृणश्रेणि प्रणश्यदभ्रम (७) त्माव्वगपुगमुद्धतमहामिथ्यात्त्ववातध्वनि। यो रागादिमृगोपघात-कृतधीर्ध्यानाग्निना भस्मसाद् भाव कर्म्म (८) वन निनायजयतात्सोय जिन सन्मतिः॥ प्रसाधितार्थगुर्भव्यपङ्कजाकर (भास्कर)। अतत्तमोपहो वोस्तु गो–(९) तमो मुनिसत्तमः॥ श्रीमज्जिनाधिपति सद्वदनारविंद मुद्गच्छदच्छतरबोध समृद्धगधम्। अध्यास्य या जगति

पङ्कजवासिनी-(१०) ति ख्यातिं जगाम जयतु श्रुतदेवता सा॥ आसीत्कच्छपघातवंशतिलकस्त्रैलोक्यनिर्यद्यश पाडु श्रीयुवराज सूनुर-(११) समुद्युद्भीमसेनानुग । श्रीमानर्जुनभूपतिः पतिरपाम प्यापयत्तुल्यता नो गाभीर्यगुणेन निर्जित जगद्वन्वोवनु-(१२) विद्यया श्रीविद्याधर देव कार्यनिरत श्री राज्यपालं हठात्कठास्थिच्छिदनेक वाणनिवहैर्हत्त्वामहत्त्याहवे । (१३) डिंडीगवलिचद्रमडलमिलन्मुक्ता कलापोज्ज्वलैस्त्रैलोक्य सकल यशोभिरचलैर्योजस्त्रमापूरयत् ॥ यस्य (१४) मन्थानकालोत्थित जलधिरवाकारवादित्रशब्दानेगान्निर्गच्छद द्विप्रतिमगजघटाकोटिघटारवाश्चा सस-(१५) पैंत समतादहमहमिकया पूरयतो निरेमुर्नोरोदोरध्रभाग गिरिविवरगुरूद्यत्प्रतिध्वानमिश्रा ॥ दिक्च-(१६) क्राक्रमयोग्यमार्गणगणाधारानने कान् गुणानच्छिन्ना-ननिश दधद्विधुकला सस्पर्द्धमानद्युतीन् ।सूनु-(१७) च्छिन्नधनुर्गुण-विजयिनोप्याजौ विजिप्तोर्जित, जातो स्मादभिमन्युरन्यनृपतीनाम-न्यमानम्तृणम् ॥यस्याद्भुत-(१८) वाहवाहनमहाशस्त्रप्रयोगादिषु, प्रावीण्य प्रविकत्थित प्रथुमति श्रीभोजपृथ्वीभुजा च्छत्रालोकनमात्र-जात-(१९) भयतोद्दप्तादि भगप्रदस्याम्य स्याद गुणवर्णने त्रिभुवने को ल्ब्धवर्ण प्रभु ॥ तुरगखरखुराग्रोत्खातधात्री-(२०) समुत्थ स्थगयदहिमरश्मेर्मंडल यत्प्रयाणे । प्रचुरतररजोन्याशेपतेजस्विते जो हतिमचिरत-(२१) एवाशसतीवानिवारम् ॥ शरदमृतमयूखप्रेंख-दशुप्रकाशप्रसरदमितकीर्तिव्याप्तदिक्चक्रवाल । अजनि विजय-(२२) पाल: श्रीमतो स्मान्महीश शमितसकलधात्री मटलक्लेशलेश ॥ मय यच्छत्रूणा त्रिदशतरणी वीक्षितरणे । (२३) क्रमेणाशेषाणा व्यतरदसदप्यात्मनि सदा। सतोप्यशक्त्वादादवनिपत्यस्याधिकमतो वुधा-

नामाश्चर्यं व्यतनुत (२४) नरेन्द्रो हृदि च यः ॥ तस्माद्विक्रमकारि विक्रमभरप्रारंभनिर्भेदितप्रोत्तुंगाखिलवैरिवारणघटोयन्मांसकुं—(२५) भस्थलः । श्रीमान्विक्रमसिंहभूपतिरभूदन्वर्थनामा समं । सर्वाशा प्रसरद्विभासुरयशः स्फार स्फुरत्केसरः ॥ (२६) बालस्यापि विलोक्य यस्य परिघाकारं भुजं दक्षिणं । क्षीणाशेपपराश्रयस्थितिधिया वीरश्रिया संश्रितम् । सर्व्वागेष्व-(२७) वगूहनाग्रहमहंकारादहं पूर्विका राज्यश्रीरक्तताधिगस्य विमुखी सर्वान्यपुंवर्गतः ॥ अत्त्यंतोद्धत विद्विट् तिमि-(२८) र भरमिदिच्छादितानीति ताराचक्रे विप्वक्प्रकाशं सकलजगदमंदावकाशं दधाने । निःपर्यायं दिगास्यप्रसरदुरु-(२९)—कराक्रांत धात्री धरेंद्रे यस्मिन् राजांशु मालिन्यह हसति वृथैवैपकोन्योंशुमाली ॥ यद्दिग्जये वरतुरङ्गखुराग्रसं-(३०) गक्षुण्णावनीवलय-जन्यरजोभिसर्प्पत । विद्वेपिणां पुरवरेपु तिरोहितान्यवस्तूत्करं प्रलयकालमिवादिदे—(३१) श ॥ तस्य क्षितीश्वरवरस्य पुरं समस्ति विस्तीर्ण्णशोभमभितोपि चडोभसंज्ञम् । प्राप्तेप्सितक्रियसमग्रदिगागतांगि—(३१) व्यावर्ण्यमान विपणि व्यवहारसारम् ॥ आसीज्जायशपुर्व्विनिर्गतवणिग्वंशांबराभीशुमान् जामूकः प्रकटाक्षता—(३३) र्थनिकरः श्रेष्ठी प्रभाधिटितः । सम्यग्दृष्टिरभीष्ट जैन चरणद्वंद्वार्चने यो ददौ, पात्रौ घायचतुर्विधं त्रिविधु—(३४) धो दानं युत श्रद्धया ॥ श्रीमज्जिनेश्वरपदांबुरुहद्विरेफो विस्फारकीर्त्तिधवलीकृतदिग्विभागः । पुत्रोस्य वैभव—(३५) पदं जयदेवनामा सीमायमानचरितो जनि सज्जनानाम् । रूपेण शीलेन कुलेन सर्व्वस्त्रीणां गुणैरप्यपरैः (३६) शिरस्सु । पदं दधानास्य बभूव भार्या यशोमतीति प्रथिता प्रथिव्याम् ॥ तस्यामजीजनद सा दृपिदाहडाख्यौ

पुत्रौ पवि (३७)त्र वसुराजित चारुमूर्त्ती। प्राच्यामिवार्कशशिनौ समयः समस्तसंपत्प्रसाधकजनव्यवहारहेतू ॥ प्रोन्माद्यत्सकला-(३८) रिकुंजरशिरोनिर्द्दारणोद्यद्यशोमुक्ताभूषितभूरभूरपि भियान्नोन्मार्गगामी च यः। सोदाद्विक्रमसिंहभूप-(३९) तिरतिप्रीतो यकाभ्यां युगश्रेष्ठः श्रेष्ठिपदं पुरेत्र परमे प्राकारसौधापणे ॥ आसीद्विशुद्धतरबोधचरित्रदृ-(४०) ष्टि निःशेषसूरि नतमस्तकधारिताज्ञः। श्रीलाटवागटगणोन्नतरोहणाद्रि माणिक्यभूत चरितोगुरु देवसेन। (४१) सिद्धांतो द्विविधोप्यबाधितधिया येन प्रमाणध्वनि। ग्रंथेषु प्रभवः श्रियामवगतो हस्तस्थ मुक्तोपमः। (४२) जातः श्रीकुलभूषणोखिलवियद्वासोगणग्रामणीः सम्यग्दर्शन शुद्धबोधचरणालंकारधारी ततः। रत्नत्रयाभरण-(४३) धारणजातशोभस्तस्मादजायत स दुर्लभसेन सूरिः। सर्व्वं श्रुतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूपनिरतोभवदिद्ध-(४४) धीर्यः ॥ आस्थानाधिपतौ बुधादविगुणे श्रीभोजदेवे नृपे सभ्येष्वंबरसेन पंडित शिरोरत्नादिपूद्यन्मदान्। योने-(४५) कान् शतसो अजेष्ट पटुताभीष्टोद्यमो वादिनः। शास्त्रांभोनिधिपारगो भवदतः श्रीशांतिषेणो गुरुः॥ गुरुचर-(४६) णसरोजाराधनावाप्तपुण्य प्रभवदमलबुद्धिः शुद्धरत्नत्रयो स्मात्। अजनि विजयकीर्तिः सूक्तरत्नाव-(४७) कीर्णां जलधि भुवमिवेलां यः प्रशस्ति व्यधत्त ॥ तस्मादवाप्य परमागमसारभूतं धर्मोपदेशमधिकाधिगत-(४८) प्रबोधाः। लक्ष्म्याश्च बंधुसुहृदां च समागमस्य मत्त्वायुषश्च वपुषश्च विनश्वरत्वं॥ प्रारब्धा धर्मकांतारविदाहः (४९) साधु दाहड़ः। सद्विवेकश्च कूकेकः सूर्पटः सुकृते पटुः॥ तथा देवधरः शुद्धः धर्मकर्मधुरन्धरः। चन्द्राखिरि-(५०) तनाकश्च महीचन्द्रः शुभार्जनात् ॥ गुणिनः क्षण-

नाशिश्रीस्लादानविचक्षणा । अन्येपि श्रावक केचिद्-(५१) कर्तधनपावका ॥ किंच लक्ष्मणसज्ञोभू-हदेवस्य मातुल **गोष्ठिको जिनभक्तश्च** सर्वशास्त्र-(५२) विचक्षण ॥ शृगाग्रोल्लिखितानर वरसुधा साद्रद्रवापाडुर सार्थं **श्रीजिनमंदिर** त्रिजगदानदप्रद सु-(५३) दर। मभूनेदमकारयन्गुरुशिर मचारिकेत्त्वनग्रातेनोच्छलतेर वायुविहतैयामादिशतपस्य-(५४) ताम् ॥ अथतस्य **जिनेश्वरमंदि-रस्य** निष्पादनपूजनसस्काराय कालान्तरस्फुटिततुन्तिप्रतीका-(५५) गर्थं च **महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहः** स्वपुण्यराशेरप्रतिहतप्रसर परमोपचय चेतसि निधाय (५६) गोणी प्रति विशोपक गोधूमगोणी चतुष्टय वापयोग्य क्षेत्र च महाचक्रग्राम भूमौ रजकद्रह पू-(५७) र्व्वदिग्भागवाटिका वापीसमन्विता प्रदीप मुनिजनशरीराभ्यजनार्थं करघन्टिद्वय च दत्तवान् । तच्चाच-(५८) द्रार्क महाराजाधिराज श्रीविक्रमसिंहोपरोधेन बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिभि यस्य य-(५९) स्य यदा भूमिस्तस्य तदा फलमिति स्मृतिवचनानि जमपि श्रेय प्रयोजन मन्यमाने (६०) र्भाविभिर्भूमिपाले प्रतिपाल नीयमिति लिलेखोदयराजो या प्रशस्ति शुद्धधीरियाम् । उत्कीर्ण वा-(६१) न शिलाकूटस्तील्हणस्ता सदक्षराम् ॥ सवत् ११४९ भाद्रपद सुदि ३ सोमदिने । मगल महाश्री ॥

उल्था ।

दूबकुड (ग्वालियर) का शिलालेख जैन धर्मप्रेमी कच्छपघात वश राजा विक्रमसिंह तथा जायसवाल श्रावक वि० स० ११४९।

यह शिलालेख दूबकुडके मंदिरमें सन् १८६६ में मिला था जो एपिग्रेफिका इडिका जिल्द दो पृष्ठ २३२-४०मे इग्रेजी भाव

सहित दिया हुआ है। यह कुनू नदीके तटपर ग्वालियरमे दक्षिण पश्चिम ७६ मील है। एक कोटके भीतर यह मंदिर है, चारों तरफ घर है व छोटे कई मंदिर है। यह लेख संस्कृतमे ६१ लाइनका है। श्लोकमें है। यह जिनमन्दिर निर्मापणकी प्रशस्ति है। इस प्रशस्तिको श्री विजयकीर्ति महाराजने रचा था। जिसको उदयराजने पाषाणमें लिखा था और तिल्हाणने खोदा था (लाइन ४९, ६०–६१)।

लेखका भाव।

लाइन १ से १० तक मंगलाचरण है। पहले श्रीऋषभदेवकी स्तुति है। फिर शान्तिनाथ भगवानकी स्तुति है कि प्रभुने गुणसमुदायको प्राप्त किया है, अज्ञानका आताप नाश किया है, अपनी ज्ञान ज्योतिसे युक्त होनेपर भी जिन्होंने रागादि भावोंको जीत लिया है तथा जो मदयुक्त कामदेवरूपी हाथीके नाश करनेको सिंहके समान है ऐसे शान्तिनाथ महाराज हमारे संसारका भयानक रोग नष्ट करें। फिर श्री चन्द्रप्रभुकी स्तुति है कि व चंद्रनाथ भगवान् हमको विपत्तियोंसे बचावें जो सर्व जनोंको आनन्द दाता है इत्यादि (शेष भाव नहीं समझमें आया।) पश्चात् श्री सन्मति नामधारी श्री महावीरस्वामीकी स्तुति है। जिसने महामिथ्यात्वके मार्गमें जाते हुए रागादि मृगोंको ध्यानकी अग्निमे भस्म कर दिया है व कर्मोंके वनको जला दिया है व शोकके वृक्षके समूहको व रतिकी तृण श्रेणीको नाश कर दिया है इत्यादि सो जिनेन्द्र जयवंत हो। फिर श्री गौतम गणधरकी स्तुति है कि जो अपने कार्यको सिद्ध करनेवाले भव्य जीव रूपी कमलोंके समूहके लिये

सूर्यके समान हैं वे तुम्हारे अंतरंग अज्ञान अंधकारको दूर करें। फिर श्री जिनवाणीकी स्तुति है कि जो श्री जिनेन्द्रके मुख-कमलसे निकलकर निर्मल ज्ञानके गंधको विस्तारनेवाली है, इसीसे श्रुतदेवती या सरस्वतीको जगतमें कमलवासिनी कहते हैं।

फिर १० से ३१ लाइन तक महाराज विक्रमसिंह और उनके वंशका वर्णन है।

कच्छपघातवंशका तिलक तीन लोकमें जिसका निर्मल यश व्याप्त था, इससे पवित्र श्री युवराजका पुत्र अर्जुन राजा था जो भयानक सेनाका पति था, जिसकी गंभीरताकी तुल्यता समुद्र भी नहीं कर सक्ता था व जिसने अपनी धनुष विद्यासे पृथ्वीको या अर्जुनको जीत लिया था, जो श्री विद्याधर देवके कार्यमें लीन था व जिसने महान् युद्धमें प्रसिद्ध राज्यपाल राजाको उसके कंठकी हड्डीको छेदनेवाले अनेक बाणोंसे जीत लिया था। जिसने अपने अविनाशी यशसे—जो मोतियोंकी माला व समुद्रका फेन या चंद्र मंडलके समान निर्मल था एकदम तीन लोकको पूर्ण कर दिया था। जिस समय वह प्रस्थान करता था उस समयके उसके बाजोंकी ध्वनि समुद्रकी गर्जनाके समान थी व जिसके साथ शीघ्र जाते हुए पर्वत समान हाथीके समूहोंमें जो घंटोंके शब्द होते थे वे चारों तरफ फैलते हुए एक दूसरेको देखते थे तथा वे आकाश और पर्वतकी गुफाको भी अपने शब्दोंसे भरनेमें चूकते न थे, उनके साथ पर्वतकी गुफाओंसे निकली हुई गर्जें भी मिल जाती थीं।

उसका पुत्र राजा अभिमन्यु था जो रात्रि दिन अनेक अखंडित गुणोंका धारी था, जो गुण चहुं ओरसे आनेवाले शरणा-

गतोंके लिये आधार रूप थे व जिसकी प्रभा चद्रज्योतिको जीतती थी व जो अन्य राजाओंको तृणके समान गिनता था व जिसने बडे २ विजयी राजाओंको जीत लिया था व जिसका धनुप-बाण कभी खडित नहीं होता था।

जो प्रवीणता वह घोडे व रथोंके चलानेमे व शस्त्रोंके प्रयोगादिमे दिखाता था, उसकी महिमा प्रसिद्ध **भोजराजाने** वर्णन की थी, जिसके छत्रको देखने मात्रमे बडे २ मानी शत्रु भयसे भाग जाते थे, ऐसे राजाके गुणोंको वर्णन करनेमें तीन लोकमें कौन कवि समर्थ हो सक्ता है।

जब वह प्रयाण करता था मोटे २ रजके बादल पृथ्वीसे उठते थे जब भूमिपर घोडोंके खुर पडते थे। और वे सूर्यमडलको आच्छादित करते हुए यह भविष्य वाणी कहते थे कि वास्तवमे अन्य सर्व तेजस्वियोंका तेज इसके सामने नष्ट हो जावेगा।

इस प्रसिद्ध राजाका पुत्र कुमार विजयपाल था जिसने शरद कालके चन्द्रमाकी किरणके समान प्रकाशमान अमर्यादित यशसे चहुदिशाको व्याप्त कर दिया था और जिसने पृथ्वीमडलके सर्व क्लेशोंका नाश कर दिया था।

यह राजा विद्वानोंके हृदयमें वहुत आश्चर्य उत्पन्न करता था जब यह देवियोंसे देखने योग्य युद्धमे क्रमसे सर्व शत्रुओंको भय उत्पन्न कर देता था। यद्यपि वह स्वय उनमे पृथ्वी नहीं लेता था तथापि अपनी पृथ्वीका लेशमात्र भी उनको नही लेने देता था। इस राजाका पुत्र प्रसिद्ध विक्रमसिंह हुआ जिसका नाम पराक्रममे सिंहके समान होनेसे सार्थक था, क्योंकि अपने वीर्य्यके प्रभावसे

इसने अपने सर्व शत्रुओंकी हाथियोंकी सेनाकी कुम्भस्थलीको विदारण कर दिया था व जिसका निर्मल यश सिंहके बालोंके समान चारो तरफ फैला हुआ था।

जब कि वह बालक था तब ही उसकी दाहनी भुजाको वीर लक्ष्मीने और सबपर आश्रय त्यागकर आश्रित कर लिया था। यह देखकर जब वह बडा हुआ तब राज्य लक्ष्मीने उसकी उच्चताके प्रकाशमें अन्धकार युक्त होकर सर्व अन्य मनुष्योंमे घृणा करके उसके सर्व अगको स्पर्श करनेका सकल्प कर लिया था। वास्तवमें वह सूर्य वृथा ही है जबतक कि यह महाराजरूपी सूर्य बडे २ मानी शत्रुओंके घोर अन्धकारको हटा रहा है, अनीतिगामी तारावलीको ढक रहा है व सर्व जगतमे प्रकाश कर रहा है तथा अपने महत्वकी भयानक किरणोंमे दिगन्त व्यापी होकर पर्वत समान राजाओंको स्पर्श कर रहा है। जब यह दिग्विजय करता था इसके चुने हुए घोडोंके तेज खुरोंमे खण्डित पृथ्वी मडलसे जो रज उडती थी वह उसके शत्रुओंके मुख्य नगरोंपर फैल जाती थी और सर्व पदार्थोंको ढक देती थी जो बतलाती थी कि मानो यह प्रलयकाल ही आगया है। इस महाराजाका नगर चडोभ है जिसकी शोभा चहुओर व्याप्त है। इसके सुन्दर बाजार और उन्नत व्यापारकी महिमा लोगोंमें प्रसिद्ध है जो यहा सर्व ओरसे अपने पासकी वस्तुओंको बेचने और खरीदनेकी इच्छासे आते है।

नोट—इस ऐतिहासिक वर्णनसे यह पता चला है कि कच्छ ख्यात वशमें महाराना प्रकरराज थे। उनका पुत्र विद्याधर देवका मित्र राजा अर्जुन था जिसने राज्यपालको युद्धमें मारा था। उसका

पुत्र अभिमन्यु था जिसकी महिमा महाराज भोजने की थी, उसका पुत्र विजयपाल था, विजयपालका पुत्र विक्रमसिंह था। इसीके राज्यमे यह शिला लेख लिखा गया।

इस कच्छपघात वंशके दो शिलालेख और हैं। एक वि०सं० ११५० का ग्वालियरके सासबहु मंदिरपर है जिसमे लक्ष्मण, वज्रदामन, मंगलराज, कीर्तिराज, मूलदेव, देवपाल, पद्मपाल और महीपाल राजाओंका क्रम है।

दूसरा नरवरका ताम्रपत्र है जो वि० सं० ११७७का वीर सिंह देवका है जो गगणसिंहदेव फिर शारदसिंहदेवके पीछे हुआ था। ये भिन्न२ वंश हैं जो ग्वालियरके आसपास राज्य करते थे। इस लेखमें जो राजा विजयपाल है यह वही नृपति विजयाधिराज है, जिनका वर्णन बयानाके शिलालेख वि० सं० ११०० मे है। यह बयाना दूबकुण्डसे ८० मील उत्तर है। यह बयानाका लेख भी जैन शिलालेख है। यहा जो राजा भोजका कथन है यह मालवाके परमार भोजदेव ही है। लेखमे जो विद्याधरदेवका कथन है यह चंदेलके राजा है जो गंडदेवके पीछे हुआ व उसके पीछे विजयपालदेवने राज्य किया है।

दूबकुण्डका प्राचीन नाम चडोभ था। लाइन ३२से ३९में जैन व्यापारी रिषि और दाहडकी वंशावली दी है। जायस पुरमे आए हुए वणिक वंशरूपी आकाशमे सूर्य समान प्रसिद्ध धनवान सेठ जासूक था जो सम्यग्दृष्टी था व जो जिनेन्द्र चरणोंको प्रणाम व श्रद्धानपूर्वक पात्रोंको चार प्रकारका दान देनेमे लीन था। उसका पुत्र जयदेव था जो जिनेन्द्रकी पूजामें भ्रमर

समान था, निर्मल कीर्तिवान था व सज्जनोंके लिये उत्तम चारित्रवान था। उसकी स्त्री यशोमति थी जो अपने रूपमें, शीलमें, कुलमें सर्व स्त्रीके गुणोंमें शिरमौर थी व पृथ्वीमें प्रसिद्ध थी। उस स्त्रीके दो पुत्र हुए एक ऋषि दूसरे दाहद, जो सुंदर मूर्ति थे तथा पूर्व दिशामें सूर्य चन्द्रके समान शोभनीक थे। ये धनके उपार्जनमें व्यवहारकुशल थे। इन दोनोंमेंसे बड़े भाई ऋषिको अनेक महल व कोटसे शोभित नगरमें राजा विक्रमने श्रेष्ठीपद प्रदान किया था।

फिर लाईन ३९ से ४८ तकमें उस समयके जैन आचार्योंका वर्णन है।

श्रीलाट वागट गणके उन्नत पर्वतके मणि रूप निर्मल दर्शनज्ञान चारित्रके कारण व अनेक आचार्य जिनकी आज्ञाको मस्तक चढ़ाते हैं ऐसे गुरु देवसेन महाराज प्रसिद्ध हुए। जिन्होंने निश्चय व्यवहार रूप दोनों प्रकारके सिद्धांतको निर्दोष बुद्धिसे जानकर प्रमाण मार्गसे ग्रन्थोंमें संकलित किया, जिससे वे परम ऐश्वर्यको प्राप्त हुए व जिनके हाथमें मानो मुक्ति ही आगई। उनके शिष्य कुलभूषण मुनि हुए जो दिगम्बर मुनियोंमें मुख्य थे व सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रके अलंकारसे भूषित थे। उनके शिष्य श्रीदुर्लभसेन आचार्य थे जो रत्नत्रयमई आभरणसे शोभित थे जो सर्व शास्त्रको पढ़कर आत्म स्वरूपमें लीन थे व परम धैर्यवान थे। इनके शिष्य श्री शांतिसेन गुरु थे जिन्होंने सभास्थानके स्वामी राजा भोजकी सभामें अपनी वादकलामें सैकड़ों मदयुक्त वादियोंको जीत लिया था जिन्होंने पंडित अम्बरसेन

आदि विद्वानोंपर आक्रमण किया था। यह शास्त्र समुद्रके पारगामी थे। उनके शिष्य श्री विजयकीर्ति थे जो अपने गुरुके चरणकमलकी आरधनाके पुण्यसे निर्मल बुद्धिके धारी थे व शुद्ध रत्नत्रयके पालक थे इन्होंने ही रत्नोंकी मालाके समान इस प्रशस्तिको लिखा है। लाइन ४८ से ५३ तक श्री जिन मंदिरके निर्माताओंका वर्णन है।

श्री विजयकीर्ति महाराजसे परमागमका सारभूत उपदेश पाकर कि यह लक्ष्मी, बंधु सुहृद्का समागम व यह आयु या शरीर नाशवंत हैं। इस धर्मस्थानके रचनेका प्रारंभ सज्जन दाहड़ने और उनके साथी विवेकवान कूकेक, पुण्यात्मा सूर्पट, शुद्ध व धर्म कर्ममें निपुण देवधर व महिचन्द व अन्य चतुर श्रावकोंने किया। लक्ष्मण व जिनभक्त गोष्ठिकने भी मदद दी। इन्होंने अमृतके समान श्वेत जिन मंदिर उच्च शिखर सहित तीन जगतको आनंद देनेवाला सुन्दर बनवाया। लाइन ५४ से ६० तक गद्यमें महाराज विक्रमसिंहने जो जिनमंदिरको दान किया उसका कथन है। इन जिन मंदिरके रक्षण, पूजन, सुधार व जीर्णोद्धारके लिये महाराजाधिराज श्री विक्रमसिंहने अपने दिलमें पुण्य राशिके अमर्याद प्रसारको धारणकर हरएक अन्नकी गोणीपर एक विंशोपक नामका कर बिठाया व महाचक्र ग्राममें चारगोणी गेहूं बोने योग्य खेत तथा रजकद्रहके पूर्व एक बाग कूपसहित प्रदान किया तथा दीपकादिके लिये कुछ घड़े तेलके प्रदान किये और आज्ञा की कि आगेके राजा बराबर इस आज्ञाको मानें कि जिसकी भूमि है उसीका उसको फल मिलना चाहिये। लाइन ६१में प्रशस्ति लिखनेवाले

उदयराज व खोदनेवाले तील्हणका वर्णन है। संवत ११४९ भादों सुदी ३ सोमवार।

नोट–इससे विदित होता है कि दूबकुंडमें देवसेन दिगंबराचार्य बहुत प्रसिद्ध होगए हैं तथा राजा भोज मालवाधीशके समयमें शांतिसेन मुनिने वाद करके विजय प्राप्त की थी। जायसपुर निवासी ही जायसवाल जातिके लोग हैं। यह जायसपुर अवधका जायस है या दूसरा है सो पता लगाना योग्य है।

जैसवाल जातिके लिये यह लेख बड़े महत्त्वका है। राजा विक्रमसिंह भी जैन भक्त प्रतीत होता है।

(२१) गंढवल–परगना सोनगच्छ जिला शोजापुर। सोनकच्छसे उत्तर ६ मील प्राचीन ग्राम है। यह बहुत प्राचीन स्थान है। बहुतसे पुराने सिक्के मिलते हैं। बहुतसे मंदिर ध्वंश पड़े हैं। जैन मूर्तियें बहुतसी हैं जिनमें एक ९ फुट लम्बी है व दूसरी १४ फुट लम्बी है, परन्तु इसके पग खंडित हैं।

(२२) खिलचीपुर–जि० मंदसोर ग्रामके उत्तर एक कूएपर सूवतेहून मिहिरकूलके विजयिता राजा यशोधर्मनका कथन है। सन् ५३३–५३४। इस कुएको किसी दक्षने संवत ५८० में बनवाया था।

(२३) कोटवल या कुटवार–पर्गना नूराबाद जिला तोंवरगढ़। नूराबादके उत्तर–पूर्व १० मील एक पहाडीपर बसा है। प्राचीन नाम कमंती भोजपुर या कमंतलपुर है। बहुत प्राचीन स्थान है। पुराने सिक्के मिलते हैं। एक वर्ग मील तक ध्वंश स्थान हैं। एक महावीरजीके मंदिरके बाहर कुआं १२० फुट गहरा है।

(२४) मउ-परगना महगांव जि० भिंड-महगांवसे १६ मील। यहां श्री पार्श्वनाथजीके नामसे कुंआरमासमें एक बड़ा जैन धार्मिक मेला हुआ करता है।

(२५) पानविहार-पर्गना उज्जैन-यहांसे उत्तर ८ मील। यहा ग्राममें पुराने जैनमंदिरोंके ध्वंश हैं। बहुतसे खुदे हुए पत्थर जो पहले जैन मंदिरोंमें लगे थे बहुतसे मकानोंकी भीतोंपर लगे देखे जाते हैं।

(२६) राजापुर या मायापुर-पर्गना पिछार जि० नरवर। महुअर नदी पर ग्रामके उत्तरपूर्व करीब १ मीलपर एक पाषाणका बौद्धस्तूप है जो ४९॥ फुट लम्बा है। इसको कोठिलामठ कहते हैं। यह दर्शनीय है।

(२७) सुहानियां (सोनियां या सिहोनिया) पर्गना गोहड़ जिला तोंवरधार। यह बहुत ही प्राचीन ऐतिहासिक ग्राम है।

लश्करसे पूर्व २८ मील कटवरसे उत्तर पूर्व १४ मील है। असनी नदीके बाएं तटपर है। इसको ग्वालियरके संस्थापक सूरजसेनके बुजुर्गोंने स्थापित किया था। कनिंघम साहबने यहां शिलालेख वि. सं. १०१३, १०३४ व १४६७के पाए हैं। ग्रामके पश्चिम एक स्तम्भ हैं जिसको भीमकीलाट कहते हैं दक्षिणकी ओर कई दिगम्बर जैन मूर्तियां हैं। इस नगरको कन्नौजके विजयचंदने सन् ११७०में ले लिया था। यहां किलेके दक्षिण आध मील पर एक बडी जैन मूर्ति १५ फुट ऊंची है। जिसपर सं० १४६७ है। इसके पास दो जैन मूर्तियें छः छः फुट ऊंची हैं। सर्व ही नंग्न कायोत्सर्ग हैं। श्रावक लोग पूजते हैं।

(२८) सुन्दरसी--पर्गना सोनकच्छ जि० शोजापुर। शोजापुरसे पश्चिम १० मील। यहा सन १०३२ में राजा सुदर्शन राज्य करते थे। एक जैन मंदिर है जिसमें लेख स० १२२१का है।

(२९) सुसनेर--पर्गना सुसनेर जि० शोजापुर शोजापुरसे उत्तर ३६ मील। यहा प्राचीन जैन मंदिर है।

(३०) तेरही--पर्गना व जि० ईसागढ। नरोदसे दक्षिण पूर्व ८ मील। यहां बढिया पुरातत्व है। दो प्राचीन मदिर है। एकमें बढिया खुदाई है। यहा दो खम्भे पडे है उनपर भी लेख हैं। एकमें यह कथन है कि यहां मधुवेनी नदी (जो अब महुअर कहलाती है) हैं। एक युद्ध महा सामताधिपति उदभट्ट और गुणरागके मध्यमे हुआ था जिसमें प्रसिद्ध वीर चाडियाना माद्र वदी ४ स० ९६० शनिवारको मारा गया था। यह लेख बहुत उपयोगी है क्योकि उदभट्टका नाम ९६४ संवतके सय्यादरीके लेखमें आता है। यह कन्नोजके राजाके आधीन था।

(३१) उनचोड--पर्गना सोनकच्छ--यहासे दक्षिण पूर्व २८ मील एक पाषाण भीत है। एक द्वार जैन मदिरोके ध्वशोंसे बनाया गया है।

(३२) उन्दास--पर्गना उज्जैन--इसको जनरावाद कहते हैं। यह उज्जैनसे पूर्व ४ मील है। यहा एक बडा सरोवर है जिसको रत्नागरसागर कहते है। उसका तट जैन मंदिरोके अशोंमे बनाया गया है।

(३३) सारंगपुर--भिल्सामे पश्चिम ८० मील व आगरसे पूर्व दक्षिण २४ मील। यहा सन् ई० से १०० से ६०० वर्ष पूर्वके पुराने सिक्के पाए जाते हैं।

ग्वालियर गजटियर जिल्द १ में बहुतसे जैन मंदिर व मूर्तियोंके फोटो (चित्र) दिये हुए हैं। ये नीचे लिखे प्रकार हैं—

१—दो दि० जैन प्रतिमाएं जो खुतियानी विहार पर्गना जोरा जि० तोबंरघरसे मिली थी वे लश्करके सर्कारी म्यूजियममें हैं, बहुत सुन्दर हैं। पृ० १४४
२—शिलालेख जैन मंदिर दूबकुंड जि० शिवपुर ,, १५९
३—तीन कायोत्सर्ग जैन प्रतिमाएं दूबकुंडमें ,, १६०
४—जैन मंदिरोंके ध्वंश दूबकुंडमें बाहरका दृश्य ,, १६१
५— ,, ,, ,, ,, भीतरका ,, ,, १६२
६—चंदेरीपर्गना पिछारके जैनमंदिर जिसमें २४ शिखरहैं १७९
७—जैन मंदिर मुंगोली पर्गना ईसागढ़ पृ० २३२
८— ,, ,, पारा साहेब ग्राम थोबन पर्गना ईसागढ़ २३३
९— ,, ,, थोबन २३४
१०—,, ,, ,, २३५
११—,, ,, ,, २३६
१२—,, ,, ग्रामवरो पर्ग० बासोदा जि० भिलसा २४२
१३—,, ,, भिलसा २४३
१४—,, ,, ग्यारसपुर पर्ग० बासोदा जि०भिलसा २५८
१५—,, ,, ,, ,, ,, खुदाई सुन्दर २५९
१६—कायोत्सर्ग दि०जैन मूर्ति गंधवलपर्ग०सोनकच्छ ३२२
१७—जैन मंदिरकी ध्वंश दशा गंधवल प० ,, ३२३
१८—दि० जैन मंदिर मकसी प० ,, ३२५
१९—श्वे० ,, ,, ,, ,, ,, ३२६
२०—जैन मंदिर पीपलरावन पर्गना सोनकच्छ • ३२७

(२) इन्दौर रेजिडेन्सी।

इन्दौर राज्य–इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें ग्वालियर, पूर्वमें देवास धार और नीमाड, दक्षिणमें खानदेश, पश्चिममें बड-वानी और धार। यहां ९९०० वर्गमील स्थान है।

इतिहास–इन्दौरको मल्हारराव हुलकरने बसाया था जो धनगर जातिमें सन् १६९४ में पैदा हुए थे। यहां सन् १७६७ से १७९९ तक अहल्याबाईने राज्य किया। यह नमूनेदार शासक थी। लिखा है—

" Her toleration, Justice, and careful management of all departments of state were soon shown in increased prosperity of her dominions and peace in her days. Her charities are proverbial."

भावार्थ–उसकी मध्यस्थवृत्ति, न्यायपरायणता और राज्यके सर्व विभागोंकी चतुरताके साथ व्यवस्था ऐसी थी जिससे शीघ्र ही उसके राज्यमें ऐश्वर्यकी वृद्धि और शांतिकी वृद्धि होगई थी। उसके दानोंका वर्णन तो आदर्श रूप है।

पुरातत्व–यहां दो स्थान बहुत प्रसिद्ध हैं, एक धमनेर दूसरा ऊन। इसके सिवाय बहुतसे प्राचीन स्थान मालवामें हैं जिनमें विशेषकर १० वींसे १३ वीं शताब्दीके जैन और हिन्दू मंदिर हैं। कुछ मंदिर पुराने मंदिरोंको तोड़कर बनाए गए हैं, जैसे मोरी, इन्धोक, झारदा, भकला आदिपर—

यहां सन् १९०१ में १४२९९ जैनी थे।

महेश्वरका रुईका सूत प्रसिद्ध है।

बहुत ही सुन्दर है जिसमें ५वीं, छठी शताब्दीके मध्यकी बौद्ध मूर्तिया है। ब्राह्मण गुफाए ८ वी और ९ शताब्दीके मध्यकी है। न० १३की गुफाको छोटाबाजार कहते है। यहा १५ मूर्तिया है जो जैन या बौद्धकी होंगीं। ऐसी गुफाए पोलाद नगर (गरोटके पास), खोलवी, आवर, बेनैगा (झालावार), हातीगाव, रेणगाव (टोक) में हैं। ये सब २० मीलकी चोडाईमें है। धमनेरकी पहाडी १४० फुट ऊची है। घेरा २ या ३ मीलकी है। सबमे बडा दर्शनीय एक पाषाणका मदिर धर्मनाथकी पहाडीपर है। यह एलूराके कैलास मदिरके समान है। यह जैनका होना चाहिये, जाचकी जरूरत है।

(२) महेश्वर—नीमाड जिला, नर्मदानदीके उत्तर तटपर प्राचीन नगर है। इसको चोली महेश्वर कहते हैं। चोली इसके उत्तर ७ मील पर है। इसका नाम रामायण, महाभारत व बौद्ध साहित्यमें आया है। यह दक्षिण पैथनसे श्रावस्ती जाते हुए मार्गमें पडता है। उस मार्गमें मुख्य ठहरनेके स्थान है। महिष्मती, उज्जैन, गोणद्द, भिलसा, कौसम्बी व साकेत इस नगरीका हैहयवशी राजाओंमे जो चेदीके कलचूरी राजाओंके बुजुर्ग थे प्राचीन सम्बन्ध रहा है। कलचुरियोंके अधिकारमें मध्य भारतका पूर्व भाग नौमीसे बारह्वीं शताब्दी तक था। इस वशका प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्यार्जुन इस नगरीमें रहता था ऐसा माना जाता है। पश्चिमी चालुक्य राजा विनयदित्यने सातवीं शताब्दीमें यहाके हैहय वशियोंको पराजित किया तब महिष्मती उसके अधिकारमें आगया। इसके नीचे हैहय राजाओंने गवर्नरके रूपमें कार्य किया। कात्यायनने पाणिनी व्याकरणकी टीकामें इस नगरीका नाम लिखा है। यह नगरी रगीन

रामपुर-भानपुर जिला-यहां २१२३ वर्गमील स्थान है। बहुतसे प्राचीन स्थान यहांपर हैं जो इसे महत्वका स्थान प्रगट करते हैं। सातवींसे ९ मी शताब्दी तक यह बौद्धोंका स्थान रहा है। धमनेर, पोलादनगर और खोलवींमें बौद्ध गुफाएं हैं। नौमीसे १४ वीं शताब्दी तक यह परमार राजपूतोंका एक भाग था जिनके राज्यके बहुतसे जैन मंदिर अवशेष हैं। इस वंशका एक शिला-लेख हालमें मोरी ग्राममें मिला है जो गरोट पर्गनामें है। शामगढ़ स्टेशनसे ६ मील है।

निमाड़ जिला-यहां ३८७१ वर्गमील स्थान है। प्राचीन बौद्धकालमें यह उपयोगी ऐतिहासिक जगह थी। यहां दक्षिणसे उज्जैन तक मार्ग एक तो महिष्मती या महेश्वर होकर जाता था दूसरा पश्चिममें ८ चीकलदा और ग्वालियर राज्यमें बाघ होकर जाता था। सराएँ पाई जाती हैं। तीसरी शताब्दीमें इसके उत्तरीय भागपर हैहय वंशवालोंका राज्य था जिन्होंने महिष्मतीको राज्य-धानी बनाया था। नौमी शताब्दीमें मालवाके परमारोंने राज्य किया था। उनके राज्यके चिह्न जैन व अन्य मंदिरोंमें मिलते हैं जैसे ऊन, हरसुद, सिंधाना और देवलापर।

इन्दौरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) धमनेर-गुफाएँ-झालरापाटनसे दक्षिण पश्चिम ५० मील। चन्देवाससे पूर्व २ मील, शामगढ़ स्टेशनसे १३ मील है। यहां बौद्ध और ब्राह्मणकी गुफाएं हैं। १४ वीं बौद्ध गुफा प्रसिद्ध है। इसको बड़ी कचहरी कहते हैं। भीमका बाजार नामकी गुफा

बहुत ही सुन्दर है जिसमें ५वीं, छठी शताब्दीके मध्यकी बौद्ध मूर्तियां हैं। ब्राह्मण गुफाएं ८ वी और ९ शताब्दीके मध्यकी हैं। नं० १३की गुफाको छोटाबाजार कहते हैं। यहां १९ मूर्तियां हैं जो जैन या बौद्धकी होंगीं। ऐसी गुफाएं पोलाद नगर (गरोटके पास), खोलवी, आवर, बेनेगा (झालावार), हातीगांव, रेणगांव (टोंक) में हैं। ये सब २० मीलकी चोड़ाईमें हैं। धमनेरकी पहाड़ी १४० फुट ऊंची है। घेरा २ या ३ मीलकी है। सबसे बड़ा दर्शनीय एक पाषाणका मंदिर धर्मनाथजी पहाड़ीपर है। यह एलूराके कैलास मंदिरके समान है। यह जैनका होना चाहिये, जांचकी जरूरत है।

(२) महेश्वर–नीमाड़ जिला, नर्मदानदीके उत्तर तटपर प्राचीन नगर है। इसको चोली महेश्वर कहते है। चोली इसके उत्तर ७ मील पर है। इसका नाम रामायण, महाभारत व बौद्ध साहित्यमें आया है। यह दक्षिण पैथनसे श्रावस्ती जाते हुए मार्गमें पड़ता है। उस मार्गमें मुख्य ठहरनेके स्थान हैं। महिष्मती, उज्जैन, गोणद्ध, भिलसा, कौसम्बी व साकेत इस नगरीका हैहयवंशी राजाओंमे जो चेदीके कलचूरी राजाओंके बुजुर्ग थे प्राचीन सम्बन्ध रहा है। कलचूरियोंके अधिकारमें मध्य भारतका पूर्व भाग नौमीसे बारहवीं शताब्दी तक था। इस वंशका प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्यार्जुन इस नगरीमें रहता था ऐसा माना जाता है। पश्चिमी चालुक्य राजा विनयदित्यने सातवीं शताब्दीमें यहांके हैहय वंशियोंको पराजित किया तब महिष्मती उसके अधिकारमें आगया। इसके नीचे हैहय राजाओने गवर्नरके रूपमें कार्य किया। कात्यायनने पाणिनी व्याकरणकी टीकामें इस नगरीका नाम लिखा है। यह नगरी रंगीन

सारी व रेशमी पाड़की धोतीके बनानेके लिये प्रसिद्ध था।

सं० नोट–यहां पोरवाड़ दि० जैनियोंका मुख्य स्थान रहा है।

(३) ऊन–परगना खड़गांव–यहांसे ११ मील। नीमाड़ जि० बहुत प्राचीन स्थान है। यहां १२ वी शताब्दीके जैन मंदिर हैं। एक मंदिरमें धारके परमार राजाओंका लेख है। यह नरमदाके दक्षिण सनावद स्टेशनसे ६० मील है। खजराहाके मंदिरोंके समान यहां भी विशाल मंदिर जैन और हिन्दू दोनोंके हैं। जैन मंदिरोंको विना सम्हालके छोड दिया गया है। ये मंदिर दिगम्बर जैनियोंके हैं जिनके माननेवाले इस प्रदेशमें बहुत कम रह गए हैं परन्तु हिन्दू मंदिरोंमें अब भी पूजा पाठ जारी है। ग्रामकी उत्तरी हदकी ओर जैन मंदिर हैं जिनमेंसे दो मंदिरोंको **चौवारादेरा** कहते हैं। चौवारा देहरा नं० २ का शिखर कुछ गिर गया था। यह बहुत ही उपयोगी मंदिर सर्व समूहके मध्यमें है क्योंकि इसमें मंदिरोंके बननेकी मितीका पता लगता है। इस मंदिरके अन्तरालमें तीन शिलालेख हैं, जिनसे प्रगट होता है कि मुसलमानोंके अधिकारके पहले यह मंदिर बच्चोंके लिये विद्यालयके काममें आता था। एक छोटे वाक्यमें मालवाके उदयदित्य राजाका नाम है जिससे प्रमाणित होता है कि ये मंदिर उसके समयसे पहले बने थे। दूसरे लेखमें मात्र संस्कृत व्याकरणके कुछ सूत्र हैं, तीसरा लेख एक सर्पके ऊपर सर्पबन्ध रचनामें अंकित है, इसमें स्वर और व्यंजन अक्षर दिये हैं। चौवारा देहरा नं० १ में जैन मूर्तियां नहीं रही हैं किन्तु चौवारा देहरा नं० २ और ग्वालेश्वरके जैन मंदिरमें दिगम्बर जैनोंकी बड़ी २ मूर्तियां हैं। दोनों ही मंदिर मध्यका-

लीन भारतीय शिल्पकलाके सुन्दर नमूने हैं, यद्यपि ग्वालेश्वरके मदिरका नकशा चौवारा देहरा न० २ से बहुत बढिया है। ये दोनो ही मदिर खडगावसे ऊन जानेवाली सडकपर हैं। इस चौवारा देरा न० २ के गर्भग्रहमे तीन दिगम्बर जैन मूर्तिया एक आसनपर खडी हैं। इनमेंसे एक पर विक्रम सं० १३ मालूम होता है। ग्वालेश्वर मदिरके गर्भग्रहमें एक पहाडीपर तीन बडी दिगम्बर जैन मूर्तियां एक आसनपर हैं। प्रछाल करनेको मस्तक तक पहुचनेके लिये सीढी बनी है जैसे खजराहामें श्री ऋषभदेवके मदिरमें है। चौवारा देरा न० १ और खडगाव ऊन सडकके मध्यमें और भी मदिर हैं (A S R. 1918-19 P 17) चौवारा देहरामें एक बडी मूर्तिपर वि० स० १९८९ है। जैनाचार्य रत्नकीर्ति है। ग्वालेश्वर मदिरमें एक दि० जैन मूर्ति १२॥ फुट ऊची है। कुछ मूर्तियोपर स० १२६३ है।

(४) विजवार या विजावड--पर्गना कन्नापोर जिला नीमाड। इदौरसे पूर्व ४९ मील व नीमावरसे पश्चिम ३३ मील। यहा कई जैन मदिरोंके खण्डहर हैं। वंदेर पेखान नामकी पहाडीपर बहुत सी जैन मूर्तिया स्थापित हैं। इन मदिरोंके सुन्दर खुदाईके पाषाणोको महादेवके मदिरके बनानेमें काममें लाया जारहा है। ग्रामके उत्तर १०वीं या ११वीं शताब्दीके बहुत बडे जैन मंदिरके शेष हैं। इन ध्वंशोमें तीन बडी दिगम्बर जैन मूर्तिया हैं (१) ९ फुट ३ इच ऊँची (२) ६ फुट ३ इच ऊची, नासिका और भुजा नहीं हैं (३) ८ फुट ३ इच ऊची २ फुट १० इच आसनपर चौडी, हाथ नही हैं। यह शांतिनाथजीकी मूर्ति है। आसनके लेखमें

स० १२३४ फागुन वदी ६ है। एक त्रिकोण पाषाण पडा है जो ४ फुट ३॥ इच लम्बा २ फुट ४ इच ऊचा है। ऊपर १ मूर्ति है। ऊपर छत्र दुदुभीवाजे व गधर्वदेव है। यहा दतोनी नामकी धारा है जिसके घाट और सीढियोंपर जैन मंदिरके पाषाण लगे हैं। जो पहाडके नीचे बीजेश्वर महादेवका मंदिर है उसकी भीतोंमें पद्मासन और खडगासन जैन मूर्तिया लगी है तथा जैन मंदिरके शिखरको तोडकर इस मंदिरका शिखर बनाया गया है।

(५) चोली–पर्गना महेश्वर जि० नीमाड–महेश्वरसे उत्तर पूर्व ८ मील–यहा कुछ प्राचीन जैन मंदिरोंके ध्वंश है।

(६) देहरी–पर्गं० चिकलदा जि० नीमाड–चिकल्दामे उत्तर १४ मील। यहा श्री पार्श्वनाथका एक जैन मंदिर है।

(७) देपालपुर–इन्दौरसे उत्तर पश्चिम ३० मील। इस नगरको धार वशके देवपाल परमार (सन् १२१८–१२३०) ने वसाया था। कई जैन मंदिर है जिनमेंसे दोमें वि०स० १५४८ और १६९९ है।

देपाल और वनदियाके मध्यमें एक कई मीलका बडा सरोवर है। इसको राजा देवपालने बनवाया था जिसके तटपर एक प्राचीन बडा जैन मंदिर है जो वनदिया ग्राममें है। जिसमें लेख है कि श्री आदिनाथकी मूर्ति वैसाख सुदी ३ मगलवार स० १५४८ को स्थापित की गई थी।

(८) ग्वालनबाद–जि० नीमाड, मंदवा किलासे १० मील। यहा आवमील जाकर बीजासन देवीका मंदिर है। चैत्रम मेला भरता है।

(९) झारदा–जि० महिदपुर–यहासे उत्तर ८ मील। इस नगरको मादलजी अजनाने संवत १२०९ में बसाया था। यह गुजरातसे आया था। एक बडी सडकके मध्यमें जहा अब पीरकी कब्रके खुदाई करनेसे प्राचीन मूर्तियें मिली हैं, इससे प्रगट है कि यहा पुराना मंदिर था। दो मूर्तियोंमें संवत १२२६ और १२२७ है। तीसरी मूर्ति स्पष्ट जैन तीर्थंकरकी है।

(१०) कथोली–पर्गना भानपुर जिला रामपुर भानपुर। भानपुरसे उत्तर पूर्व १२ मील। यहा जब जैन समाजने स० १६६२ में मंदिर बनवाया था तब यह नगर बहुत उन्नतिपर था। इसको गगरोनी ठाकुरोंने सन् १८६७ में लूटा था तब फिर इसका जीर्णोद्धार किया गया। ग्रामके बाहर प्राचीन जैन मंदिरोंके खंडहर हैं।

(११) कोहल–पर्गना भानपुर–यहासे पश्चिम ६ मील। यह नगर पहले चंद्रावतोंकी राज्यधानी था। ग्रामके पास लक्ष्मी नारायणके मंदिरके पूर्व दो जैन मंदिरके अवशेष हैं जिनको सास बहुका मंदिर कहते है। सासके मंदिरके मध्यमें कृष्ण पाषाणके श्री महावीरस्वामी स० १६९१ हैं। दो मूर्तियें श्री पार्श्वनाथजीकी है। वेदीके नीचे भौंरा है। दूसरे मंदिरमें 'जो पहलेके दक्षिण है' अब भी पूजा होती है। यहा दो सुन्दर खुदे हुए खंभे हैं। मंडपमें १२ खंभे हैं, मेरी पुरानी हैं, परन्तु मूर्ति नवीन प्रतिष्ठित है। उत्तरकी कोठरीमें श्री आदिनाथ हैं, दक्षिणमें शास्त्रभंडार है।

(१२) कोथडी–पर्गना सुनेल जि० रामपुरा भानपुरा। भानपुरासे ३० मील व सुनेलसे १० माल। यहा ग्राममें कई जैन मंदिर हैं। एक मंदिरके इतिहाससे मालूम होता है कि जैन आर

ब्राह्मणोंमें द्वेष था। एक जैन मंदिरको अब रामका मंदिर ब्राह्मणोंने मान लिया है और रामको "जैन भंजन जबरेश्वर राम" कहते हैं। यह स्थानीय कहावत है कि १४वीं शताब्दीमें कोथड़ीमें बहुत जैनलोग रहते थे उनके बनाए हुए मंदिर थे। जैनियोंमें और सर्कारी अफसरोंमें कुछ गैर समझ होगई तब उन्होंने नगरको छोड़ दिया और थोड़ी दूर जाकर बसगए, उसको भी कठोदिया नाम दिया। हिन्दुओंने जैन मूर्तियें मंदिरसे हटा दीं और उनके स्थानपर राम लक्ष्मण सीताकी मूर्तियें रख दीं।

अभी भी जैन लोग कोठड़ीमें पूजाके लिये आते हैं, परन्तु जबतक कोठड़ी परगनेमें रहते हैं वे कुछ खाते पीते नहीं हैं, पूजाके पीछे वे पिरावा ग्राममें जाकर भोजन करते हैं।

(१३) माचलपुर–पर्गना जीरापुर जि० रामपुर–भानपुरा काली संघसे पूर्व ६ मील। सरोवरपर दो जैन मंदिर हैं जिनमें अच्छी कारीगरी है।

(१४) मोरी–पर्ग० भानपुर जिला रा० भा०। यहां कई बहुत सुन्दर जैन मंदिरोके अवशेष हैं। एकमें लेख १२ वीं शताब्दीका है। इन मंदिरोंको मांडूके घोरी बादशाहोंने नष्ट किया था।

(१५) नीमावर–पर्ग० नीमावर–नर्मदा नदीपर, अलेबरूनीने ११ वीं शताब्दीमें इसका नाम लिया है। यहां परमारोंके समयका लाल पाषाणका एक सुन्दर जैन मंदिर है।

(१६) रायपुर–पर्ग० सुनेल जि० रा० भा०–झालरापाटनसे दक्षिण १२ मील। यहां ग्राममें प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(१७) संदलपुर–डि० नीमावर–यहांसे उत्तर १९ मील। ग्राममे मंदिर मूलमें जैनका था उसको हिन्दुओंने सन् १८४१ में महादेवका मंदिर बना लिया।

(१८) सुन्दरसी–जि० महीदपुर–यहां कई प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(१९) पुरा गिल्न–बलियासे कोठडी जाते हुए सडकपर एक ग्राम। यहा १ सरोवरपर ११ वी या १२ वी शताब्दीका एक प्राचीन जैन मंदिर है। द्वारके ऊपर तथा मदिरकी बांई ओर कुछ जैन मूर्तियें है। पहली मूर्तिमे श्री महावीर स्वामीके माता पिता हैं जो वृक्षके नीचे बैठे हैं उनके हरएक दासी है। आसनपर घुडसवारोंकी पंक्ति है। वृक्षके ऊपर तीन जैन मूर्तियें है। दूसरी मूर्ति खडे आसन श्री पार्श्वनाथजीकी है। दो मूर्तियें शासनदेवीकी है जिनमे लेख है। उसमे महन्तारिकादेवी लिखा है। प्रतिष्ठाकारिका रूपिणी दोनोमे मस्तक नहीं हैं। देवी सिंहासनपर खडी है, एक पग फैला हुआ है। चार हाथ हैं, दाहने हाथमे बच्चा है। नीचे सिंह हैं। सरोवरके पास बहुत जैन मूर्तियें हैं।

(२०) चैनपुर–भानपुराका चद्रावत किला जो एक बडे टीलेके नीचे है। ग्रामसे दूर व भानपुरसे नवली जाते हुए गाडीके मार्गके पास एक बडी दि० जैन मूर्ति भूमिपर विराजित है। यह १३ फुट २ इंच ऊची व ३ फुट ८ इंच चौडी है।

(२१) संधारा–नीमचसे झालरापाटन जाते हुए पुरानी फौजी सडकसे ३ मील। यहा बहुत प्राचीनता है। यहा दो जैन मदिर

है उनको तम्बोलीके मंदिर कहते हैं। खुदे हुए खम्भे हैं। बड़ा मँडप है। वेदीघरका पाषाण द्वार स्वच्छ है। वेदीमें एक पद्मासन जैन मूर्ति है। वेदीकी कोठरीकी छतमें तीन छोटे खुदे हुए आले हैं, मध्यका सबसे बड़ा है वे आदिनाथजी भक्तिमें हैं। दोनो मंदिर दि० जैनोंके हैं। अब भी पूजा होती है, दोनोंमें बड़ा श्री आदिनाथका प्राचीन है। दूसरा भी आदिनाथका है। इसका जीर्णोद्धार हुआ है। अब मूर्तियें नवीन स्थापित हैं।

(२२) किथुली–जिस टीलेपर नवली और तक्षकेश्वर ग्राम है उसके नीचे एक प्राचीन जैन मंदिर है। इस मंदिरका मण्डप जैन चित्रकारीका दर्शनग्रह है। मंडपमें जिनकी मूर्तियें धातुकी व सफेद, काले व पीले पाषाणकी हैं। गर्भ गृहमें बड़ा कमरा है जिसमें तीन आले हैं, मध्यमें पद्मासन श्रीमहावीरस्वामी हैं व अगल बगल खड्गासन दि० जैन मूर्तियें हैं। वेदीमें बहुतसी दि० जैन मूर्तियें हैं। मूलनायक एक बड़ी मूर्ति श्री पार्श्वनाथ भगवानकी है।

(२३) कुकदेश्वर–रामपुरासे पश्चिम १० मील। नीमचसे झालरापाटन जाते हुए सड़कपर। ग्रामके मध्यमें एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथजीका है कृष्ण पाषाणकी मूर्ति है और भी नवीन जैन मूर्तियें हैं।

(२४) राजोर–नर्मदा नदीपर–नीमावरसे ९ मील। यहां पुरातत्त्व स्मारक है। एक प्राचीन जैन मंदिर है, एक खंडित जैन मूर्ति अवशेष है।

———

(३) भोपाल एजन्सी—भोपाल राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—दक्षिण पूर्व मध्य प्रात, उत्तरमें राजपूताना और ग्वालियर, पश्चिममे कालीसिंध। यहा ११६५३ वर्ग मील स्थान है।

भोपाल राज्य—मे ६९०२ वर्ग मील है।

पुरातत्व—यहां साचीमें स्तूप सुन्दर है। यहा भोजपुरमें एक सुन्दर जैन मदिर है। एक वडी मूर्ति महिलपुरमें है, चारो तरफ मदिर हैं। इसमे खुदाई सुन्दर है। समसगढमें—जो भोपालमे १० मील है—खडित मंदिर हैं वहा तीन वडी मूर्तियें अभी भी खडी हुई हैं। नरवर ग्राम साचरके मदिरोंके मसालेमे वना है। जामगढमें एक १२वीं शताब्दीका मदिर है। यहाके मुख्यस्थान नीचे प्रकार हैं—

मुख्य स्थान।

(१) भोजपुर—तहसील ताल—यहा एक वडा शिव मदिर है उसमें ४० फुट ऊचे चार खभे है। इसके पास एक जैन मदिर १४ से ११ फुट है जिसमें तीन जैन तीर्थंकरकी मूर्तिया है उनमेंसे एक बहुत वडी मूर्ति श्री महावीरस्वामीकी २० फुट उची है दूसरी दो श्री पार्श्वनाथजीकी है। यह मदिर १२वीं या १३वीं शताब्दीका होगा। भोजपुरके पश्चिम एक वडी झील है जिसको धारके राजा भोजने (१०१०—५३) शायद वनवाया है।

(R. A. S Vol. VIII P. 80 and Indian antiquary Vol. XVIII P. 348).

(२) आसापुरी–तह० ताल। एक ध्वश जैन मंदिरमें श्री शांतिनाथकी मूर्ति १६ फुट ऊची है।

(३) जामगढ़–तह० बरेली। प्राचीन जैन मदिर १२ या १३ शताब्दीका है।

(४) महलपुर–तह० गढी–जगलमे, ग्रामके पास एक बडी खडे आसन जैन मूर्ति है, मदिर नष्ट होगया है, मूर्ति भी बिगड गई है, परन्तु उसपर कारीगरी सुन्दर है। यहा एक ध्वंश किला है जिसकी भीतोंमे जैन स्मारक है।

(५) नरवर–ता० रायसिन–यहा एक समय एक सुन्दर जैन मदिर था जिसका सामान और मकानोंमें लगाया गया है। एक सुन्दर मूर्ति ४ फुट ऊची है।

(६) शमसगढ–तह० बिलकिसगज–भोपालसे १० मील। यहा दो जैनमंदिरोंके स्मारक हैं। एक भोजपुरके मदिरके समान २६ फुटसे १९ फुट है, भीतें नष्ट होगई है। तीन विशाल तीर्थंकरकी मूर्तियें स्थापित है। और भी बहुतसे पाषाण खुदे हुए पडे है।

(७) मुल्ला–तह० रायसिन–यहासे ९॥ मील। ग्राममें बहुतसे सुन्दर व खडित जैन स्मारक पडे है।

(८) सांची–प्राचीन नगर–बौद्धोंके प्राचीन स्मारक है। ३०० फुट ऊची पहाडीके मध्यमें लाल पाषाणका स्तूप है जिसका नीचेका व्यास ११० फुट है, पूरी ऊचाई ७७॥ फुट है। दो स्तम्भ अशोक समयके दक्षिण उत्तर १९ फुट ऊचे है। यहा सन् ई० से २५० वर्ष पहलेकी ध्यानमई बौद्ध मूर्तिये है।

इनके पास गुप्त समयके चौथी शताब्दीके छोटे मंदिरके

ध्वश है, इसके पास बौद्धोंके स्मारक हैं। यहा कई पिटारे व ४०० लेख मिले हैं जो सन् ई०से २०० वर्ष पूर्वसे १० वी शताब्दी तकके हैं।

(४) पथारी राज्य (भोपाल ए०)।

यह राज्य सागर और खुरईके मध्यमें है, यहा बहुतसे मंदिर व मूर्तियोंके अवशेष हैं। पथारी नगरके पूर्व एक सुन्दर स्तम्भ है जो ४७ फुट ऊंचा है, सुन्दर श्वेत पाषाण है—इसके पास एक मंदिर है जिसमे अब लिंग स्थापित है। इस खमेके उत्तर ओर ३८ लाइनका लेख है जो सन् ८६१ का है। इस मंदिरको राष्ट्रकूट वंशी राजा परबलीने बनाया था। इस लेखका सम्बन्ध मुनिगिरिके ताम्रपत्रसे है जिसमे देवपालका जन्म राजा परबलीकी पुत्री रामदेवीसे बताया है।

(I A S Vol XVII P II P 305 cunningham Vol VII. P 64 and Vol X P 69 Indian antiquary Vol XXI P 156)

(५) टोंक राज्यका सिरोंजनगर।

यहा सिरोंजनगर जो टोंक नगरसे दक्षिणपूर्व २०० मील है। इस नगरका सम्बन्ध जी० आई० पी० रेलवेके केथोरा स्टेशनसे है। यूरपका यात्री टेवरनियर जिसने १७ वीं शताब्दीमें यहा यात्रा की थी कहता है कि यह नगर व्यापारी व शिल्पकारोंसे भरा हुआ है व तजेब और छींटके लिये प्रसिद्ध है। यहा इतनी बढिया तनजेब बनती थी कि उससे शरीर बिना ढकासा मालूम

होता था। ऐसी तनजेबको व्यापारी लोग बाहर नहीं भेज सक्ते थे किंतु सब तनजेब बादशाह मुगल और उनके दरबारियोंके वास्ते भेजी जाती थी। अब यह सब शिल्प नष्ट होगया है।

(६) देवास राज्य (मालवा एजन्सी)

मालवा एजन्सीमे ८८२८ वर्गमील स्थान है। हद है–उत्तर और पश्चिम राजपूताना, दक्षिणमें भोपावर और इंदौर, पूर्वमें भोपाल।

इसमें ४४ राज्य शामिल हैं। देवासका वर्णन यह है–

पुरातत्त्व–सारंगपुरमें है व देवाससे दक्षिण ३ मील नागदा ग्राममें है।यह पहले राज्यधानी रहा है। यहां बहुतसे जैन मूर्तियोंके और हिंदू मंदिरोंके अवशेष हैं।

(१) सारंगपुर–कालीसिंध नदीके पूर्वीय तटपर मकसी टेशनसे ३० मील व इन्दौरसे ७४ मील। यह बहुत प्राचीन स्थान है। यहां उज्जैनके घोड़ा चिन्हके पुराने सिक्के सन् ई० से १००० से ५०० वर्ष पूर्वके पानीमें बहते हुए मिले हैं। बहुतसे जैन और हिन्दू मंदिरोंके खण्ड भीतोंमें लगे हैं। यह सुन्दर तनजेबोंके लिये प्रसिद्ध था। यहां पहले एक किला हिन्दू और जैन खण्डहरोंसे बनाया गया था। ये खंडहर इन्दौरके सुन्दर्सी पर्गनेके तुङ्गजपुरसे लाए गए थे। अब दीवाल व द्वार शेष है उसपर एक लेख जीर्णोद्धारका सन् १९७८ का है।

बहुतसे जैन प्राचीन स्मारक हैं जिनमें एक तीर्थंकरकी मूर्तिपर सं० ११७८ है। एक जैन मंदिरके भीतर संवत १३१९ की मूर्ति है।

सुजातखांका पुत्र बाज बहादुर सन् १९६२के करीब स्वतंत्र होगया। इसकी रूपवान स्त्री रूपमती मालवामें अपनी गानविद्या व कविताके लिये प्रसिद्ध होगई है। बहुतसे उसके बनाए गीत अब भी गाए जाते हैं। बाज़ भी, गान विद्यामें चतुर था।

(२) मनासा—पर्गना बगौड़—तोमरगढ़के नीचे बसा है।

(३) नागदा—प० देवास—यहांसे ३ मील। यहां पुराने कोट व पुराने मंदिरोंके शेष हैं। पालनगरमें बहुतसी जैन मूर्तियें देखी जाती हैं। यह पहले बहुत प्रसिद्ध स्थान था।

(७) सीतामउ राज्य।

यह इंदौरसे १३२ मील हैं। मन्दसोरसे इसका सम्बन्ध है। यहां तीतरोदमें—जो सीतामऊसे ६ मील पूर्व है—एक श्री आदिनाथजीका श्वे० जैन मंदिर है।

[८] पिरावा ष्टेट (टोंक सम्बन्धी)।

उत्तर पश्चिममें इन्दौर, दक्षिणपूर्व ग्वालियर है। यहां सन् १९९१में १९ सैकडा जैनी थे। नगरके मंदिरोंमें जो शिलालेख हैं उनसे प्रगट है कि यह पिरावानगर ११वीं शताब्दीसे प्रसिद्ध है।

(९) नरसिंहगढ़ ष्टेट।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें राजगढ़, इन्दौर; दक्षिणमें ग्वालियर, भोपाल; पूर्वमें भोपाल; पश्चिममें ग्वालियर और देवास। यहां ७४१ वर्गमील स्थान है।

होता था। ऐसी तनजेबको व्यापारी लोग बाहर नहीं भेज सक्ते थे किंतु सब तनजेब बादशाह मुगल और उनके दरबारियोंके वास्ते भेजी जाती थी। अब यह सब शिल्प नष्ट होगया है।

(६) देवास राज्य (मालवा एजन्सी)

मालवा एजन्सीमें ८८२८ वर्गमील स्थान है। हद है–उत्तर और पश्चिम राजपूताना, दक्षिणमें भोपावर और इंदौर, पूर्वमें भोपाल।

इसमें ४४ राज्य शामिल हैं। देवासका वर्णन यह है–

पुरातत्त्व–सारंगपुरमें है व देवाससे दक्षिण ३ मील नागदा ग्राममें है। यह पहले राज्यधानी रहा है। यहां बहुतसे जैन मूर्तियोंके और हिंदू मंदिरोंके अवशेष हैं।

(१) सारंगपुर–कालीसिंध नदीके पूर्वीय तटपर मकसी टेशनसे ३० मील व इन्दौरसे ७४ मील। यह बहुत प्राचीन स्थान है। यहां उज्जैनके घोड़ा चिन्हके पुराने सिक्के सन् ई० से १००० से ५०० वर्ष पूर्वके पानीमें बहते हुए मिले हैं। बहुतसे जैन और हिन्दू मंदिरोंके खण्ड भीतोंमें लगे हैं। यह सुन्दर तनजेबोंके लिये प्रसिद्ध था। यहां पहले एक किला हिन्दू और जैन खण्डहरोंसे बनाया गया था। ये खॅटहर इन्दौरके सुन्दर्सी पर्गनेके तुङ्गजपुरसे लाए गए थे। अब दीवाल व द्वार शेष है उसपर एक लेख जीर्णोद्धारका सन् १५७८ का है।

बहुतसे जैन प्राचीन स्मारक हैं जिनमें एक तीर्थंकरकी मूर्तिपर सं० ११७८ है। एक जैन मंदिरके भीतर संवत १३१९ की मूर्ति है।

सुजातखांका पुत्र बाज बहादुर सन् १९६२के करीब स्वतंत्र होगया। इसकी रूपवान स्त्री रूपमती मालवामे अपनी गानविद्या व कविताके लिये प्रसिद्ध होगई है। बहुतसे उसके बनाए गीत अब भी गाए जाते हैं। बाज भी गान विद्यामें चतुर था।

(२) **मनासा**–पर्गना बगौड–तोमरगढ़के नीचे वसा है।

(३) **नागदा**–प० देवास–यहासे ३ मील। यहा पुराने कोट व पुराने मंदिरोंके शेष हैं। पालनगरमे बहुतसी जैन मूर्तियें देखी जाती है। यह पहले बहुत प्रसिद्ध स्थान था।

(७) सीतामउ राज्य।

यह इंदौरसे १३२ मील है। मन्दसोरसे इसका सम्बन्ध है। यहां तीतरोदमें–जो सीतामऊसे ६ मील पूर्व है–एक श्री आदि-**नाथजी**का श्वे० जैन मंदिर है।

[८] पिरावा ष्टेट (टोंक सम्बन्धी)।

उत्तर पश्चिममे इन्दौर, दक्षिणपूर्व ग्वालियर है। यहां सन् १९९१में १९ सेकडा जैनी थे। नगरके मंदिरोंमें जो शिलालेख हैं उनसे प्रगट है कि यह पिरावानगर ११वी शताब्दीमे प्रसिद्ध है।

(९) नरसिंहगढ़ ष्टेट।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमे राजगढ, इन्दौर; दक्षिणमें ग्वालियर, भोपाल; पूर्वमें भोपाल; पश्चिममें ग्वालियर और देवास। यहां ७४१ वर्गमील स्थान है।

(१) विहार–प्राचीन नाम भद्रावती–पर्गे० नरसिंहगढ़-यहांसे दक्षिण ७ मील।

यह जैनधर्मका एक समय मुख्य केन्द्र था। वर्तमान ग्रामके ऊपर जो पहाडी है उसपर बहुतसे जैन स्मारक मिलते हैं, उनहीमें एक विशाल जैन मूर्ति है जो गुफाके पाषाणमें कटी हुई है। यह ८॥ फुट ऊँची है, मस्तक नहीं रहा है। आसनपर वृषभका चिन्ह है इससे यह श्री आदिनाथजीकी है। पर्वतपर गुफाके पास एक शतखम्भा महल है यह १९ खन ऊँचा है। इसको संवत १३०४में करणशैनने बनवाया था।

(४) छपेरा–प० छपेरा–नरसिंह०से पश्चिम ४६ मील। यहां श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर है जिसमें चार मूर्तियें हैं। उनमेंसे तीनमें संवत १९४८ व एकमें संवत १७९७ है।

(३) पाचोर–प० पाचोर। नरसिंह०से पश्चिम २४ मील आगरा बम्बई सड़कपर। इसका प्राचीन.नाम पारानगर है। यह बहुत प्राचीन जगह है, क्योंकि जब यहा खुदाई की जाती है तब खंडित जैन मूर्तियोंके शेष मिलते हैं।

---

(१०) जावरा राज्य।

यहां मन्दसोरसे थारोद जाते हुए बाईं
एक मध्यकालीन श्री पार्श्वनाथजीका जैन
स्तम्भ हैं। मध्यमें पद्मासन जैन मूर्ति है।
है। द्वारपर श्रीमाल जातिके शामदेव व

(११) राजगढ राज्य।

विहार ग्रामसे ३ मील कोटरा ग्राम है जहां एक गुफामें मस्तक रहित जैन मूर्ति है।

(१२) सैलाना राज्य।

सैलाना–नामली प्टेशन (राजपूताना मालवा रे०) से १० मील उत्तर है। नगरमें ३ जैन मंदिर हैं।

(१३) भोपावर एजन्सी–धार राज्य।

भोपावर एजन्सीमें ७६८४ वर्ग मील स्थान है। चौहद्दी है–उत्तरमें रतलाम, इन्दौर; दक्षिणमें खानदेश; पूर्वमें नीमाड, भूपाल; पश्चिममें रेवाकांटा। यहां २६ राज्य शामिल है।

धार राज्य–यहां ७७५ वर्ग मील स्थान है। यह परमारोंकी प्रसिद्ध राज्यधानी है। परमारोने यहां नौमीसे तेरहवीं शताब्दी तक राज्य किया था।

(१) धारानगर–यह प्राचीन नगर है। पहले राज्यधानी उज्जैन थी। पांचवे राजा वैरीसिंह द्वि०ने नौमी शताब्दीके अंतमें धारमें राज्यधानी स्थापित की। महाराज मुज वाकपतिके राज्य (९७४–९९५) में सिंधुराजके राज्य (९९५–१०१०) में और राजा भोजके राज्य (१०१०–१०५३) में धार विद्याका केन्द्र था। ये राजा स्वयं साहित्य व काव्यके रचनेवाले थे और साहित्यके

महान रक्षक थे। धारपर सन् १०२०में अनहिलवाड़ाके चालुक्य राजा जयसिंहने तथा सोमेश्वर चालुक्य राजाने १०४०में चढ़ाई की तब राजा भोजको भागना पड़ा।

धारमें बहुतसे प्रसिद्ध मकान हैं। सन् १४०५में जैन मंदिरोंको तोड़कर दिलावरखांने लाट मसजिद बनवाई और उसका नाम लाट इस लिये रक्खा कि एक लोहेका खम्भा या लाट अभी तक बाहर पड़ा हुआ है। यह ४३ फुट ऊंचा था पर अब इसके टुकडे हो गए हैं। इसकी ठीक उत्पत्तिका पता नहीं है, परन्तु यह ख्याल किया जाता है कि यह अर्जुनवर्मन परमार (सन् १२१०-१८) के समयमें शायद किसी युद्धकी विजयकी स्मृतिमें बना होगा।

यहीं अलाउद्दीनके समयमें (१२९६-१३१६) मुसल्मान साधु निजामुद्दीन औलिया हो गया है। राजा भोजका एक विद्यालय था उसको भी १४ वीं या १९ वीं शताब्दीमें और हिन्दुओंके ध्वंश मकानोंको लेकर मसजिद बना लिया गया है। बहुतसे पाषाण उसमें ऐसे लगे हैं जिनमें संस्कृत व्याकरणके सूत्र लिखे हैं। यह मसजिद पुराने मंदिरोंके स्थानपर है। यहीं एक मंदिर सरस्वतीका था। जिसको धारानगरीका भूषण माना गया था। दो स्तंभोंपर एक सर्पबन्धमें संस्कृत काव्य लिखा है—

(A. S. R. 1902-3, A. S. R. W. I. 1904 6 B. R. A. S. Vol. XXI P. 339. 54).

नव सहशांक चरित्र पद्मगुप्त कविने रचा है उसमें भोजके पिता सिंधुराजका जीवनचरित्र है, उसमें धारका वर्णन एक श्लोकमें अच्छा दिया है।

" विजित्य लंकामपि वर्तते या।
यस्याश्च नोयात्यलकापि साम्यम् ॥
जेतुः पुरी साप्यपरास्ति यस्या।
धारे ति नाम्ना कुलराजधानी ॥"

भावार्थ—यह नगरी लंकाको भी जीतती है। स्वर्गपुरी भी इसके समान नहीं है न और कोई नगरी है। यह धारा राजधानी है।

यहां जैनियोंके दो मंदिर हैं।

आरकालाजिकल सर्वे पश्चिम भाग सन् १९१८ में यह कथन है कि भोजशालाके स्तम्भोंपर जो सर्पबन्ध काव्य है उसमें कातंत्र सं० व्याकरणके १ अ० से लिये हुए सूत्र हैं। इस कातंत्र व्याकरणके कुछ पूर्वके अध्याय अभी भी मालवा, गुजरात और दूसरे भारतीय प्रांतोंमें सिखाए जाते हैं। यहां मालवाके परमार नरवर्मन व उदयदित्यका नाम है—(सन् १०९०) उदयदित्यकी आज्ञासे खुदाई हुई है। यह कातंत्र व्याकरण जैनाचार्यकृत है।

(२) मान्दोर (मान्दोगढ़)—धारसे २२ मील। यह धारराज्यमें ऐतिहासिक जगह है। इस पहाड़ीकी चोटी २०७९ फुट ऊंची है। गढ़ी दरवाजेके पीछे सड़क एक सुन्दर मकानोंके समुदायकी तरफ जाती है जिनको मालवाके खिलजी बादशाहोंने बनवाए थे। ये सब एक भीतके घेरेमें हैं, इसमें मुख्य महल हिंडोल महल है। इस घेरेके उत्तर सबसे पुरानी मसजिद मलिक मुगलकी है जो जैन मंदिरोंके खंडहरोंसे दिलावरखांने सन् १४०५ में बनवाई थी, बहुत ही सुन्दर है।

(I. R. A. S. Vol. XXI P. 353 91.)

यह बडवानी तीर्थ दिगम्बर जैनियोंका पूज्यनीय तीर्थ है। तके शास्त्रोंमें यह प्रमाण है कि रावणके भाई कुम्भकरण और न्द्रजीतने यहा मुक्ति पाई। इनके चरणचिह्न न्दिरमें अङ्कित हैं।

(३) कडोड–पर्गे० धार–यहांसे १४ मील उत्तर पश्चिम जैन मंदिर हैं।

(४) सादलपुर–पर्गे० धार–यहांसे १२ मील प्राचीन जैन मंदिर हैं।

(५) तारापुर–पर्ग धरमपुर–यहां ग्राममें एक जैन मंदिर है जिसको किसी गोपालने सन् १४७४में बनवाया था।

---

[१४] बडवानी राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें धार, उत्तर पश्चिममें अलीराजपुर, पूर्वमें इन्दौर, दक्षिण पश्चिम खानदेश। यहां ११७८ वर्ग मील स्थान है। यहां सेसोदिया राजाओंका राज्य है जिनका सम्बन्ध उदयपुरके राणाओंसे है।

बडवानी नगर–स्टेशन मऊ छावनीसे ८० मील। नगरसे पांच मील बावनगजा पहाड़ी है। यह जैनियोंका बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। पर्वतकी चोटी पर एक छोटा मंदिर पुराने मंदिरोंके खंडोंसे बनाया गया है। और भी मंदिर हैं। श्री ऋषभदेवकी मूर्ति पहाड़पर कोरी हुई है इसको बावनगजा कहते हैं, यह ८४ फुट ऊंची है। पर्वत पर नीचे और भी मंदिर है। पौष सुदी पूर्णिमाको मेला भरता है। बहुत दि० जैन यात्री आते हैं। यह पर्वत २१११ फुट ऊंचा है। बड़वानीका प्राचीन नाम सिद्धनगर है। यहां एक पुराना मंदिर है जो सिद्धनाथका मंदिर प्रसिद्ध है। यह मूलमें जैन था। अब महादेव पधरा दिये गये हैं।

यह बडवानी तीर्थ दिगम्बर जैनियोका पूज्यनीय तीर्थ है। उनके शास्त्रोमें यह प्रमाण है कि रावणके भाई कुंभकरण और रावणके पुत्र इन्द्रजीतने यहा मुक्ति पाई। इनके चरणचिह्न पर्वतकी चोटीके मंदिरमें अंकित हैं।

प्रमाण—

बडवाणी वरणयरे दक्खिण भायम्मि चूलगिरि सिहरे।
इन्दजीद कुम्भयणो णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥ १२ ॥
(प्राकृत निर्वाणकाड)

भाषा—

बडवाणी बडनयर सुचंग, दक्षिण दिश गिरिचूल उत्तंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भजुकर्ण, ते बन्दौं भवसायर तर्ण ॥१३॥
(भाषा निर्वाण काड)

पश्चिम विभागकी रिपोर्ट सन् १९१६ में बावनगजाजीकी मूर्तिके सम्बन्धमें इंजीनियर मि० पेजने लिखा है कि बावनगजाकी मूर्ति कहीं कहीं खण्ड होगई है इसलिये इसकी रक्षार्थ यह उचित है कि जो भाग मूर्तिके ठीक हैं उनपर नीचे लिखा मसाला लगा देना चाहिये जिससे पाषाण बना रहे—" Szerebmey's fluid stone preservative " जहा २ मध्यमें खण्ड होकर चट्टान निकल आई है वहा Portland Cement चारकोलके साथ लगाना चाहिये। जिस तरह होसके मूर्तिकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि यह मूर्ति बहुत प्राचीन है।

[१५] झाबुआ राज्य।

बॉरी—झाबुआसे १६ मील। यहा ग्राममें एक जैन मदिर है।

[१३] ओरछाराज्य [बुंदेलखंडएजंसी]

बुन्देलखड एजसीमें ९८५२ वर्ग मील स्थान है। इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमे जालान, हमीरपुर, वादा, दक्षिणमें सागर, दमोह, पूर्वमें बघेलखड, पश्चिममें झासी, ग्वालियर। इसमें २८ राज्य है, सन् १९०१में यहा जैनी १२२०७ थे।

ओरछाराज्य—इसमें २०८९ वर्गमील स्थान है। उत्तर पश्चिममें झासी है. पूर्वमें चरखरी है, दक्षिणमें सागर, बीजावर और पन्ना है।

वनारसके गोहवारोंकी सतान बुन्देला राजपूत है। पहला बुन्देला राजा सोहनपाल हुआ जो १३वीं शताब्दीमें था। यह अर्जुनपालका पुत्र था। सन् १२६९से १५०१तक आठ राजाओने राज्य किया। १५०१में राजा रुद्रप्रताप हुए। १५३१में उसके पुत्र भारतीचद हुए। फिर इसका भाई मधुकरशाह हुआ, इसका पुत्र रामशाह था (१५९२–१६०४) इसीके भाई वीरसिंहदेवने ग्वालियरमें अनत्रीके पास अवुलफजलको मारडाला था (आईने अकबरी) और १६०५ से १६२७ तक राज्य किया था। यह बहुत ही प्रसिद्ध था। फिर झुझारसिंहने फिर उसके पुत्र पहाड़सिंहने १६४१से १६५३ तक, फिर सुजानसिंहने (१६५३–७२) फिर इन्द्रमणिने (१६७२–५) फिर जसवतसिंहने (१६७५–८४) फिर भागवतसिंहने (१६८४–८९) फिर उद्योतसिंहने (१६८९–१७३५) फिर पृथ्वीसिंह (१७३५–५२) फिर सावन्तसिंहने (१७५२–६५) इसकी उपाधि महेन्द्र थी फिर हानीसिंहने

(१७६९–६८) फिर मानसिंहने (१७६८–७५) फिर भारतीचंदने (१७७५–७६) फिर विक्रमजीतने (१७७६–१८१७) फिर धरमपालने (१८१७–३४) फिर तेजसिंहने (१८३४–४१) फिर सुजानसिंहने (१८४१–१८५४) फिर हमीरसिंहने (१८५४–१८७४) पीछे उसके भाई प्रतापसिंह राज्य कर रहे हैं। सन् १९०१में यहां जैनी ५८८४ थे।

(१) ओरछानगर–झांसीके पास–वीरसिंहदेवका बड़ा मकान व किला है, तथा जहांगीर महाल है। बहुतसे मंदिर फैले पड़े हैं जिनमें सबसे बढ़िया चतुर्भुज मंदिर है।

(२) अहार ता० बलदेवगढ़–यह किसी समय जैनियोंका प्रसिद्ध स्थान था। बहुतसी खंडित जैन मूर्तियें इसके चारों तरफ छितरी हुई हैं।

(३) जटारिया–ता० जटालिया–वर्तमानमें जो यहां जैन मंदिर है उसमें बहुतसी मूर्तियें १२ वीं शताब्दीकी है। ये सब दिगम्बर जैन हैं। उनमें मुख्य श्री आदिनाथ, पारशनाथ, शांतिनाथ, चन्द्रप्रभु भगवानकी हैं।

(४) पपौनी–ता० टीकमगढ़–यहांसे उत्तरपूर्व ८ मील। इसका प्राचीन नाम पम्पापुर है यह प्राचीन स्थान है। जैनी तीर्थ मानते हैं। बहुतसे मंदिर हैं।

(१७) दतिया राज्य।

इसकी चौहद्दी है–उत्तरमें ग्वालियर, जालान, दक्षिणमें ग्वालियर झांसी; पूर्वमें संथार, झांसी, पश्चिममें ग्वालियर।

सन् १६२६ में वीरसिंहरावने दतिया अपने भाई भगवानरावको दी थी।

(१) सोनागिरि या श्रमणगिरि–दतियासे ९ मील। यह पहाड़ी जैनियोंका तीर्थ है। पर्वतपर व नीचे करीब १००के दि० जैन मंदिर हैं। बहुतसे प्राचीन हैं। पर्वतपर श्री चन्द्रप्रभुकी मूर्ति बहुत प्राचीन है। दि० जैन शास्त्रोंके प्रमाणसे यहां श्री नंग अनंग कुमार और साढ़े पांच करोड़ मुनि इस कल्पमें इस पर्वतपर तप करके मोक्ष पधारे हैं।

प्रमाण—

णंगाणंग कुमारा, कोडी पंचद्ध मुणिवरा सहिया।
सुवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥ ९॥
(प्राकृत निर्वाण कांड)

भाषा निर्वाण कांड भगवतीदास कृत

नंग अनंग कुमार सुजान, पंच कोडि अरु अर्ध प्रमाण।
मुक्ति गए सिद्धनागिरिसीस, ते वन्दों त्रिभुवनपति ईस॥१०॥

---

[१८] पन्ना राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है–उत्तरमें बांदा, अजयगढ़, भैसौंदा; पूर्वमें कोठी, नागोद, सुहावल, अजयगढ़; दक्षिणमें जबलपुर, दमोह, पश्चिममें छत्रपुर, चरखारी।

पन्नाके राजा ओरछा वंशके बुन्देले राजा हैं। १६७१ में छत्रसाल बुन्देलखंडका राजा था। राज्यधा[illegible] [illegible]जर थी। सन् १६७९ में पन्नामें बदली

यहां हीरेकी खानें प्राचीनकालसे १७ वीं शताब्दी तक प्रसिद्ध रहीं।

(१) नयनागिरि या रेशिंदेगिरि–ता० मल्हरा–वरवाहोसे १२ मील। यहां पहाडीपर ४० दि० जैन मंदिर हैं। कुछ सं० १७०२ में बने हैं। वार्षिक मेला होता है, जहां बहुत दि० जैनी एकत्रित होते हैं। सन् १८८६ में १ लाख जैनी एकत्रित हुए थे। यह तीर्थ है। दि० जैन शास्त्रोमें प्रमाण है कि यहा श्री पार्श्वनाथजीका समवशरण आया था व वरदत्त आदि पांच मुनियोने मुक्ति पाई है।

प्रमाण—

पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच।
रिस्सिंदेगिरिसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१९॥

भाषा प्रमाण—

समवशरण श्री पार्श्वजिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जहाज॥

(२) सिगोरा–ता० पवई–यहांसे १४ मील। यहा पाच विशाल जैन मूर्तियें है जिनको ग्रामीण पंच पाडव कहते है।

---

(१९) अजयगढ़ राज्य।

यह मेहरके पास है–यहा ७७१ वर्गमील स्थान है। यहाके राजा छत्रसालके वंशज बुन्देला राजपूत हैं। अजयगढके किलेके सिवाय पुरातत्व सम्बन्धी दो और स्थान हैं (१)–ग्राम वच्छोन–अजयगढ़से उत्तर पूर्व १९ मील। यहां एक बडे नगर व दो

सरोवरोके शेषाश हैं। यह कहावत है कि इसको परमालदेव या परमार्दिदेव चंदेल राजा (११६९–१२०३) के मंत्री वच्छराजने बसाया था। यहा भितारिया ताल प्रसिद्ध है। सन् १३७६ का शिलालेख मिला है जिसमें नगरको वच्छुम लिखा है। (२) नाचना यह गंजसे २ मील। प्राचीन नाम कुथारा है। यह १३वी शताब्दीमें सोहालपालके राज्यमें प्रसिद्ध था। यहा गुप्त समयके दो ध्वंश पुराने हिन्दू मंदिर हैं।

(१) अजयगढ़—नगर व गढ़—जिस पर्वतपर यह किला है उसको केदार पर्वत कहते हैं। यह १७४४ फुट ऊँचा है। शिलालेखमें नाम जयपुर दुर्ग है। यह किला नौमी शताब्दीके अनुमान बना था। बहुतसे प्राचीन जैन मंदिरोंकी सुन्दर शिल्प कारीगरी मुसल्मानोंके बनाए मकानोंकी भीतोंपर दिखलाई पडती है। पर्वतपर बहुतसे सरोवर हैं। तीन जैन मंदिरोंके ध्वंश अभी तक खडे हैं। इनकी रचना १२ वीं शताब्दीकीसी है और खजराहाके मंदिरोंसे मिलते जुलते हैं। पाषाणोंपर बहुत बढ़िया खुदाई है। ये मंदिर किसी समय बहुत ही सुन्दर होंगे। अनगिनती खंडित मूर्तियें, खम्भे, आसन पडे हुए हैं। यहाके मकानोंमें सन् ११४१ से १३१५ तकके चंदेल राजाओंके कई लेख मिले हैं।

(Cunningham A. S. R Vol VII P 46 and XXI P 46)

(२०) छत्तरपुर राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है—उत्तरमें हमीरपुर। पूर्वमें केननदी, पन्नाव; पश्चिममें बीसावर और चरखारी। दक्षिणमें बिजावर और पन्ना व दमोह। इसमें ११९८ वर्गमील स्थान है। इसको १८वीं शत-

ब्दीके पिछले भागमें कुंवर मोनशाह पोंवार या पमारने वसाया था।

यहां वहुत प्रसिद्ध पुरातत्त्वके स्मारक खजराहामें व राजगढ़के पास केननदीके पश्चिम मनियागढ़में हैं। राजगढ़ पुराना किला है इसको अठकोट कहते हैं। जंगलमें बहुतसे ध्वंश स्थान हैं।

(१) खजराहा—छत्रपुरके पास। यह मंदिरोंके लिये प्रसिद्ध है। शिलालेखोंमें इसका प्राचीन नाम खज्जूरवाहक है। चाद भाटने इसे खजूरपुर या खज्जिनपुर कहा है। नगरके द्वारपर दो सुवर्ण रंगके खजूरके वृक्ष हैं। प्राचीन कालमें यह वहुत प्रसिद्ध जगह थी। यह जिझौती राज्यकी राज्यधानी थी जिसको अव बुन्देलखण्ड कहते हैं। हुईनसांग चीन यात्रीने भी इसका वर्णन किया है। यहांके मंदिर सन् ९९० से १०९० तकके हैं। यहांके लेख वहुत उपयोगी हैं। इन मंदिरोंके तीन भाग हैं–(१) पश्चिमीय–यहां शिव और विष्णुके मदिर हैं। (२) उत्तरीय–एक वडा और कुछ छोटे मंदिर हैं। सव विष्णुके हैं व कई स्तूप या टेर हैं। (३) दक्षिण पूर्वीय भाग विलकुल जैन मन्दिरोंसे पूर्ण हैं। इनमें चौसठ योगिनी घनटाईका मदिर सवसे पुराना है। इसमें वडे सुन्दर खम्भे हैं। इसके शेषांश छठी या ७ वीं शताब्दीके हैं जो ग्यारसपुरके मंदिरोंके समान हैं। एक चंदेललेख सन् ९५४ का है। (Cunnimghm Vol II P. 412 & Vol. VII P 5, Vol X P. 16, Vol XX P. 55 and Epigraphica Indica Vol I P. 121.)

कनिंघम जिल्द दोमें है कि यह खजराहा महोवासे दक्षिण ३४ मील है। घंटाई जैन मंदिर नं०-२१ में वहुतसी खंडित जैन मूर्तियें हैं। एकपर लेख है संवत ११४२ श्री आदिनाथ, प्रतिष्ठापक श्रेष्ठी वीवनशाह भार्या सेठानी पद्मावती। नं० २२

का जैन मंदिर प्राचीन छोटा श्री पार्श्वनाथजीका है। तीन ला मूर्तियोंकी हैं। ऊपर १ मूर्ति पद्मासन है। नीचे दो लाइनमें खं आसन मूर्तियें हैं। नं० २३–२४ श्री आदिनाथ और पार्श्वनाथ जीके क्रमसे हैं। मंदिर नं० २९ सबसे बड़ा व सबसे सुन्दर है यह ६० फुटसे ३० फुट है। एक जैन साहूकारने इसका जीर्णो द्धार कराया था। मध्यवेदीके कमरेके द्वारपर नग्न पद्मासन जैन मूर्ति है। इसके बगलमें दो नग्न खड़े आसन हैं। द्वारके बांई तरफ ११ लाइनका लेख है जिसमें है कि धंग राजाके राज्यमें संवत् १०११ या सन् ९५४ में भव्यपाहिलने जिननाथके इस मंदिरको एक बाग दान किया। इस खजराहाका वर्णन संयुक्त प्रांतके प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ ४१ से ४३ तकमें दिया है। घंटाईके मंदिरमें श्री शांतिनाथकी मूर्ति १४ फुट ऊंची है। इसपर "सं० १०८ श्रीमान् आचार्य पुत्र श्री ठाकुर श्री देवधरसुत सुतश्री, शिविश्री चंद्रेयदेवाः श्रीशांतिनाथस्य प्रतिमा कारितेति" है। नकल एक लेखकी-

खजराहाका लेख।

(Ep. Indica Vol. I Ins. No. III of a Jain Temple or left door Jumb of temple of Jain Nath at खजराहा of 1011 Samvat.)

(१)–ओं ॥ संवत १०११ समये ॥ निजकुलधवलोयं (२) दिव्यमूर्ति स्वशील, शमदमगुणयुक्त सर्व्व–(३) सत्त्वानुकंपी। स्वजनजनित तोषो धांगराजेन (४) मान्य, प्रणमति जिननाथो यं भव्य पाहिल (५) नामा ॥ १ ॥ पाहिलवाटिका १ चंद्रवाटिका २, (६) लघुचंद्रवाटिका ३, शंकरवाटिका ४, पंचाई (७) तल्वाटिका ५, आम्रवाटिका ६, धंगवाड़ी, (८) पाहिलवंशे [illegible]

यः कोपि (९) तिष्ठति तस्य दासस्य दासोऽयं मम दतिस्तु पाल (१०) येत् ॥ महाराज गुरु श्रीवासवचंद्रः वैशाखे (११) सुदी ७ सोम दिने ॥

उल्था।

संवत १०११ में–पवित्रकुली सुंदरमूर्ति शील, शम, दम युक्त, दयावान, स्वजन परिजनका उपकारी, भव्य पाहिल जो धांगराजासे मान्य है सो श्री जिननाथको नमस्कार करता है। मैंने पाहिलवाग, चंद्रवाग, लघुचंद्रवाग, शंकरवाग, पंचाइलवाग, आमवाग तथा धांगवाडी दान की है, पाहिलवंशके नाश होनेपर जो कोई वंश रहे उसके दासोंका मैं दास हूं सो मेरे इस दानकी रक्षा करे। महाराज गुरु श्री वासवचंद्रके समयमें वैशाख सुदी ७ सोमवार।

लेख नं० ८ (ए० ई० पृष्ठ १५३)

एक जैन मूर्तिपर–"ओं संवत १२१९ माघ सुदी ९ श्रीमद् मदनवर्म्मदेव प्रवर्द्धमान विजयराज्ये गृहपतिवंशे श्रेष्ठिदेदू तत्पुत्र पाहिछः पाहिछांगरुह साधुसाल्हे तेनेयं प्रतिमा कारितेति। तत्पुत्राः महागण, महीचंद्र, सिरिचंद्र, जिनचंद्र, उदयचंद्र प्रभृति। संभवनाथं प्रणमति नित्यं मंगलं महाश्रीः रूपकार रामदेवः।"

उल्था।

भावार्थ–मदनवर्मदेवके राज्यमें संवत १२१९ में गृहपति कुलधारी देदू उसके पुत्र पाहिल, पाहिलके पुत्र साल्हेने प्रतिमा कराई उसके पुत्र महागण आदि नमस्कार करते हैं।

नोट–गृहपतिकुल शायद परिवार वंश हो।

(२) छत्रपुर नगर–बांदासे ६४मील। यहां बुंदेदलाल और अमरसिंह चौधरीके बनाए जैन मन्दिर हैं।

(२१) बीजावर राज्य ।

इसकी चौहद्दी यह है–उत्तरमें छत्रपुर । दक्षिणमें पन्ना व सागर । पूर्वमें छत्रपुर, पश्चिममें ओर्छा ।

यहा ९७३ वर्गमील स्थान है ।

(१) सिद्धपा या द्रोणगिरि–ता० गुलगज–यह जैन तीर्थ-स्थान है । द्रोणागिरि पर्वतपर बहुत सुन्दर दि० जैन मंदिर है । वार्षिक मेला होता है तब बहुत दि० जैनी एकत्र होते हैं । दि० जैन शास्त्रानुसार यहासे श्री गुरुदत्त आदि मुनींद्र मोक्ष पधारे हैं ।

प्रमाण—

फलहोडीवरगामे, पच्छिम भायम्मि दोणगिरि सिहरे ।
गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥ १४ ॥
(प्राकृत निर्वाणकाड)

भाषा भगवतीदास कृत—

फलहोडी बडगाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहां, मुक्ति गए वंदौं नित तहां ॥

---

(२२) रीवां राज्य (बघेलखंड एजंसी) ।

बघेलखंड एजंसीकी चौहद्दी यह है–उत्तरमें मिरजापुर, अलाहाबाद, बांदा । दक्षिणमे विलासपुर, माडला, जब्बलपुर । पश्चिममें जब्बलपुर । पूर्वमें–छोटा नागपुर । यहा १४३२३ वर्गमील स्थान है ।

रीवां राज्य–यहाके राजा बघेल राजपूत सोलकी वशसे उत्पन्न है जो गुजरातमें १० वीं से १३ वीं शताब्दी तक राज्य

करते थे। गुजरातके राजाका भाई व्याघ्रदेव १३ वीं शताब्दीके मध्यमें यहां आया और कालिंजरसे दक्षिण पूर्व १८ मील मरफेका किला प्राप्त किया। इसका पुत्र करणदेव था जिसने मांडलाकी कलचूरी (हैहय) राजकुमारीको व्याहा और दहेजमें सन १२९८ में बांधोगढ़का किला प्राप्त किया। करणदेव बादशाह अलाउद्दीनके नीचे राज्य करता था। सन् १४९४ में पन्नाका राजा भीर मारा गया तब उसका पुत्र सालिवाहन राजा हुआ। फिर उसका पुत्र वीरसिंह देव हुआ जिसने पन्ना राज्यमें वीरसिंहपुर बसाया। फिर उसका पुत्र वीरभानु फिर रामचन्द्र राजा हुआ, यह बादशाह अकबरका समकालीन था। रामचन्द्रके दरबारमें तानसेन प्रसिद्ध गवैय्या था। फिर क्रमसे वीरभद्र, विक्रमादित्य, अनूपसिंह (१६४०–६०) अणुरुद्धसिंह (१६९०–१७०९), उद्धृतसिंह (१७००–९९) हुए सन् १८१२ में राजा जयसिंह रीवांमें राज्य करते थे। इसने कई पुस्तकोंका सम्पादन किया है। यह विद्वान् था। १८९४में राजा रघुराज हुए। सन् १८८०में महाराज वेंकट रामन गद्दीपर बैठे।

पुरातत्त्व—मुख्य स्मारक माधोगढ़, रामपुर, कुंडलपुर, अमरपाटन, मझौली व ककोनसिंह पर हैं। केवती कुंडपर महानदी ३३१ फुटकी ऊंचाईसे गिरती है। इसको बहुत पवित्र माना जाता है। इसीके पास सन् ई० से २०० वर्षका प्राचीन एक शिलालेख है जैसा उसके अक्षरोंसे प्रगट है।

रीवांसे १२ मील पूर्व गूर्गीमसौनमें बहुतसे प्राचीन स्मारक हैं जिनसे प्रगट होता है कि यह बहुत प्रसिद्ध स्थान था। यह

ख्याल किया जाता है कि प्राचीन कौसाम्बी नगरका यही स्थान है। यहां एक सुन्दर किला है जिसको रेहुत कहते हैं। इसको करणदेव चेदी (१०४०–७०) ने बनवाया था। इसका २॥ मीलका घेरा है। भीतें ११ फुट मोटी हैं व मूलमें २० फुट ऊंची थीं। इसके चारों तरफ खाई थी जो ५० फुट चौडी व ९ फुट गहरी थी। यहां मंदिर अधिकतर ब्राह्मणोंके हैं, यद्यपि कुछ दिगम्बर जैन मूर्तियां चंद्रेहीके पास मिलती हैं। सोननदीके पूर्व एक बड़ा स्थान है व सुन्दर मंदिर हैं। मोरापर तीन समुदाय गुफाओंके हैं जिनको बुरादन, छेवर व रावण कहते हैं। ये चौथीसे नौमी शताब्दीकी हैं। कुछोंमें मूर्तियें हैं।

यहांके मुख्य स्थानोंका वर्णन—

(१) अमरकंटक–सहडोलसे २९ मील एक ग्राम। यह मैकाल पहाड़ीका (जो ३००० फुट ऊँची है) पूर्वीय कोना है। यहांसे नर्बदानदी निकली है ऐसा प्रसिद्ध है। यहां कपिलधाराका जलपतन है। पांडव भीमके चरणचिह्न हैं। यहां खजराहाके समान बहुत ही बढ़िया मंदिर हैं जिनको करणदेव चेदी (१०४०–७०) ने बनवाया था। १४ दूसरे मंदिर हैं।

(Cunn : A. S. R. Vol. VII. P. 22).

(२) बांधोगढ़–कटनीके पास तालुका रामनगर–यहां पुराना किला है। यह प्राचीन ऐतिहासिक जगह है। जिस पहाडी पर यह किला है वह २६६४ फुट ऊंची है। उसीमें बमनिया पहाड़ी शामिल है। १३ वीं शताब्दीमें करणदेव कलचूरी ,राजकुमारीके साथ बघेलाको मिला (Cunni. Vol. VII P. 22)

(३) सुहागपुर—सहडोलसे २ मील एक ग्राम। यहां एक बड़ा महल है जो पुरानी इमारतोंसे बना है। बहुतसे खम्भे मंदिरोंसे लिये गए हैं। उनमें बहुतसे जैन मुर्ति व पाषाणोंके स्मारक हैं। यह प्राचीन जैनियोंका स्थान था। बहुतसी जैन तीर्थंकरोंकी मूर्तियां चारों तरफ दिखलाई देती हैं। इस ग्रामसे दक्षिण पूर्व १ मील पुरानी वस्तीके खंडहर हैं।

यह विलासपुरके पास घाटीके कौनेमें है। चेदी राजाओंके बिल्हारीके शिलालेखमें इसका नाम सौभाग्यपुर है। स्थानीय ठाकुरके घरमें बहुतसे प्राचीन पाषाण हैं उनमें नीचे प्रकार भी पाषाण हैं।

(१) जैन देवी सिंहासनपर बैठी, भुजाओंमें एक जैन बालक है, एक आम्रवृक्षके नीचे बैठी है। वृक्षके ऊपर एक पद्मासन जैन मूर्ति है। उसके ऊपर सिंहासन पर दूसरी पद्मासन जैन मूर्ति है इसके हरतरफ बगलमें एक खड़े आसन जिन हैं व खड़े इन्द्र हैं। (२) एक बैठे आसन शासनदेवी है जिसकी १२ भुजाएं हैं। ऊपर पद्मासन मूर्ति श्री पार्श्वनाथकी है। (३) एक सुन्दर मूर्ति ऋषभदेवकी है। बैलका चिह्न है।

(४) रीवांनगर—गूर्गीमसौन नामके पुराने नगरसे एक बहुत सुन्दर खुदाईका द्वार यहां लाया गया है। यह नगर यहांसे पूर्व १२ मील है।

(५) अल्हाघाट—ता० हुजूर—यह प्रसिद्ध स्थान है। इसमें नरसिंहदेव कलचूरी राजाका लेख वि० सं० १२१६ का है।

(६) भूमकहर—ता० रघुराजपुर—सतनासे उत्तर पश्चिम ७ मील। यहां एक पुराना किला है जिसको बघेलोंने बनवाया था।

अब ध्वश है। पानीके झरनेके पास बहुतसे जैन तीर्थङ्करोकी मूर्तियोसे अकित पाषाण हैं। इनको लोग पाच पाडव कहते हैं।

(७) गूर्गीमसौन–ता० हुजूर (गढ) रीवासे १२ मील। यहा कुछ दि० जैन मूर्तिया चारों ओर मिलती हैं। प्राचीन कौसाम्बीका स्थान है (ऊपर देखो)

(८) मुकुन्दपुर–ता० हुजूर–रीवासे दक्षिण १० मील पुराने किलेके ध्वश हैं। खजराहाके समान यहा बहुतसी जैन मूर्तियां चारो तरफ मिलती हैं।

(९) मार या मूरी–ता० वरडी। यहा ४ थी से नौमी शताब्दीकी कुछ गुफाएं हैं।

(१०) पाली–ता० सुहागपुर–हिन्दुओंके मदिरोमे प्राचीन जैन मूर्तियोंके बहुतसे स्मारक देखे जाते हैं।

(११) पियावान–ता० रघुराजनगर–सेमरियासे ७ मील। यहा दाहालुके कलचूरी राजा गागेयदेवका लेख चेदी स० ७८९ या सन् १०३८ का मिलता है।

---

(२३) नागोद राज्य या उंछहरा राज्य।

यह राज्य सतनासे पूर्व है। यहा ९०१ वर्गमील स्थान है। यहा परिहार राजपूतोके वशज राज्य करते हे। सन् १३४४में यहा राजा धारासिंह थे व सन् १४७८में यहा राजा भोज थे। यहा प्राचीन स्मारक बहुत हैं परन्तु उनकी अभीतक खोज नही की गई है। यहांपर होकर मालवा और दक्षिण भारतसे कौसाम्बी और श्रावस्तीको मार्ग गया था। भरहुतके पास एक सुन्दर बौद्ध स्तूप पहले मौजूद था

जिसके अंश कलकत्ता म्यूजियममें गए हैं। यहां सांची स्तूपके समान था। इसके एकद्वारपर सन् ई०से पहली या दूसरी शताब्दी पहलेका लेख संग वंशका था। दूसरे मुख्य स्थान लालपहाड़ पर हैं जो इस स्तूपके पास एक पहाड़ी है। यहां बड़ी गुफा है व सन् ११९८ का कलचूरी वंशका शिला लेख है। संकरगढ़ और खोली पर भी कई उपयोगी लेख सन् ४७५ से ५९४ तकके पाए गए हैं। भूमारा, मझगावां, करीतलाई व पटैनी देवी पर भी स्मारक हैं। पटैनीदेवी पर चौथी या पांचमी शताब्दीका गुप्त वंशीय समयका एक छोटा सुरक्षित मंदिर है इसमें १०वीं या ११ वीं शताब्दीके कुछ जैन स्मारक हैं। (देखो बर्णन जिला जबलपुर)

पश्चिम भाग अर्कीलाजिकल सरवे रिपोर्ट सन् १९२०में विशेष कथन यह है कि पटैनीदेवीके मंदिरके ऊपर तीन आले हैं। हरएकमें जैन मूर्तियां हैं। भीतर मंदिरमें देवीकी मूर्ति और पीछे पाषाणमें १२ वीं शताब्दीकी जैन मूर्तियां अंकित हैं। मुख्य मूर्तिके हर तरफ नौ हैं। पहली लाइनमें मध्यमें श्री नेमिनाथ हैं। इसके हरतरफ २ खड़े आसन जिन हैं अन्तमें एक जिन बैठे हुए आलेमें हैं। वाऐंसे दाहनेको जो लाइन है उसमें ये नाम देवियोंके हैं (१) बहुरूपिणी (२) चामुंड (३) सरस्वती (४) पद्मावती (५) विजया (६) अपराजिता (७) महामनुसी (८) अनंतमती (९) गांधारी (१०) मानुसी (११) ज्वालामालिनी (१२) मानुसी (१३) वज्र-संकला (१४) मानुजा (१५) जया (१६) अनन्तमती (१७) वैरोता (१८) गौरी (१९) महाकाली (२०) काली (२१) बुध-दाधी (२२) प्रजापति (२३) वाहिनी।

(२४) जसो या जस्सो राज्य।

यह नागोदके पास है। यहां ७२९ वर्गमील स्थान है। यह जसेस्वरी नगरका अपभ्रंश है। यहांके महलको महेन्द्रनगर कहते है। यहां अप्परपुरी और हर्दीनगरमें बहुतसे जैन और हिन्दुओंके स्मारक फैले पड़े है। (C. A. S Vol. XXI P. 99) इस महलके पुराने द्वारपर बहुतसी जैन मूर्तियां लगी हैं।

तीसरा भाग।

प्राचीन जैन स्मारक–राजपूताना–

राजपूतानाकी चौहद्दी इस प्रकार है:—

पश्चिममें सिंध। उत्तर पश्चिममें पंजाब, बहावलपुर। उत्तर और उत्तर पूर्वमें पंजाब। पूर्वमें संयुक्त प्रदेश, ग्वालियर। दक्षिणमें मध्य भारत और बम्बई।

इसमें १३०४६२ वर्गमील स्थान हैं इसीमें अजमेर, मड़वाड़ा भी शामिल हैं जो २७११ वर्गमील है।

इसकी व्यवस्था यह है कि:—राज्य जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर पश्चिम और उत्तरमें है। शेखावाटी (जैपुरका भाग) और अलवर उत्तर पूर्वमें हैं। जैपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूंदी, कोटा, झालावाड़ पूर्व और दक्षिण पूर्वमें है। परतापगढ़, वांसवाडा, डूंगरपुर, उदयपुर दक्षिणमें और सिरोही दक्षिण पूर्वमें हैं। मध्यमें अजमेर, मडवाड़ा प्रांत, किशनगढ़, शाहपुर, लावा और टोंकका एक भाग है।

यहां आबू पहाड़ ५६५० फुट ऊंचा है।

इतिहास—यहां भी बौद्धोंका राज्य था। महाराज अशोकके शिलालेखके दो पाषण वैराटमें हैं जो राज्य जैपुरमें है। सन् ई० से दूसरी शताब्दी पहले बेकटीरियाके ग्रीक या यूनान लोग उत्तर और उत्तर पश्चिमसे आए। उनके विजय प्राप्त देशोंमें यहां प्राचीन शहर नगरी (इनको माध्यमिक भी कहा है) या जो

चित्तौडके निकट है तथा कालीसिंध नदीके चारो ओरका देश है। ग्रीक बादशाहोंमेंसे अपोलेदस और मिनैन्दर इन दोके सिके उदयपुर राज्यमे पाए गए है। दूसरीसे चौथी शताब्दी तक सीथिया या शक लोग दक्षिण और दक्षिण पश्चिममें वलवान रहे। गिरनार पर्वतके पास जो १५० सन् ई० का शिला लेख है उसमे वर्णित है कि रुद्रदमन मारु (माडवाड) और साबरमती नदीके चहुओर देशका शासक था। मगधके गुप्त वशने चौथीसे छठी शताब्दी तक राज्य किया जिसको राजा तोरमानके आधिपत्यमे श्वेत हूनोने नष्ट किया। सातवीं शताब्दीके प्रथम अर्द्धमें थानेश्वरके राजपूत हर्षवर्द्धन और कन्नौनके वैश्य हर्षवर्द्धनने देशमें शासन किया और नर्वदा तक विजय प्राप्त की, उसमें राजपूताना भी शामिल था। हुइनसाग चीन यात्री (६२९–४५) के समयमे राजपूतानाके चार विभाग थे।

(१) गुर्जर–जिसमे बीकानेर, पश्चिम राज्य और शेखावाटीका भाग शामिल था। (२) वैराट–जिसमे जैपुर, अलवर और टोकका भाग था। (३) मथुरा–जिसमे तीन पूर्वीय राज्य भरतपुर, धौलपुर और करौली थे। (४) बदरी–जिसमे दक्षिण और कुछ मध्यभारतके राज्य शामिल थे।

सातवी और ग्यारहवी शताब्दीके प्रारम्भके मध्यमे राजपूता नामे बहुतसे वश उठ खड़े हुए। गहलोट या सेशाद्री वशज गुजरातसे आए और मेवाडके दक्षिण पश्चिम भागको ले लिया। उनका सबसे प्राचीन लेख ता० ६४६ का राजपूतानामें मिला है। पीछे परिहारोने राज्य किया जिन्होने अपना शासन जोधपुरके मांडोरमे

प्रारम्भ किया। फिर आठवीं शताब्दीमें चौहान और भाटियोंने राज्य किया जो क्रमसे सांभर और जैसलमेरमें बसे। दशवीं शताब्दीमें परमार और सोलंकी दक्षिण पश्चिममें बलवान हुए। अब राजपूतानामें तीन वंश प्रसिद्ध हैं—सेसोदियां, भाटिया और चौहान। इनमेंसे पहले दो तो अपने मूलस्थानोंमें जमे रहे जब कि चौहान सिरोही बूंदी, कोटामें फैल गए। जादोवंशजोंने ११वीं शताब्दीमें करोलीमें स्थान जमाया। कछवाहा वंशज ग्वालियरसे जैपुरमें सन् ११२८ में आए। राठौर वंशज कन्नौजसे माडवाडमें १३ वीं शताब्दीमें आए।

पुरातत्व–जैपुरके वैराटमें दो अशोकके शिलालेख हैं तथा सन् ई० से तीसरी शताब्दी पहलेका लेख चित्तौडके पास नगरी स्थानपर है। झालावाडमें खोलवीपर पहाडमें कटे मंदिर तथा गुफाएं सन् ७००से ९०० तककी हैं। ये बौद्धोंका पुरातत्व है। जैनियोंके बहुत प्रसिद्ध कारीगरीके मंदिर ११ वीं व १३ वीं शताब्दीके आबू पहाडमें दिलवाडेपर हैं तथा इसी कालके अनुमानका एक जैन कीर्तिस्तम्भ चित्तौडमें है, तौभी सबसे पुराने जैन मंदिर परतापगढमें सुहागपुराके पास हैं। बांसवाडामें कालिंजरामें हैं तथा जैसलमेर और सिरोहीके कई स्थानोंपर हैं, और पुराने जैन स्मारकोंके शेष भाग उदयपुरके पास अहारमें तथा राजगढ़में और अलवर राज्यके पारनगरमें हैं।

हिन्दुओंका पुरातत्त्व बयाना (भरतपुर) में एक पाषाणका स्तंभ सन् ३७२ का है। मुकुन्दद्वारामें पांचवीं शताब्दीका ध्वस्त स्थान है। ११ वीं शताब्दीके ध्वस्त मंदिर झालरापाटनके पास

चन्द्रावतीमें है खुदे हुए मंदिर उदयपुरमें वरोली पर व नागदा पर क्रमसे नौमी और ग्याहरवीं शताब्दीके हैं तथा चितौडमें एक जयस्तम्भ १९ वीं शताब्दीका है।

जैनियोंकी संख्या—सन् १९०१ में ३॥ फीसदी थी अर्थात् कुल जैनी ३४२९९९ थे जिनमें ३२ सैकड़ा दिगम्बरी, ४९ सैकडा श्वेताम्बरी मूर्तिपूजक तथा शेष स्थानकवासी थे।

[१] उदयपुरराज्य (उदयपुर रेजिडेन्सी)

उदयपुर रेजिडंसी या मेवाड़में ४ राज्य है। उदयपुर, वासवाडा, डूंगरपुर और परतापगढ।

इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अजमेर, मरवाडा और शाहपुर, उत्तर पूर्वमें जैपुर और बुंदी। पूर्वमें कोटा, और टोंक, दक्षिणमें मध्यभारत पश्चिममें अरावली पहाड।

सन् १९०१ में यहा जैनी ६ फी सदी थे।

उदयपुर राज्य—इसकी चौहद्दी—उत्तरमें अजमेर मडवाडा और शाहपुर, पश्चिममें जोधपुर और सिरोही। दक्षिण—पश्चिममें ईडर राज्य; दक्षिणमें डुगरपुर, वासवाडा, परतापगढ। पूर्वमे नीमच। उत्तरपूर्वमे जेपुर। यहा १२६९१ वर्गमील स्थान है।

इतिहास—मेवाडके महाराणा अपने दर्जेमें बहुत ऊचे हैं। इनकी उत्पत्ति श्रीरामचन्द्रके पुत्र कुशसे है। इस वंशने अपनी कन्या किसी मुसलमानको नही विवाही, किन्तु उनसे भी सम्बन्ध वन्द किया जिन्होने कन्या मुसलमानोंको दी थी। कुशके वंशजोका अंतिम राजा अवधमें सुमित्र हुआ है। इसकी

कुछ पीढ़ी पीछे कनकसेनसे काठियावाड़में वल्लभीका राज्य स्थापित किया गया। बर्बर आक्रमणकारोंके सामने वल्लभीके राजाओंका पतन हुआ उनका मुखिया शिलादित्य मारा गया। उसकी गर्भवती रानीसे उत्पन्न गुहादित्यने ईडर और मेवाड़में राज्य किया। इससे गोहलट वंश उत्पन्न हुआ। गुहादित्यके पीछे छठा राजा महेन्द्र द्वि० था जिसका नाम बापा प्रसिद्ध था। इसकी राज्यधानी उदयपुरके उत्तर नागदापर थी। इस बापाने चित्तौड़पर चढ़ाई की जहां मोरी जातिके मानसिंह तब राज्य कर रहे थे। बापाने इसको हटा दिया और वहां सन् ७३४ में अपना राज्य स्थापित किया तथा रावलकी उपाधि धारण की।

इनका समाचार १४वीं शताब्दीके प्रारम्भ तक विदित नहीं हुआ। इस १४वीं शताब्दीके प्रारम्भमें रतनसिंह प्रथम महाराणा था तब बादशाह अलाउद्दीनने सन् १३०३में चढ़ाई की। रतनसिंह युद्धमें मारा गया और चित्तौड़का किला ले लिया गया। पीछे राणा हमीरसिंहने चित्तौड़को फिर हस्तगत किया। यह सन् १३६४ में मरा। राणा लक्षसिंह या लाखा (१३८२–९७) के समयमे जावरमें चांदीकी खानें मिलीं। पीछे प्रसिद्ध राणा कुंभ (१४३१–६८) हुआ जिसने गुजरातके मुहम्मद खिलजी कुतुबुद्दीनको हरा दिया और चित्तौड़में अपनी विजयकी स्मृतिमें जयस्तम्भ स्थापित किया। इसने बहुतसे किले बनवाए जिनमें मुख्य कुंभलगढ़ है। राणा रायमलने १४७३ से १५०८ तक राज्य किया फिर राना संग्रामसिंह या राना सांगा हुए। इनके समयमें मेवाड़ बहुत ही उत्कर्षयुक्त था। राणा सांगाने बाबर बादशाहसे सन् १५२७में

युद्ध किया और उसे जखमी किया। इसका पुत्र रतनसिंह द्वि०या विक्रमादित्य हुआ इसको इसके भाई वणवीरने १९३९में मार डाला। इसके पीछे उदयसिंहने १९३७से ७२ तक राज्य किया। इसीने १९९९में उदयपुर बसाया। १९६७में अकबरने चित्तौड़पर चढ़ाई की और उसे लेलिया। पीछे उसका बड़ा पुत्र प्रतापसिंह राणा राजा हुआ इसने १९७२से ९७ तक राज्य किया। बीचमें अकबरने इसे १९७६में हरा दिया तब यह सिंधकी तरफ भाग गया। उस समय उसके मंत्री प्रसिद्ध **भीमासाह** जैनने अपनी एकत्रित सर्व सम्पत्ति राणाकी मददको देदी। इसके बलसे प्रतापसिंहने अपना खोया हुआ राज्य फिर प्राप्त कर लिया। उसके पीछे उसके पुत्र अमरसिंह प्रथमने राज्य किया तब बादशाह जहांगीरने उसे कष्ट दिया, सन् १६१४में दोनोंमें संधि होगई सो इस शर्तपर कि राणा स्वयं दर्बारमें हाजिर हो परन्तु उसने अपने पुत्रको ही भेजा। पीछे राणा करमसिंह (१६२०–२८) हुए। फिर उसका पुत्र जगतसिंह राणा (१६२८–६२) हुआ इसके समयमें बहुत शांति रही। फिर राणा राजसिंह प्रथम (१६९२–१६६०)हुआ। उस समय बादशाह औरंगजेबने चढ़ाई की और चित्तौड़के मंदिरोंका नाश किया। इसीके समयमें सन् १६६२में दुर्भिक्ष पड़ा तब प्रजाको कष्टसे बचानेके लिये इसने सरोवरका तट बनवाया जिससे प्रसिद्ध झील कंकरोली पर हो गई जिसको राजसमन्द कहते हैं। उसके पुत्र जयसिंहने १६९८ तक राज्य किया। इसने प्रसिद्ध धेबार झील बनवाई जिसको जयसमन्द कहते हैं। फिर अमरसिंह द्वि०ने १६९८से १७१०तक राज्य किया। फिर नीचे प्रमाण राणा हुए संग्रामसिं:

द्वि० (१७१०–३४), जगतसिंह (१७३४–५१), प्रतापसिंह द्वि० (१७५१–५४), राजसिंह द्वि० (१७५४–६१), अरिसिंह द्वि० (१७६१–७३), हमीरसिंह द्वि० (१७७३–७८), भीमसिंह द्वि० (१७७८–१८२८),जवानसिंह (१८२८–३८), सरूपसिंह (१८३८–६१), संभूसिंह (१८६१–७४), सज्जनसिंह (१८७४–७६), राणा फतहसिंह अब विद्यमान हैं (१८८५)।

पुरातत्त्व–मेवाड़में पाषाणके लेख सन ई०से तीनसौ वर्ष पहलेसे लेकर अठारहवीं शताब्दी तकके बहुत पाए जाते हैं, परन्तु ताम्रपत्र कोई १२वीं शताब्दीके पहलेका नहीं मिलता है, इमारतोंमें सबसे प्राचीन इमारतके दो स्तूप हैं जो नगरीमें हैं। प्रसिद्ध इमारत चित्तौड़का १२वीं या १३वीं शताब्दीका कीर्तिस्तंभ व १५वीं शताब्दीका जयस्तंभ व बहुतसे मंदिर हैं। खुदे हुए पुराने मंदिर बरोली, भैंसरोरगढ़, विजोलिया, मेनाल (वेगूनके पास), एकलिंगजी व नागदा (उदयपुर शहरसे दूर नहीं) पर हैं।

जैन संख्या–सन १९०१में ६४६२३थी। भीलोंकी संख्या यहां ११८००० या ११ सैकड़ा है।

उदयपुरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) अहार–अहार नदीपर एक ग्राम–उदयपुरसे पूर्व २ मील। पूर्वकी ओर प्राचीन नगरके अवशेष हैं जिस नगरको कहावत है कि आसादित्यने उसी जगह बसाया था जहां उससे भी प्राचीन नगर तांबवती नगरी थी जहां विक्रमादित्यके तोंवर वंशीके बड़े लोग रहते थे। विक्रमादित्य उज्जैन जानेके पहले यहीं रहता था। इस नगर का नाम पहले आनंदपुर हुआ वही बिगड़कर अहार हो

युद्ध किया और उसे जखमी किया। इसका पुत्र रतनसिंह द्वि०या विक्रमादित्य हुआ इसको इसके भाई वणवीरने १५३५में मार डाला। इसके पीछे उदयसिंहने १५३७से ७२ तक राज्य किया। इसीने १५५९में उदयपुर बसाया। १५६७में अकबरने चित्तौड़पर चढ़ाई की और उसे लेलिया। पीछे उसका वडा पुत्र प्रतापसिंहराणा राजा हुआ इसने १५७२से ९७ तक राज्य किया। बीचमें अकबरने इसे १५७६में हरा दिया तब यह सिंधकी तरफ भाग गया। उस समय उसके मंत्री प्रसिद्ध भीमासाह जैनने अपनी एकत्रित सर्व सम्पत्ति राणाकी मददको देदी। इसके बलसे प्रतापसिंहने अपना खोया हुआ राज्य फिर प्राप्त कर लिया। उसके पीछे उसके पुत्र अमरसिंह प्रथमने राज्य किया तब बादशाह जहांगीरने उसे कष्ट दिया, सन् १६१४में दोनोंमें संधि होगई सो इस शर्तपर कि राणा स्वयं दर्बारमें हाजिर हो परन्तु उसने अपने पुत्रको ही भेजा। पीछे राणा करमसिंह (१६२०–२८) हुए। फिर उसका पुत्र जगतसिंह राणा (१६२८–५२) हुआ इसके समयमें बहुत शांति रही। फिर राणा राजसिंह प्रथम (१६५२–१६६०)हुआ। उस समय बादशाह औरंगजेबने चढ़ाई की और चित्तौड़के मंदिरोंका नाश किया। इसीके समयमें सन् १६६२में दुर्भिक्ष पड़ा तब प्रजाको कष्टसे बचानेके लिये इसने सरोवरका तट बनवाया जिससे प्रसिद्ध झील कंकरोली पर हो गई जिसको राजसमन्द कहते हैं। उसके पुत्र जयसिंहने १६९८ तक राज्य किया। इसने प्रसिद्ध धेबार झील बनवाई जिसको जयसमन्द कहते हैं। फिर अमरसिंह द्वि०ने १६९८से १७१०तक राज्य किया। फिर नीचे प्रमाण राणा हुए संग्रामसिंह

द्वि० (१७१०-३४), जगतसिंह (१७३४-५१), प्रतापसिंह द्वि० (१७५१-५४), राजसिंह द्वि० (१७५४-६१), अरिसिंह द्वि० (१७६१-७३), हमीरसिंह द्वि० (१७७३-७८), भीमसिंह द्वि० (१७७८-१८२८), जवानसिंह (१८२८-३८), सरूपसिंह (१८३८-६१), संभूसिंह (१८६१-७४), सज्जनसिंह (१८७४-७६), राणा फतहसिंह अब विद्यमान हैं (१८८५)।

पुरातत्त्व-मेवाड़में पाषाणके लेख सन ई०से तीनसौ वर्ष पहलेसे लेकर अठारहवीं शताब्दी तकके बहुत पाए जाते हैं, परन्तु ताम्रपत्र कोई १२वीं शताब्दीके पहलेका नहीं मिलता है, इमारतोंमें सबसे प्राचीन इमारतके दो स्तूप हैं जो नगरीमें हैं। प्रसिद्ध इमारत चित्तौड़का १२वीं या १३वीं शताब्दीका कीर्त्तिस्तंभ व १५वीं शताब्दीका जयस्तंभ व बहुतसे मंदिर हैं।खुदे हुए पुराने मंदिर बरोली, भैंसरोरगढ़, बिजोलिया, मेनाल (बेगूनके पास), एकलिंगजी व नागदा (उदयपुर शहरसे दूर नहीं) पर हैं।

जैन संख्या-सन् १९०१में ६४६२३थी। भीलोंकी संख्या यहां ११८००० या ११ सैंकड़ा है।

उदयपुरके प्रसिद्ध स्थान।

(१) अहार-अहार नदीपर एक ग्राम-उदयपुरसे पूर्व २ मील। पूर्वकी ओर प्राचीन नगरके अवशेष हैं जिस नगरको कहावत है कि आसादित्यने उसी जगह बसाया था जहां उससे भी प्राचीन नगर तांबवती नगरी थी जहां विक्रमादित्यके तोंवर वंशीके बड़े लोग रहते थे। विक्रमादित्य उज्जैन जानेके पहले यहीं रहता था।

गया। ध्वश स्थानोको धूलकोट कहते है। यहा १०वीं शताब्दीके चार लेख तथा सिक्के मिले है। कुछ पुराने जैन मंदिर अभी भी मिलते है। पुराने हिन्दू मदिरोके अवशेष भी मिलते है जिनमे बढिया खुदाई है।

(See I Todd antiquities to Rajputana Vol II 1832. Fergusson architecture 1848).

(२) **बिजोलिया**—यह बूंदीके कोनेपर है। उदयपुर शहरसे ११२ मील उत्तर पूर्व है व कोटासे पश्चिम ३२ मील है। इसका प्राचीन नाम **विन्ध्यावली** है। यहा **श्री पार्श्वनाथ** भगवानके पाच **जैन मदिर** है, एक मध्यमें व चार चार तरफ है। १२ वी शताब्दीके एक महलके अवशेष है। १२ वीं शताब्दीके दो पाषाण लेख भी है। एकमे अजमेरके चौहानोकी वशावली चाहूमानसे सोमेश्वर तक दी है। श्री पार्श्वनाथ मदिरके सरोवरके उत्तरओर भीतके पास महुवा वृक्षके नीचे पाषाण पर यह लेख है। इसमें यह लेख है कि पृथ्वीराजके पिता सोमेश्वरदेवने एक ग्राम रेवना भेट किया। लेख लिखाया महाजनने सवत १२२६ या सन् ११६९में (I A S Sengul Vol LV P I P 40) तथा दूसरेमें एक जैन काव्य है जिसका नाम **उन्नतशिषरपुराण** है, यह अभी प्रगट नहीं है।

(Tod Raj Vo II Cunningham A. S of N India Vol VI P 234 52)

यहा जो जैन मदिर है उनको अजमेरके चौहान राजा सोमेश्वरके समयमे सन ११७० में एक महाजन लोलाने बनवाए थे। इनमेंसे एकके भीतर एक छोटा मदिर और है। पाषाणलेखका सन् भी ११७० है।

Archeolgy progress report of W India 1905 में विशेष वर्णन यह है कि मध्य मंदिरके सामने दो चौकोर स्तम्भ हैं जिनमें जैनाचार्योके नाम हैं। तथा खास मंदिरके सामने एक खंभेवाला कमरा है जिसको नोचौकी कहते हैं। इसीके उत्तर चट्टानोंमें ऊपर खुदे दो लेख हैं। पहला लेख ११ फुट छ इंच व ३ फुट ६ इंच है। दूसरा १९ फुट और ९ फुट है। लोला महाजनने या तो पार्श्वनाथका मंदिर बनवाया हो या जीर्णोद्धार किया हो। इसने सात छोटे मंदिर और बनवाए थे। ये मंदिर इनसे भिन्न होंगे। मध्य मंदिरमें एक लेख किसी यात्रीका है जो वि. स. १२२६ चाहमान राज्यका है। A. P. R. W India 1906 में यहाके लेखोकी नकल दी है। नं. २१३७-३८ में जैन दि० आचार्योके नाम इस तरह हैं-मूलसंघ सरस्वती गच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वयी वसंतकीर्तिदेव विशालकीर्तिदेव, दमनकीर्तिदेव, धर्मचंद्रदेव, रत्नकीर्तिदेव, प्रभाचंद्रदेव, पद्मनंदि, शुभचंद्रदेव। इनमेंसे पहले लेख पर सं० १४८३ फागुण सुदी ३ गुरौ निषेधिका जैन आर्य्या बाई आगमश्री।

(सं. नोट-यह आर्यिका आगमश्रीकी स्मृतिमें है।) दूसरेपर फागुण सुदी २ बुधौ सं. १४६९ निषेधिका शुभचन्द्र शिष्य हेमकीर्तिकी। जिनपर ये दो लेख हैं उसी खंभेपर किसी साधुके चरणचिन्ह हैं व एक तरफ भट्टारक पद्मनंदिदेव तथा दूसरी तरफ भट्टारक शुभचन्द्रदेव अंकित हैं। इस लेखका न. २१३९ है। नं. २१४१ पार्श्वनाथ मंदिरके द्वारपर लेख है-महीधरका पुत्र मनोरथका नमस्कार हो सं० १२२६ वैसाख वदी ११।

(४) चित्तौड़-यह प्रसिद्ध किला है, एक लंबी पहाडी पर है

जो ५०० फुट ऊंची है तथा ३। मील लम्बी व आध मील चौड़ी है। चित्तौड़का प्राचीन नाम चित्रकूट है, जो मोरी राजपूतोंके सर्दार चित्रंगके नामसे प्रसिद्ध है। इन मोरी राजपूतोंने सातवीं शताब्दीके अनुमान यहां राज्य किया था जिनका ध्वंश महल अब भी दक्षिण भागमें है। बापा रावलने सन् ७३४में इसे मोरियोंसे लेलिया। यह मेवाड़की राज्यधानी सन् १५६७ तक रहा फिर राज्यधानी उदयपुर नगरमें बदली गई। जर्नलने एसिया सोसायटी बंगाल नं० ५५ पृष्ठ १८में है कि चित्तोरगढ़के महलकी भीतरी सहनमें एक लेख नं० ९ है जो कहता है कि वैशाखसुदी ५ गुरुवार सं० १३३५को रावल तेजसिंहकी धर्मपत्नी जैतल्लदेवीने श्यामपार्श्वनाथजीका मंदिर बनवाया, इसके लिये उसके पुत्र रावल कुमारसिंहने भूमि प्रदान की। कनिंघम रिपोर्ट नं० २३में सफा १०८में है कि गणेशपोलपर एक खंभेके ऊपर एक लेख सं० १५३८का है जिसमें जैन यात्रियोंका लेख है। प्रसिद्ध जैनकीर्तिस्तंभके विषयमें लिखा है कि यह ७५॥ फुट ऊंचा है, ३२ फुटका व्यास नीचे व १५ फुट ऊपर है। यह बहुत प्राचीन है। इसके नीचे एक पाषाणखंड मिला था जिसमें लेख था—श्री आदिनाथ व २४ जिनेश्वर, पुंडरीक, गणेश, सूर्य और नवग्रह तुम्हारी रक्षा करें सं० ९५२ वैसाख सुदी ३० गुरुवार॥

यहां सबसे प्राचीन मकान जैन कीर्तिस्तम्भ है जो ८० फुट ऊंचा है जिसको बघेरवाल महाजन जीजाने १२वीं या १३वीं शताब्दीमें जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथकी प्रतिष्ठामें बनवाया। यहां प्रसिद्ध जयस्तम्भ भी है जो १२० फुट ऊंचा है

इसको राणा कुंभने सन् १४४२ और १४४९के मध्यमें अपनी मालवा और गुजरातकी विजयकी स्मृतिमें बनवाया।

रामपाल द्वारके सामने एक जैन मठ है जिसको अब पहरेवालोंका कमरा Guard Room कर लिया गया है। इसमें एक लेख सन् १४८१ का है जो कहता है कि कुछ जैन प्रतिष्ठित पुरुषोंने यहा दर्शन किये थे।

दक्षिणकी तरफ नौलखा भडार और बडे२ स्तम्भोंका कमरा है जिसको नौ कोठा कहते हैं। इन इमारतोंके बीचमें बडे सुन्दर खुदे हुए छोटे जैन मदिर हैं जिनको सिंगारचौरी कहते हैं। इनमें कई शिलालेख हैं। एक लेख कहता है कि इसको राणा कुंभके खजाचीके पुत्र भडारी वेलाने श्री शातिनाथजीकी प्रतिष्ठामें बनवाया था। दरबारके महलके पास एक पुराना जैन मदिर है जिसको सतबीस देवरी कहते हैं। इसके आगनमें बहुतसी कोठरिया हैं। Archealogical ourvey of India for 1905 6 में पृष्ठ ४३–४४ पर जो वर्णन दिया है वह यह है कि जैन कीर्तिस्तम्भ बहुत पुरानी इमारत है जो शायद सन् ११०० के करीब बनी थी। यह स्तंभ दिगम्बर जैनियोंका है। बहुतसे दिगंबर जैनी राजा कुमारपालके समयमें (१२वीं शताब्दीके मध्य) पहाडीपर रहते होंगे ऐसा मालूम होता है। इंग्रेजी शब्द हैं—

It belongs to the Digambar Jains, many of whom seem to have been upon the hill in Kumarpal's time

राजा कुम्भके जयस्तम्भके नीचे जो पुराना मदिर है उसके लेखसे प्रगट है कि गुजरातके सोलंकी राजा कुमारपालने इस पर्वतके दर्शन किये थे। राजा कुंभके राज्यके समयमें यद्यपि श्वेताम्बर जैन

थोड़े होंगे तौभी उस समयके बने जैन मंदिर श्वेताम्बरों द्वारा बनाए गए थे।

कीर्तिस्तम्भ चौमुख मूर्तिको धारताहुआ एक महत्वशाली स्तम्भ है। जो पुराने खुदे हुए पाषाणोंका ढेर इस स्तम्भके नीचे है उसमें ऐसी चौमुख मूर्तिका भाग है कि जो इस स्तम्भके शिखर पर अच्छी तरह विराजित होगी (देखो चित्र १ चौमुख मूर्ति पृष्ठ ४४) इसको समवशरणके ऊपरी भागसे मुकाबला किया गया है। (देखो चित्र १८ B)—ऐसे स्तम्भ जिनको कीर्तिस्तम्भ कहते हैं व जो जैन मंदिरके सामने स्थापित किए जाते हैं उनमे चौमुख मूर्तिके ऊपर १ छतरी होती है। यदि इस कीर्तिस्तम्भका सम्बन्ध मूलमें किसी मंदिरसे होगा तो यह मंदिर शायद उस स्थानपर होगा जहां वर्तमानमें पूर्व ओर अब पाषणका ढेर है।

जो श्वेताम्बर जैन मंदिर अब इस स्तम्भके पास दक्षिण पूर्वमें है उसका सम्बन्ध इस स्तंभसे नही है, क्योंकि वह ३५० वर्ष पीछे बना था। इस मंदिरके शिखरके भीतर देखनेसे मालूम होता है कि इस शिखरके भीतरी भागमें जो खुदे हुए पाषाण हैं वे प्रगट करते हैं कि यहां पासमे पहले कोई दूसरा मंदिर होगा। इस कीर्तिस्तम्भकी मरम्मत सर्कारने सन् १९०६ में की थी जिसके लिये महाराणा उदयपुरने २२०००) खर्च किया। जीर्णोद्धारके पहले ऊपर तोरण न थे सो फिरसे बनादिये गए हैं। पृष्ठ ४९ पर है कि डा० जी० आर० भंडारकरके कथनानुसार दक्षिण कालेज लाइब्रेरीमें एक प्रशस्ति है जिसको "श्री चित्रकूट दुर्ग महावीरप्रसाद प्रशस्ति" कहते हैं जिसको चारित्रगणिने वि०

सं० १४९९में संकलन किया व जिसकी नकल वि० सं० १९०८ में की गई। यह प्रशस्ति कहती है कि यह कीर्तिस्तम्भ मूलमें सन् ११०० के अनुमान रचा गया था, किन्तु राणा कुंभके समयमें सन् १४५०के अनुमान इसका जीर्णोद्धार हुआ। इस लेखमें किसी शिलालेखकी नकल है जो श्री महावीरस्वामीजीके जैन मंदिरमें मौजूद था तथा कीर्तिस्तम्भ उसके सामने खड़ा था। यह लेख कहता है कि इस मंदिरको उकेशा जातिके तेजाके पुत्र चाचाने बनवाया था। यह लेख यह भी कहता है कि गणराज साधुके पुत्रोंने इस मंदिरका जीर्णोद्धार किया और नवीन प्रतिमाएं स्थापित कीं। इस कामको उनके पिताने वि०सं० १४८५ (सन् १४२८)में मोकलजी राणाकी आज्ञासे शुरु किया था। यह लेख यह भी कहता है कि धर्मात्मा कुमारपालने यह ऊंची इमारत कीर्तिस्तम्भ नामकी बनवाई। मंदिरकी दक्षिण ओर यह कैलाशकी शोभाको छिपाता है।

स० नोट—जो मूर्तियां इस कीर्तिस्तम्भपर बनी हैं वे सब दि० जैन हैं। यदि कुमारपालने बनाया हो तो यह मानना पड़ेगा कि कुमारपाल या तो दिगम्बर जैन होगा या दि० जैन धर्मका प्रेमी होगा।

पृष्ठ ४४ में १७ नं.के चित्रमें इस स्तम्भका फोटो है। यह फोटो २ बालिस्तका है। नीचेसे आधबालिस्त जाकर खड़े आसन दि० जैन मूर्ति है दोनों तरफ दो इन्द्र हैं। इसके ऊपर ३ बैठे आसन मूर्ति हैं। उसके ऊपर एक मंदिरके मध्यमें तीन खडे आसन जैन मूर्तियें उनके ऊपर और बगलमें ७ लाइन पद्मासन मूर्तियोंकी हैं वे

सात लाइनकी मूर्तियें क्रमसे २४–२४–२१–१८–१२–१२–१२ हैं। ऊपर दो शिखर हैं। १॥ वालिस्त ऊपर शिखरकी ऊपरी भागके नीचे आठ बैठे आसन मूर्तियें हैं, ये सब मूर्तियें दि०जैन हैं।

हमने इस चित्तौड़गढ़की यात्रा ता० २९ अप्रेल १९२३को डाकटर पदमसिंह जैनीके साथ की थी उससे जो विशेष हाल विदित हुआ वह इस प्रकार है–

ऊपर जाकर सिंगारचवरीके वहां व आसपास जो जैन मंदिर हैं उनका हाल यह है:–१ जैन मंदिर जो पहले ही दिखता है इसके द्वारपर बीचमें पद्मासन पार्श्वनाथजीकी मूर्ति है व यक्षादि हैं, भीतर वेदीमें प्रतिमा नहीं है–शिखर पाषाणका बहुत सुन्दर है। इस मंदिरके स्तम्भमें यह लेख है–" सं० १५०५ वर्षे राणा श्री लाषा पुत्र राणा श्री मोकल नंदण राणा श्री कुंभकर्णकोष व्यापारिणा साहकोला पुत्ररत्न भंडारी श्री वेलाकेन भार्या बील्हण-देवि जयमान भार्या रातनादे पुत्र भं० मूंघण्ड भं० धनराज भं० कुरपालादि पुत्रयुतेन श्री अष्टापदाह्व श्री श्री श्री शांतिनायक मूलनायक प्रासादकारितं श्री जिनसागर सूरि प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे...रं राजंतु श्री जिनराजसूरि श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचंद्र-सूरि श्री जिनसागरसूरि पट्टांभोजाकनंदात् श्री जिनसुंदरसूरि प्रसा-दतः शुभं भवतु। उदयशील गणिनं नमीति। यह लेख श्वेताम्बरी है। इसके थोड़ा पीछे जाकर एक जैन मंदिर है जो पुराना है व पड़ा है तथा दिगम्बरी मालूम होता है। भीतर वेदीके कमरेके द्वार-पर पद्मासन मूर्ति पार्श्वनाथ व यक्षादि, भीतर प्रतिमा नहीं। शिषर बहुत सुन्दर है। इसकी फेरीमें पीछे तीन मूर्ति पद्मासन प्राति-

हार्य सहित अंकित हैं। इसकी एक बगलमें एक खड़गासन दि० जैन मूर्ति है, दूसरी बगलमें १ खडगासन १ हाथ ऊंची है। ऊपर पद्मासन हैं।

आगे जाकर सत्तवीसदेवरीके नामका बड़ा जैन मंदिर है, द्वार पर पद्मासन छोटी मूर्ति है, छतपर कमल आबूजीके मंदिरके अनुसार हैं। भीतर दूसरे द्वारपर पद्मासन मूर्ति फिर वेदीके द्वारपर पद्मासन वेदी खाली है। छतपर कमल व देवी आदि हैं। यह तीन चौकेका मंदिर है। इसके १ बगलमें दूसरा जैन मंदिर है, द्वार पर पद्मासन भीतर द्वार पर पद्मासन पासमें खड़गासन मूर्ति है। दूसरी बगलमें जैन मंदिर द्वारपर पद्मासन। पीछे १ मंदिर शिखरमें खड़-गासन व पद्मासन व द्वारपर पद्मासन। यह मंदिर श्वेताम्बरी मालूम होता है। पासमें दूसरा श्वे० जैन मंदिर द्वारपर पद्मासन, वेदीके द्वारपर पद्मासन। आगे चलकर श्रीकृष्ण राधिकाका मीराबाईका मंदिर है, जैन मंदिरके पाषाण खंड लगे हैं उनमें पद्मासन जैन मूर्ति है।

आगे जाकर जो जयस्तम्भ राजा कुंभका है उसके भीतर ऊपर जानेको मार्ग है जिसमें ११२ सीढ़ी हैं भीतर सब तरफ अन्य देवोंकी मूर्तियां कोरी हुई हैं। ९ खन हैं, दो शिलालेख हैं। आगे जाकर जो प्रसिद्ध जैन कीर्तिस्तंभ या मानस्तंभ आता है यह सात खनका है, चारों तरफ खड़गासन और पद्मासन दि० जैन मूर्तियां अंकित हैं। भीतर चढ़नेको ६७ सीढ़ी हैं। ऊपर छत तोरण द्वार सहित है। हरएक तोरणमें पांच पांच खड़गासन दोनों तरफ ऐसे चार तरफ चार तोरण हैं। छतके कोनेमें चार मूर्ति हैं। इस मानस्तंभमें पाषाणकी कारीगरी देखने योग्य है। यह दि० जैनोंका मुख्य

स्मारक है। इसके नीचे एक तरफ जैन मदिर है, द्वार व आलेपर पद्मासन मूर्तियें हैं।

इस प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भमें Imperial Ga etteer of Ind a (Rajputana) 1908 में तो यह लिखा है कि इसको एक बघेरवाल महाजन जीजाने बनवाया जब कि Archeological survey of India 1905 6 पृष्ठ ४९में चित्रकूट दुर्ग महावीरप्रसाद प्रशस्तिके आधारसे यह लिखा है कि राजा कुमारपालने इस कीर्तिस्तभको बनवाया। दोनोंमें कौनसी बात ठीक है इसकी खोज लगानी चाहिये। परतु A P R of W India 1906 में इस जैन कीर्तिस्तभ सम्बन्धी पाच पाषाणोंके लेखका भाव दिया है न० २२०५से २२०९ तकके कि इनमें जैन सिद्धातोंकी प्रशसा है व एक प्रगटपने कहता है, कि इस स्तम्भको बघेरवाल जातिके किसी जीजा या जीजकने बनवाया। हमारी रायमें यह बात ठीक मालूम होती है।

ऊपरके कथनानुसार श्री महावीर स्वामीके मदिर पर लिखी हुई प्रशस्तिकी नकल सस्कृतमे पूना भडारकर ओरियन्टल इसटिट्यूटमें देखनेको मिली न० ११३२। १८९१-९५ है॥ इसमें १०२ श्लोक हैं। मगलाचरण है—

जिननदनसरोजे या विलास विशुद्ध, द्वयनयमयपक्षाराजहसीव धत्ते।
कुमतसुमतनीरक्षीरयोर्द्व्यक्तिकर्त्री, जनयतु जनताना भारतीं भारती सा॥ १॥

अतमें है "इति श्री चित्रकूटदुर्गमहावीरप्रासाद प्रशस्ति चचारचक्रचूडामणि महोपाध्याय श्री चारित्ररत्नगणिभिर्विरचिता। सवत १५०८ प्रजापति सवत्सरे देवगिरौ महाराजधान्या इद्र प्रशस्ति

लेखि। यह प्रशस्ति मनोहर काव्योंमें है नकल छपने योग्य है। इसका भाव यह है कि राजा मोकल सुपुत्र कुम्भकरणके राज्यमें गुणराज सेठ थे उनके बड़ोंमें धनपाल सेठ थे जिन्होने आशापल्लीमें मंदिर बनवाया था। गुणराजने सं० १४९७में संघ सहित यात्रा गिरनार व सेत्रुंजयकी की व १४६८में दुर्भिक्ष पड़ा था तब खूब दान किया। १४७०में सोपारक तीर्थकी यात्रा की। इसके ५ पुत्र थे उनमें तीसरा निलय था। इसको राजा मोकल बहुत मानता था। इसने इस चित्रकूट दुर्गपर जिन मंदिर बनवानेका प्रबन्ध किया। तब वहां चंद्रगुच्छीय देवेन्द्रसूरिके शिष्य सोमप्रभसूरि उनके सोमतिलक उनके देवसुन्दर गुरु उनके सोमसुंदर गुरु थे उनसे उपदेश पाकर गुणराजने मंदिर राजा मोकलकी आज्ञासे बनवाया। गुणराज केशवश तिलक था। सोमसुंदरके शिष्य चारित्ररत्नगणिने इस प्रशस्तिको १४९५ संवतमें रचा। प्रतिमा स्थापनका श्लोक है "तत्र श्री जिनशासनोन्नतिकरैरत्युद्भुतेरुत्सवैर्नंद्यां श्रीवरसोमसुंदरगुरु एटैः प्रतिष्टापितां। वर्षे श्रीगुणराजसाधुतनयाः पंचाटरत्नप्रभो न्यास्ये तत्प्रतिमामिमामनुपमां श्रीवर्द्धमानप्रभोः ॥ ९० ॥

(४) नगरी—चित्तौड़से उत्तर करीब ७ मील बेराच नदीके दक्षिण तटपर। यहां वेदलाके रविका राज्य है, बहुत ही पुरानी जगह है। यह किसी समयमें बहुत प्रसिद्ध नगर था—प्राचीन नाम माध्यमिक है। यहां सन् ई०से पहलेके सिक्के व खंडित लेख मिले हैं। कुछ लेख विक्टोरिया हॉल लाइब्रेरी उदयपुरमें हैं। यहां दो बौद्ध स्तूप हैं व एक पत्थरकी बौद्धोंकी इमारत है जिसको हाथीका पारा कहते हैं।

(Cunningham report Vol XXIII P 101 and I P Statton's Chitor and Mewar family Allahabad 1896)

(५) धेवार झील–उदयपुरके दक्षिण पूर्व ३० मील। यह ९ मील लम्बी व १ से ९ मील चौडी है।

(६) कंकरोली–उदयपुर शहरसे उत्तरपूर्व ३६ मील। यह एक राज्य है। नगरके उत्तर राजासमंद झील है जो ३ मील लम्बी व १॥ मील चौडी है। पहाडीपर उत्तरपूर्वकी तरफ एक जैन मंदिरके अवशेष हैं जिसको राणा राजसिंहके मन्त्री दयाल साहने बनवाया था (सन् १६७०–१ के करीब) इस मदिरका शिपर कुछ मराठोंने नष्ट कर दिया था उसके स्थानमें गोल गुम्बज बनाया गया है तौभी यह मदिर बहुत बढिया प्राचीनताको दिखाता है। Forgusson architecture 1848

(७) कुंभलगढ़–उदयपुरसे उत्तर ४० मील। ३५६८ फुट ऊची पहाडीपर एक किला है जिसको राणा कुम्भने सन् १४४३ और १४५८के मध्यमें उसी ही पुराने स्थानपर बनाया था जहा पहले बहुत पुराना महल राजा सम्प्रतिका था जो दूसरी शताब्दी पूर्वमे जैन राजा था ऐसी कहावत है। किलेके बाहर कुछ दूर एक सुन्दर जैन मदिर है जिसमें चौकोर वेदीका कमरा है जिसमे बहुत सुन्दर खभे हैं व शिखर है। इसीके पास तीन खनका दूसरा जैन मदिर है जो कि अदभुत नक्शेको रखता है। हरएक खनमें बडे मोटे छोटे२ खभे हैं (Cunn Vol XI and XXIII Raj tona Gazetteer Vol III 1880 and V. A Smith early history of India 1904) A P R of W India 1909 है–कि यहा फतिया तलावके पास एक भामादेवका मदिर है। यह वास्तवमें चौमुख जैन मंदिर था

पीछे राणाकुंभने-वि० सं० १९१६में यहां ब्राह्मण मूर्तियें स्थापित करदीं। इस भामादेवके मंदिरके पूर्व बहुतसे प्राचीन मकानोंके ध्वंश हैं। एक समवशरण मंदिर है उसके पश्चिमी द्वारके पास पड़े हुए पाषाण हैं उनमें एकमें सं० १९१६, गोविन्दने रिषभदेवका सिंहासन बनवाया ऐसा लेख है। एक गोवरा नामका जैन मंदिर है जिसके चारों तरफ कोट है, इसके पास बावन देवल जैन मंदिर है जिसमें ४४ जैन देहरी अभी मौजूद हैं। यहां और भी बहुतसे जैन मंदिर हैं। यहांकी कोई२ कारीगरी बहुत प्राचीन है यहां तक कि सन् ई० से २०० वर्ष पूर्वकी है।

(८) नाथद्वारा–उदयपुर शहरसे ३० मील उत्तर व मावले स्टेशनसे उत्तर पश्चिम १४ मील। यहां जो कृष्णकी मूर्ति है उसके सम्बन्धमें कहा जाता है कि यह सन् ई०से पहले १२वीं शताब्दीकी है व इसको वल्लभाचार्यके वंशज यहां मथुरासे १५० वर्षके करीब हुए लाए थे। यहांकी मालगुजारी २ लाख वार्षिक है व वार्षिक चढ़ावा चार या पांच लाखका होजाता है। हरवर्ष मेला लगता है।

(९) रिषभदेव–उदयपुरनगरसे दक्षिण ४० मील। यह एक परकोटेदार ग्राम मगग जिलेमें है। यहां प्रसिद्ध जैन मंदिर श्री आदिनाथ या ऋषभनाथ देवका है जिसका दर्शन राजपूताना और गुजरातके हजारों यात्री प्रतिवर्ष किया करते हैं। यह मंदिर कब बना इसकी तिथि निश्चय करना कठिन है, परंतु यहां तीन शिला-लेख हैं जिनसे प्रगट है कि इसका जीर्णोद्धार १४वीं और १५वीं शताब्दीमें हुआ था। मुख्य मूर्ति कृष्ण पाषाणकी है जो बैठे आसन ३ फुट ऊंची । यह कहा जाता है कि यह तेरहवीं

शताब्दीमें गुजरातसे लाई गई थी। भील लोग इसको कालाजी कहते हैं (Indian Intiquary Vol. I) यह मूर्ति खास दिगम्बरी है। आसपास और वेदियोंमें भी चारो ओर दि० जैन मूर्तियें हैं। जीर्णोद्धारके लेखोंमें भी दि० महाजनोंका वर्णन है।

(१०) उदयपुर शहर—यहा कुल ४६९७६ की वस्तीमें ४५२० जैनी हैं।

(११) नागदा—यहासे उत्तर १४ मील एकलिंगजीके पास एक जैन मंदिर है जिसको अद्भुतजीका मदिर कहते हैं। यह इसलिये प्रसिद्ध है कि यहा सबसे वडी श्री शातिनाथजीकी मूर्ति ६॥ फुटसे ४ फुट है। स० १४९४ है। इस ग्रामका प्राचीन नाम नागहृद है।

(H. Cousin A. S of Western India 1905) मे है कि इस शातिनाथकी मूर्तिको राजा कुम्भकरणके राज्यमें सारग महाजनने प्रतिष्ठा कराई थी। भीतके सहारे भूमिपर तीन वडी मूर्तिया श्री कुंथनाथ, अभिनन्दननाथ व अन्य १ हैं। इस मदिरके पास दूसरा मदिर श्री पार्श्वनाथ भगवानका है इसमें मूल मदिर, गर्भमडप, सभामडम, फिर दूसरा वडा मडप, सीढिया व चौथा मडप है। मडपके पास कई छोटी मदिरकी गुमटिया हैं जिनमें जो दाहनी तरफ है, उनको राणा मोकलके राज्यमे स० १४८६में एक पोडवाड महाजनने वनवाया था। इस पार्श्वनाथ मदिरके उत्तरमे दूसरा एक प्राचीन ध्वंश मदिर राजा कुमारपालके समयका है। एक लिंगजी पहाडीके नीचे एक मदिर जैनियोंका पद्मावतीके नामसे है, भीतर तीन छोटे मदिर हैं, दाहनी तरफ

चौमुखी मूर्ति है, शेष खाली है। लेख स १३५६ और १३९१ के हैं। यहा पार्श्वनाथकी मूर्ति होनी चाहिये। यह दिगम्बर जैनोंका है। मडपमें एक मूर्ति श्वे० खडी है जो कहीं अन्यत्रसे लाई गई है। इसपर राजा कुभकरण व खरतरगच्छका लेख है। एक वेदीपर एक पाषाण है जिसके मध्यमें एक ध्यानाकार जिन मूर्ति है, ऊपर व अगलबगल शेष तीर्थंकरोंकी मूर्तिया है।

A P R. of W India 1906 में यहाके कुछ लेखोंकी नकल दी है।

न २०८३में–३ लेख है (१) ओ सवत् १३९१ वष चैत्र वदी ४ रवौ देवश्री पार्श्वनाथाय श्री मूलसघ आचार्य शुभचद्र चोथागान्वये गुणधरपुत्र तोल्हा केल्हा प्रभृति आलाक जीर्णोद्धारक कारयितम्।

(२) स १३९२ वर्ष आपाढ वदी १२ गोरईसा तेजालसुत सघपति वासदेवमवरानेण नागद्रहती श्रीपार्श्वनाथ।

(३) १–नागद्रहपुरे राणाश्री कुभकरण राज्ये।

२–आदिनाथ बिम्बस्य परिकर कारित

३–प्रतिष्ठित श्री खरतरगच्छेय श्रीमति वद्धनसूरि-

४–भि ... कीर्णतम् सूत्रधार धरणाकेण श्री

न २२८२ स–स १४८ वर्षे श्रावण सुदी ० शनो राणा श्री मोकलराज्ये श्री पार्श्वनाथ मदिरमें पोड़वाड जन वनियेने देवकुलिका बनवाई।

(११) पुर–उदयपुरसे उत्तर पूर्व ७२ मील, जिला भि-लाना। भिलवाड़ा स्टेशनसे पश्चिम ७ मील। यह विक्रमादित्यसे

पहलेका वसा हुआ था। यह कहा जाता है कि पोरवाल महाजनोंका नाम इसी स्थानसे प्रसिद्ध हुआ है।

(१२) दिलवाडा-दिलवाडा स्टेटमें उदयपुर शहरसे उत्तर १४ मील। इस नगरको मेवाडके प्राचीन राजाओंमेंसे एक भोगादित्यके पुत्र देवादित्यने बसाया था। यहा तीन जैन मदिर १६ वीं शताब्दीके हैं जिनको "जैनकी वस्सी" कहते ह। पहला मदिर एक बहुत बढिया इमारत है यह श्री पार्श्वनाथजीका है। मध्यमें चवा मडप है, एक एक मडप हर दो तरफ है और एक वेदीका कमरा है जिसमें कुछ दूसरे पुराने मकानोंके पाषण लगे हैं और कई बहुत प्राचीन मूर्तियें हैं। उसी हातेमें एक छोटा मदिर है जिसमें १८६ मूर्तिया हैं जो कुछ वर्ष हुए निकटमें खुदाईसे मिली थीं। दूसरा मदिर श्री ऋषभदेवजीका है जिसमें एक बडा मडप है। इसमें प्राचीन भाग उत्तरमें वेदीका कमरा है जिसकी खुदाई बहुत सुन्दर है। तीसरा मन्दिर भी श्री ऋषभदेवका छोटा है।

(१३) माइलमद-जि० उदयपुर पहाडीपर एक मन्दिर श्री ऋषभदेवजीका है। वालेश्वर मदिरके द्वारपर व द्वारके पास दो खभोंकी चौखटपर १० जिन मूर्ति खडे आसन ह। मटपमें दक्षिण तरफ एक जैन मूर्ति चौखटपर खुदी है।

(१४) करेड-उदयपुरसे पूर्व ४१ मील। यह उदयपुर लाइनमें एक स्टेशन है। ग्रामके बाहर एक बडा मनमकर। जैन मन्दिर श्री पार्श्वनाथ स्वामीका है इसके चारों तरफ [illegible] है। मूर्ति श्री पार्श्व० सं० १६१६ है, यहा सुन्दी पावन मेला होता है। [illegible] अकबरने इसी मन्दिरके पास एक म जिद बनवाई थी।

(१९) केल्वाडा–जि० कुम्भलगढ। किलेके नीचे २ जन मदिर हैं, उनमे १ बड़ा है जिसमें २४ देहरी है जो कुम्भलगढके किलेके समयमें बनी है।

(१६) नादलाई–एक पहाडी किला जिसको जयकाल कहते है। इसको जैन लोग सेत्रुजय पर्वतके समान पवित्र मानते हैं। यहा सोनिगरोंके पुराने किलेके शेषाश हैं, यहा १६ मदिर हैं जिममें बहुतसे जैनोंके है। किलेके भीतर एक श्री आदिनाथजीका जैन मदिर है, इसमें लेख है–स० १६८८ वैशाख सुदी ८ शनौ महाराज जगतसिंहराज्ये विजयसिंह सूरितपगच्छ–इसमें कथन है कि नदलाईके जैनोने उस मंदिरका जीर्णोद्धार किया जिसको मूलमें अशोकके पोते राजा सम्प्रतिने बनवाया था। ग्रामके बाहर पर्वतके नीचे बहुतसे जैन मदिर है जिनमें अतिम मन्दिर श्रीसुपार्श्वनाथका है। इसके सभामडपमें श्री मुनिसुव्रतकी मूर्ति है जिसमे लेख है कि नदुलाईके पोडवाड नायाकने वि० स० १७२१में जेठ सुदी ३को अभयराजराज्ये विजयसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराई। ग्रामके दक्षिण पूर्व दूसरी पहाडी पर श्री नेमिनाथजीका जैन मदिर है। स्तभोपर दो लेख हैं इसमें प्राचीन लेख स० १२९९ का आसोज वदी १, उस समय नदुलदगिक (नदलई) में रायपालदेव राज्य करते थे तब गोहिलवशीय उद्धारणके पुत्र राजदेवने जो रायपालदेवके आधीन था–उसकरका वीसवा भाग नदुलईके मदिरकी पूजाके लिये दिया, जो उन लदे हुए बैलोंसे वसूल होता था जो नदलाई होकर जाते थे। दूसरा लेख स० १४४३ कार्तिक वदी १४ शुक्र जगवीर पुत्र रणवीरदेवके राज्यमें वृहद्गच्छके

धर्मचंद्रसूरिके शिष्य विनयचंद्रसूरिके समयमें श्री नेमिनाथ मंदिरका जीर्णोद्धार किया गया।

एक आदिनाथके जैन मंदिरमें सं० १९९७का लेख है उसमें लेख है कि एक गुसाईंसे एक जैन यतिका झगड़ा हो गया था तब मुलताई खेड़ेमें जो दो जैन मंदिर थे उन दोनोंको मंत्रशक्तिसे यहां लाया गया। तब गुसाईं जैन यतिसे हार गया। इसीके गूढ़ मंडपमें पांच शिलालेख हैं। एक लेख सं० ११८७ फागुण सुदी १२ गुरुवारे श्री महावीरकी भक्तिमें पायमारके पुत्र चाहमान विसाराकने दान किया। अन्य चार लेख चाहमान और रायपालके राज्यके सं० ११८९ से १२०२ तकके हैं। इनमेंसे एकमें चाहमानकी स्त्री अच्छलदेवीके पुत्र रुद्रपाल और अदभुतपालने दान किया था। चौथे लेखमें है कि महाजनोंने सं० १२००में यहांके मंदिरको दान किया। यहां एक लेख सन् १९९७का मिला है जिसमें मेवाड़की राजवंशावली दी है। कुमकरणका पुत्र रायमल्ल था उसके राज्यका यह लेख है। रायमलके ज्येष्ट पुत्र पृथ्वीराजकी आज्ञासे श्री आदिनाथकी मूर्ति १९९७में प्रतिष्टित हुई।

(१७) नादाल-नदलाईसे उत्तर पूर्व ७ मील। यह श्री पद्मप्रभुका जैन मंदिर है। गूढ़ मंडपमें श्री नेमिनाथ व शांतिनाथजीकी मूर्ति है। लेख है सं० १२१९ वैसाख सुदी १० सोमे वृहद्गच्छीय मुनि चंद्र शिष्य देवसूरि शिष्य पद्मचन्द्र गणि द्वारा राणा जगतसिंहके राज्यमें उनके मंत्री जोधपुरवासी जैसाके पुत्र मल्लोत्र गोत्रधारी जयमल्लने श्री पद्मप्रभुकी प्रतिमा स्थापित की।

(२) बांसवाड़ा राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तरमें परतापगढ़। पश्चिममें ारपुर व सूंठ। दक्षिणमें झालोद, झाबुआ। पूर्वमें सैलाना, रत-म, परतापगढ़। यहां १९४६ वर्गमील स्थान है। यहां ९२०२ नी हैं जिनमें ८८ सैकड़ा दिग० .४ सैकड़ा श्वे० मंदिरमार्गी ८ सैकड़ा ढूंढिया हैं।

पुरातत्व—यहां कुशलगढ़में अंदेश्वर और वागलपर प्राचीन [illegible] ध्वंश हैं

(१) अर्थोना—बांसवाड़ा नगरसे पश्चिम २४ मील—यहांका ासक चौहान राजपूत है। यहां ११ व १२ शताब्दीके हिन्दू व र मंदिर हैं। यहांके मंदनेश्वर मंदिरमें सन् १०८०का शिलालेख निससे सिद्ध है कि अर्थोना या उथूनक नगर या पाटन किसी मय बहुत बड़ा नगर था। यह वागड़के परमार राजाओंकी राज्य-नी था। कुछ मंदिरोंमें अच्छी खुदाई है। दूसरा शिलालेख न् ११००का है। इसमें भी प्राचीन नगरका नाम है। सूंठ जो ाकांठामें है अभीतक परमार राजाओंके अधिकारमें है। ये परमार जा उसी वंशके थे जिस वंशके मालवाके परमार थे। इन गड़के परमारोंकी उत्पत्ति मालवाके वाकपति प्रथम जो वैरीसिंह ०का भाई था उसके छोटे पुत्र दमवरसिंहसे है। दमवरने गड़में राज्य पाया—इसका पुत्र कनकदेव था जो उस युद्धमें मारा या जिसको उसके भतीजे मालवाके हर्षदेवने मान्यखेड़के राष्ट्रकूट जा खत्तिगसे किया था। कनकदेवके पीछे चंदप, सत्यराज, मंद-देव, चामुंडराज, विजयराज क्रमसे राजा हुए। इस चामुंडरायने

मदनेश्वरका It showd temple is Jain मंदिर सन् १०८० मे अपने पिताकी स्मृतिमें बनवाया विजयराज सन् ११०० मे जीवित था ऐसा लेख कहता है।

(२) कालिंजर–वासवाडासे दक्षिण पश्चिम १७ मील। यहा सुन्दर जैन मदिरके ध्वश हैं जिनमे वहुतसे शिपर हैं व कई कमरे हैं जिनमे जैन मूर्तिया है। इसमे खुदाई बढिया है। यहा तीन शिलालेख हैं जो पढे नहीं गए। यह जैन व्यापारियोका मुख्य व्यापारका केन्द्र था। मराठा लुटेरोने इसे नष्ट किया व व्यापारियोको भगा दिया।

(See Heber Journey uppr provinces of India Vol II 1828)

(३) परतावगढ़ राज्य।

चौहद्दी–उत्तर पश्चिममे उदयपुर, पश्चिम, दक्षिण–वासवाडा, दक्षिण रतलाम, पूर्व जावरा, मदसोर, नीमच। यहा ८८६ वर्गमील स्थान है।

वीरपुर–सुहागपुरके पास। यहा एक जैन मंदिर है जो २००० वर्षका पुराना कहा जाता है।

प्राचीन मदिर परतापगढसे दक्षिण २ मील वीरडियापर तथा नीनारमे है। जाच नहीं हुई। परतावगढसे ७॥ मील पश्चिम देवलिया या देवगढमे २ जैन मदिर हैं।

परतावगढ शहरमें ११ जैन मदिर हैं व २७ सैकड़ा जैनी है। कुल राज्यमें ९ सैकडा जैनी हैं, जिनमे ५६ सैकडा दिगम्बरी ३७ सैकड़ा श्वे० मदिर मार्गी व ७ सैकडा ढूढिया हैं।

(४) जोधपुर राज्य (पश्चिम राजपूताना राज्य रेजिडेन्सी।)

इस रेजिडेन्सीकी चौहद्दी–उत्तरमें वीकानेर, वहावलपुर पश्चिममें सिरोही। दक्षिणमें गुजरात। पूर्वमें मेवाड, अजमेर, मरवाडा व जेपुर। यहां ७ शदी जैनी हैं। इसमे जोधपुर, जैसलमेर व सिरोही राज्य शामिल हैं जो पश्चिम व दक्षिण पश्चिममें हैं।

जोधपुर राज्य–यह राजपूतानामें सबसे बडा राज्य है। यहा ३४९६३ वर्गमील स्थान है। चौहद्दी–उत्तरमें वीकानेर, उत्तर पश्चिममें जैसलमेर, पश्चिममें सिंध, दक्षिणपश्चिम–कच्छकी खाडी, दक्षिणमें पालनपुर व सिरोही, दक्षिणपूर्वमें उदयपुर, उत्तरपूर्वमें जयपुर।

इतिहास–यहाके राजा राठौरवंशी हैं और अपनी उत्पत्ति श्री रामचंद्रजीसे बताते हैं। राठौर वंशका मूल नाम राष्ट्रकूटवंश है। इस वंशका नाम अशोकके लेखोमें आया है कि ये लोग दक्षिणके शासक थे। उनका अतिप्रसिद्ध पहला राजा अभिमन्यु ५ वीं या छठी शताब्दीमें हुआ है। राष्ट्रकूट वंशका १९वां राजा जब दक्षिणमें राज्य करता था तब उसको चालुक्योंने भगा दिया। उसने कन्नौड़ामें शरण ली, जहां इस वंशकी शाखा नौमी शताब्दीके अनुमान वस गई–उनके सात राजा हुए, सातवें राजा जयचंदको मुहम्मदगोरीने सन् ११९४में हरा दिया। वह गंगामें डूब गया। इसका पोता स्याहजी सन् १२१२में राजपूतानामें आकर बसा उसीसे यह राठौरवंशी जोधपुरके राजा हैं।

जोधपुर गजेटियर सन् १९०९ से विशेष इतिहास यह

मालूम हुआ कि दक्षिणमें सन् ९७३के पहले १९ राजा हो चुके थे। आठवीं शताब्दीके मध्यमें १६वें राजा दन्तीदुर्गाने चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वि०को परास्त किया। उसको हटाकर उसके चाचा कृष्ण प्रथमने राज्य किया जिसके राज्यमें एलोराका कैलाश मंदिर बनाया गया था। कृष्णके पीछे तीसरा राजा गोविन्दराज तृ० हुआ। इसने लाड देश (मध्य और दक्षिण गुजरात) को जीता और अपने भाईको सुपुर्द कर दिया। मालवा भी उसे दिया और आप पल्लव और कांची राज्यको जीतने गया। गोविन्दराजके पीछे **अमोघवर्ष** प्रथमने मान्यखेड़ (जि० हैदराबाद) में ६२ वर्ष राज्य किया। यह **दिगंबर** जैनधर्मका अनुयायी था He patronised Digamber sect of Jains and was follower of that creed सन् ९७३में ध्रुवराष्ट्र कन्नौजमें आया। वहां गाहड़वाल या गहरवार नामका नया वंश स्थापित किया। इस वंशके सात राजा हुए-(१) यशोविग्रह, (२) महीचंद्र, (३) चंद्रदेव, (४) मदनपाल, (५) गोविन्दचद्र, (६) विजयचंद्र, (७) जयचंद्र (पृथ्वीराजके समयमें)।

जोधपुरके महाजन-नौ सैकड़ा महाजन हैं जिनमें पांचमें चार भाग जैनी हैं। महाजनोंमें ओसवाल, पोरवाल, अग्रवाल, सरावगी (अर्थात् खंडेलवाल) तथा महेश्वरी हैं। उनमें सबसे अधिक **ओसवाल** हैं जिनकी संख्या १०७९२६ है इनमें ९८ सैकड़ा जैनी हैं।

ओसवाल जैन- ये ओसवाल लोग भिन्न२ जातिके राजपूतोंकी संतान हैं जो दूसरी शताब्दीमें जैन धर्मी हुए थे। उनका नाम ओसवाल इसलिये प्रसिद्ध है कि वे ओसा या ओसराज नग-

रके वासी थे। इस ओसा नगरके ध्वंश अभीतक जोधपुरसे उत्तर ३९ मीलके अनुमान पाए जाते हैं। (जोधपुर गजटियर पृ० ८६) उनके मुख्य विभाग हैं–मोहनोत, भंडारी, सिंधी, लोढा (इसके भी चार विभाग हैं जिनमेंसे एकको बादशाह अकबरके खजाची टोडरमलके नामसे पुकारा जाता है) और मेहता (जिनमेंसे भटसाली हैं जो मूलमें भारती राजपूत हैं और ओसवालोंके चौधरी कहलाते हैं)।

यहां महेश्वरी २०२८८ हैं जिनकी उत्पत्ति चौहान, परिहार और सोलंकी राजपूतोंसे है।

पोड़वाल–पाटन (गुजरात)के राजपूत हैं जहां उन्होंने ७०० वर्ष हुए जैनधर्म धारण किया था। कोईका मत है कि इनकी उत्पत्ति पुर नगरसे है जो उदयपुरके भिलवाडाके पास एक प्राचीन नगर है।

सरावगी–(८४ भागवाले) इनकी सख्या यहां १३१९९ है, ये ही खडेलवाल हैं।

अग्रवाल–कुल १०३३ हैं उनकी उत्पत्ति राजा अग्रसे है जिसकी राज्यधानी अग्रोहा (पंजाब)में थी।

कुल जैनी १३७३९३ हैं जिनमें ६० सैकडा श्वेताम्बरी २२ सैकडा ढूंढिया व १८ सैकडा दिगम्बरी हैं जो कि प्राचीन हैं (Who are ancient) (सफा ९१ जोधपुर गजेटियर)

पुरातत्त्व–यह जोधपुर पुरातत्त्वमें बहुत बढ़िया है। बहुत ही प्रसिद्ध स्मारक बाली, भिनमाल, डीडवाना, जालोर, मन्डोर नादोल, नागौर, पाली, राणापुर और सादरीमें हैं।

मुख्य स्थान।

(१) बाली–जि० हकूमत–फालना स्टेशनसे दक्षिणपूर्व ९

मील। यहांसे १० मील दक्षिण बीजापुर ग्रामके बाहर हथुन्डी या हस्तिकुंड़ी नामके एक प्राचीन नगरके अवशेष हैं, यह राठौर राजपूतोंकी सबसे पुरानी जगह थी। एक शिलालेख सन् ९९७का है जिसमें १० वीं शताब्दीके ५ राजाओंके शासनका वर्णन है। वे राजा हैं– हरिवर्मन, विदग्ध (९१६), मन्मथ (९३९) धवल और बालप्रसाद। दांतीवाड़ा, दयालना और खिनवालपर जैन मंदिर हैं।

(२) भिनमाल–जि० जसवन्तपुरा, इसको श्रीमाल या भिल्लमाल भी कहते हैं। यह आबूरोड स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ५० मील व जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम १०५ मील है, यह छठीसे ९ मी शताब्दीके मध्यमें गूजरोंको प्राचीन राज्यधानी थी। यहां एक सिंहासनपर एक राजाकी पाषाणकी मूर्ति है। पुराने मंदिर हैं। एक संस्कृत लेख है जिसमें परमार और चौहान राजाओंके नाम हैं। यहांसे दक्षिण पूर्व १४ मील सुन्दर पहाड़ी है इस पर चामुन्डदेवीका पुराना मंदिर है। यहां पुराना लेख है जिसमें सोनिगरा (चौहान) राज्यके १९ राजाओंका व घटनाओंका वर्णन है। A. S. R. W. I. of 1908 से विदित हुआ कि यह श्रीमाल जैनियोंका प्राचीन स्थान है। ऐसा श्रीमाल महात्म्यमें है। यहां जाक्ब तालावके तटपर उत्तरमें गजनीखांकी कब्र है। इसकी पुरानी इमारतके ध्वंशोंमें एक पड़े हुए स्तम्भपर एक लेख अंकित है जिसमें लेख है वि० सं० १३३३ राज्य चाचिगदेव पारापद गच्छके पूर्ण चन्द्रसूरिके समय श्री महावीरजीकी पूजाको आश्विन वदी १४ को १३ द्रुम्भा व ८ विसोपाक दिये। एक पुरानी मिहराबमें एक जैन मूर्ति कित है। जाक्ब तलावके

भीतमें एक लेख है जिसमें प्रारम्भमें है श्री महावीरस्वामी स्वयं श्रीमाल नगरमें पधारे थे।

(३) मांदोर–जोधपुर नगरसे उत्तर ५ मील। यह सन् १३८१ तक परिहार वंशी राजाओंकी राज्यधानी था। यहां १६ वीर पुरुषोंकी बड़ी२ मूर्तियां एक दालानमें हैं। यहां बहुत प्राचीन मंदिरोंके शेष हैं, इनमें बहुत प्रसिद्ध एक दो खनकी जैन मंदिरकी इमारत उत्तरमें है। इसमें बहुत कोठरियां हैं। मंदिरमें जाने हुए द्वारके आलेमें चार जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां हैं व आठ भीतर वेदीमें कोरी हैं। यहां एक बड़ा शिलालेख था जो दबा पड़ा है। इसके खंभे १०वी शताब्दीके पुराने हैं।

(४) नादोल–जि० देसूरी जवाली (Jawali) स्टेशनसे ८ मील यह ऐतिहासिक जगह है। ग्रामके पश्चिम पुराना किला है। इस किलेके भीतर बहुत सुन्दर जैन मंदिर श्री महावीर स्वामीका है। यह मंदिर हल्के रंगवाले चुनई पाषाणसे बना है और इसमें बहुत सुन्दर कारीगरी है। यह चौहान राजपूतोंका स्थान है। जैन मंदिरमें तीन लेख १६०९ ई०के हैं व ८ बड़े पाषाण स्तम्भ हैं, जिनको खेतलाका स्थान कहते हैं। (कनिंघम जिल्द २३ पृ० ९१–८)

(५) मंगलोद–नागौरसे पूर्व २० मील। यहां प्राचीन मंदिर है जिसमें संस्कृतमें लेख सन् ६०४ का है। इसमें लिखा है कि इस मंदिरका जीर्णोद्धार धुहलाना महाराजके राज्यमें हुआ था। यह लेख जोधपुरमें सबसे प्राचीन है।

(६) पाकरन नगर–जि० सांकरा–जोधपुर नगरसे उत्तर

पश्चिम ८९ मील। सातलमेर ग्रामके बाहर दो मील तक ध्वंश स्थान है। यहां एक बडा जैन मंदिर है और ठाकुरके वंशके मृत मातोके स्मारक है।

(७) **रानापुर**–(रैनपुर) जि० देसूरी–फालना प्टेशनसे पूर्व १४ मील व जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ८८ मील। यहां प्रसिद्ध जैन मंदिर है। जो मेवाडके राणा कुम्भके समयमे १५ शताब्दीमें बना था। यह बहुत पूर्ण है। मंदिरका चबूतरा २०० × २२५ फुट है। मध्यमें बडा मंदिर है जिसमें ४ वेदी हैं। प्रत्येकमें श्री **आदिनाथ** विराजमान हैं। दूसरे खनपर चार वेदी हैं। आंगनके चार कोनेपर ४ छोटे मंदिर हैं। सब तरफ २० शिषर हैं जिसको ४२० स्तम्भ आश्रय दिये हुए हैं। संगमर्मरका खुदा हुआ मानस्तंभ द्वारपर है. उसमें लेख हैं जिनमें मेवाड़के राजाओंके नाम बापा रावलसे राणा कुंभा तक हैं।

(See J. Fergusson history of India 1888 P. 240–2).

इस मंदिरके हरएक शिषरके समुदायमें जो मध्य शिषर है वह तीन खनका ऊँचा है। जो खास द्वारके सामने है वह ३६ फुट व्यासका है उसे १६ खम्भे थांभे हुए हैं। १९०८ की पश्चिम भारतकी रिपोर्टमें है कि इस बडे मंदिरको–जो चौमुखा मंदिर श्री आदिनाथजीका है–पोडवाड महाजन धरणकने सन् १४४० में बनवाया था। दो और जैन मंदिर हैं उनमें एक श्री पार्श्वनाथजीका १४ वीं शताब्दीका है।

(८) **सादरी नगर**–जि. देसूरी। प्राचीन नगर जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ८० मील। यहां बहुतसे जैन मंदिर हैं।

(९) कापरडा–जि. हकूमत। यहा एक जैन मंदिर है जो इतना ऊंचा है कि ९ मीलसे दिखता है। यह १६ वीं शताब्दीके अनुमानका है। यह जोधपुरसे दक्षिण पूर्व २२ मील है। विसालपुरसे ८ मील है।

(१०) पीपर जि. बेलारा–जोधपुरसे पूर्व ३२ मील व रेल स्टेशनसे दक्षिण पूर्व ७ मील। इस ग्रामको एक पल्लीवाल ब्राह्मण पीपाने बसाया था। यह कहावत है कि इसने सर्पको दूध पिलाया, उसने सुवर्णको पाषाण बना दिया, तब उसने सर्पकी स्मृतिमें सम्पू नामकी झील बनवाई व अपने नामसे ग्राम बसाया।

(११) बारलई–देसूरीसे उत्तर पश्चिम ४ मील। यहा सुन्दर दो जैन मदिर हैं–एक श्री नेमिनाथजीका सन १३८६का व दूसरा श्री आदिनाथजीका सन् १९४१ का।

(१२) डीदवाना नगर–मकराना स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ३० मील व जोधपुर शहरसे १३० मील। यह २००० वर्ष पुराना है। प्राचीन नाम द्रुद्वाणक है। यहा खुदाई करने पर एक पाषाण मूर्ति मिली थी जिस पर सं० २९२ था। वर्तमान सतहसे नीचे २० फुट जाकर मट्टीके बर्तन मिलते हैं। यहासे दक्षिण पूर्व दौलतपुरामें एक ताम्रपत्र सवत् ९९३का पाया गया है जो कन्नौनके महाराज राजा भोजदेवका है (Epigraphica Indica Vol. V) यहा निमककी झील है ३॥ मील × १॥ मील, जिससे २ लाख वार्षिक आमदनी है। (सन् १९०९)।

(१३) जसवन्तपुरा–आबूरोड स्टेशनसे उत्तर पश्चिम ३० मील। पर्वतके नीचे एक नगर है इसके पश्चिममें सुन्दर पहाड़ी है। इसपर पर्वतमें कटा हुआ एक चामुंडदेवीका मदिर है इसमें

कई शिलालेख हैं जिनमें सबसे पुराना सन् १२६२ का है, इसमें सोनिगरा या चौहान वंशके १९ राजाओंके नाम व घटनाएं हैं। यह पहाड़ी ३२८२ फुट ऊंची है। यहीं रतनपुर ग्राममें श्री पार्श्वनाथजीका जैन मंदिर सन् ११७१ का है इसमें दो लेख सन् ११९१ और १२९१ सन्के हैं।

(१४) घटियाला-जि० हुकुमत। जोधपुरसे उत्तर पश्चिम २८ मील। यह पुराना ग्राम है। यहां ध्वंश जैन मंदिर है जिसको मातामीकी साल कहते हैं। एक पाषाण पर प्राकृत भाषाका लेख है उससे विदित है कि मद्दोदर (मान्दोर) के परिहार या प्रतिहार वंशके राजा कक्कुकने सन् ८६१ में बनवाया था। इस वंशके राजा कन्नौज या महोदयके प्रतिहार वंशी राजाओंके आधीन माड़वाड़में राज्य करते थे।

(१९) ओसियान या ओसिया या उकेसा-जोधपुरसे उत्तर ३० मील यह ओसवाल महाजनोंका मूल स्थान है। यहां एक जैन मंदिर है जिसमें एक विशाल मूर्ति श्री महावीर स्वामीकी है। यह मंदिर मूलमें सन् ७८३के करीब परिहार राजा वत्सराजके समयमें बनाया गया था। इसके उत्तर पूर्व मानस्तंभ है जिसमें सन् ८९९ है। सन् १९०७ की पश्चिम भारतकी प्राग्रेस रिपोर्टसे विदित है कि यह तेवरीसे उत्तर १४ मील है। इसका पूर्वनाम मेलपुर पट्टन था। ऊपर कहे हुए प्राचीन मंदिरको लेकर यहां १२ मंदिर है। हेमाचार्यके शिष्य- रत्नप्रभाचार्यने यहांके राजा और प्रजा सबको जैनी बना लिया था ऐसा ही ओसवाल लोग व ब्राह्मणलोग कहते हैं।

श्रीजिनसेनकृत हरिवंशपुराणमें प्रतिहारराजा वत्सराजका कथन है (सन् ७८३-८४)।

(१६) बारमेर-जि० मैलानी-जोधपुर शहरसे दक्षिण पश्चिम १३० मील। यहासे करीब ४ मील उत्तर पश्चिम जूना बगरमेर नगरके ध्वंश है। २ मील दक्षिण जाकर तीन पुराने जैन मंदिर हैं। सबसे बडे मदिरजीके एक स्तंभपर एक लेख सन् १२९१ का है जो कहता है कि उस समय बाहड़मेरुमें महाराजकुल सामन्तसिंहदेव राज्य करते थे। एक दूसरा लेख संवत् १३५६का है, श्री आदिनाथ भगवानका नाम है। यह जूना बारमेर हलमासे दक्षिण पूर्व १२ मील है।

(१७) मेरत नगर-मेरतरोड स्टेशनके पास जोधपुरसे उत्तर पूर्व ७३ मील। इसको जोधाके चौथे पुत्र दूदाने १४८८ के करीब बसाया था। इसके उत्तर पूर्व फालोदी ग्राममें सुन्दर और ऊचा जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथका है। वार्षिक मेला होता है।

(१८) पालीनगर-(म ड ा पाली) जोधपुर रेलवेपर बादी नदीके तटपर। जोधपुर नगरसे दक्षिण ४५ मील। यहा एक विशाल जैन मदिर है जिसको नौलखा कहते हैं। यह अपने बडे आकार, सुन्दर खुदाई काम व शिखरके समान दृढताके लिये प्रसिद्ध है। इसमें बहुतसा काम चारो तरफ बना है जिसमें भीतरसे ही जाया जासक्ता है, केवल बाहर एक ही द्वार है जो ३ फुट चौडा भी नहीं है। भीतर आगनमें एक मसजिद भी है जो शायद इस लिये बनाई हो कि यहा मुसलमानलोग ध्वंश न कर सकें। किसी समयमें पाली एक बडी नगर था। यहाके ब्राह्मणोंको पल्लीवाल कहते हैं। यहा

१ लाख पल्लीवालके वंशज रहते थे। इस नौलखा जैन मंदिरमें प्राचीन मूर्तियें वि० सं० ११४४ से १२०१ तककी हैं। कुछ प्रतिमाओंके लेख नीचे लिखे भांति हैं।

(१) सं० ११४४ माघ सुदी ११। वृहस्पति व राममादेवीके पुत्र जज्जकने वीरनाथ मंदिरमें वीरनाथ प्रतिमा स्थापित की, ऐंद्रदेव द्वारा जो प्रद्योतनाचार्यसूरिके गच्छमें थे।

(२) स० ११५१ आषाढ़ सुदी ८ गुरौ लक्ष्मण पुत्र देशने श्री वीरनाथके देवकुलिकमें रिषभदेव प्रतिमा स्थापित की सुद्योतनाचार्यके गच्छके भाडा और भाडाकके धार्मिकभावके लिये जो पाली निवासी थे।

(३) सं० 　ज्येष्ठ वदी ६ श्री विमलनाथ व महावीरकी मूर्तियोंको पछिकामें महामात्य श्री प्रथ्वीपालने जो महामात्य श्री आनन्दका पुत्र था स्थापित की।

यह मंदिर मूलमें श्री महावीरस्वामीका है, परन्तु मुसलमानोंने इसको ध्वंश किया तब श्री पार्श्वनाथकी प्रतिमा स्थापित की गई और पार्श्वनाथ मंदिर कहलाने लगा। इस पार्श्वनाथकी मूर्तिपर लेख है सं० १६८६ वैसाख सुदी ८ शनौ राजा गजसिंह व राजकुमार अमरसिंह राज्ये श्रीमाली जाति पालीवासी डूंगर और भारवरने प्रतिष्ठा की, आचार्य तपगच्छीय विजयदेव सूरिद्वारा उस समय पाली जसवन्तके पुत्र जगन्नाथ चाहमान द्वारा शासित थी।

(१९) सांभर-यह बहुत प्राचीन नगर है जब चौहान राजपूत गंगाजीके तटसे राजपूतानामें ८ वी शताब्दीके मध्यमें आए तब पहले पहल यही राज्यधानी स्थापित की। अतिंम हिंदू

राजा पृथ्वीराज चौहान था जो अपनेको सम्भारी राव कहता था यह सन् ११९२ में मरा था। यहा झील २० मील लम्बी व ७ मील चौडी है।

(२०) संचोर—नगर—जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम १५० मील। यहा एक पुरानी मसजिद है जो पुराने जैन मदिरोंको तोड कर बनाई गई है। यहा तीन पाषाणके खमो पर ४ लेख है उनमेंसे दो संस्कृतमें हैं, जिनका भाव है (१) संवत १२७७ मडप बनाया संघपति हरिश्चन्द्रने, (२) स० १३२२ वैशाख वदी १३ सत्यपुर महास्थानके भीमदेवके राज्यमें श्री महावीर स्वामीके जैन मदिरमें जीर्णोद्धार किया ओसवाल भडारी छाधाद्वारा।

(२१) नाना—रेलवे स्टे० नानासे २ मील। यहा श्री महावीरस्वामीका जैन मदिर है उसमें लेख है कि बिल्हरा गोत्रके ओसवाल इडाने स० १५०६ माघवदी १० श्री शातिसूरि द्वारा मदिरके द्वारपर एक लेख स० १०१७का है। आलेके भीतर एक लेख स० १६९९का है कि राणा श्री अमरसिंहने मदिरको दान किय।

(२२) वेलार—नानासे उत्तर पश्चिम ३ मील। यहा एक श्री पार्श्वनाथका जैन मदिर है उसके खंभेपर एक लेख स० १२६५का है कि नानाके राजा धावलदेवके राज्यमें किसी ओसवालने जीर्णोद्धार कराया।

(२३) हथुडी—बीजापुरसे दक्षिण पूर्व ३ मील। यहा श्री महावीर भगवानका एक जैन मदिर है। गूढ मडपमें एक लेख स० १३३५ श्रावण वदी ८ सोम २४ द्रम्मा श्रीमहावीरस्वामीकी पूजाको कर विना दिये।

द्वारमें दो तीन लेख हैं इसमें चाहमान राजा सामंतसिंहका नाम है। जोधपुरमें मुंशी देवीप्रसादके घरमें एक पाषाणका पट्टिया है उसमें एक बड़ा लेख है जिसमें हथुडीका नाम हस्तीकुंडी आता है। इसमें राष्ट्रकूट वंशजोंके नाम हैं, १० वी शताब्दीमें यह राष्ट्रकूटोंकी राज्यधानी थी। हस्तिकुंडया गच्छके जैनाचार्योंकी नामावली दी है। (J. B. A. S. Vol. LXII P. I. P. 309) इस लेखका पाषाण बीजापुर (बलीगोडवाड़में) ग्राममे दक्षिण ३ मील एक जैन मंदिरके द्वारके पास लगा हुआ था। यह पुराने हस्तिकुंडके खडहरोंमें पाया गया और बीजापुरकी जैनधर्म शालामें लाया गया। इसमें ६२ लाइन संस्कृतकी हैं। पहले ४१ श्लोककी प्रशस्ति सूर्याचार्यकृत है जो वि० सं० १०५३ (९९७ ई०) माघ सुदी १३ को रची गई थी। इसमें है कि धवलके राज्यमें हस्तिकुंडिकामें शांतिभद्र या शांत्याचार्यने श्री ऋषभदेवकी प्रतिष्ठा की और उस मंदिरमें स्थापित की जिसको धवलराजाके बाबा विदग्धने यहां बनवाया था। लाईन् •से ६ म ... [illegible]। लाइन २२से ३२ तक दूसरे लेखमें उसी मंदिरका धवलके पिता और नानाद्वारा भूमिदानका वर्णन है। इसमें वंशावली दी है—राजा हरिवर्मनके पुत्र विदग्ध राष्ट्रकूटवंशी उनके पुत्र मम्मट बलभद्र मुनिकी कृपासे सं० ९७३में विदग्ध राजाने दान दिया।। ९९६मे मम्मटने उसीको बढ़ादिया। धवल मम्मटका पुत्र था। धवल राज्यका वर्णन पहले लेखमें लाइन १० से १२में है कि सं० १०५३में उसका सम्बन्ध राजा मुंजराज दुर्लभराज मूलराज और धरणी वराहसे था। यह मुंजराज मालवाका राजा था, इसको वाक्पति मुंज भी

रहते थे। मुंजराजने मेवाड़ या मेड़ापातापर हमला किया था तब मेवाड़के राजाको छवलने मदद दी थी। इस छवलने महेन्द्रराजको भी मदद दी थी जब उसपर दुर्लभराजने हमला किया था जो शायद हर्षके लेखके अनुसार चाहमान विग्रहराजका भाई था। इसने धरणीवराहको भी मदद दी थी जब उसपर मूलराजने हमला किया था। यह चालुक्य मूलराज है जिसका सबसे अन्तका लेख वि० सं० १०३१का है।

माड़वाडी राठौड़ोंमें हथुंडी बहुत प्रसिद्ध जगह है। यह राठौड़ हस्तिकुंडके राष्ट्रकूटोंके वंशज हो सक्ते हैं।

(२४) सेवादी–बीजापुरसे उत्तर पूर्व ६ मील–यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है, कुछ मूर्तियां जैनाचार्योंकी हैं उनके आसनपर वि० सं० १२४९ संदेरक गच्छ है।

मंदिरके द्वारपर कई लेख हैं–(१)वि० सं० ११६७ चाहमान राजा अश्वराज पुत्र कटुक–धर्मनाथ पूजार्थ।

(२) वि० सं० ११७२ शांतिनाथ पूजार्थ कटुकराज द्वारा ८ द्रम्माका दान।

(३) वि० सं० १२१३–नडुलके दंडनायक वेजाद्वारा।

(२५) घनेरवा–सेवादीसे उत्तर पूर्व ६ मील–पहाडीके नीचे श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर ११वी शताब्दीका है।

(२६) वरकाना–जि० देसूरी–यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर १६वीं शताब्दीका है।

(२७) संदेरवा–यह यशोभद्रसूरि द्वारा स्थापित संदेरक जैन गच्छका मूल स्थान है। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है

जिसके द्वारपर एक लेख है कि सं० १२२१ माघ वदी २ को केल्हणदेव राजाकी माता आणलदेवीने राजाकी सम्पत्तिमेंसे श्री महावीरस्वामीकी पूजाके लिये दान किया था। यह राष्ट्रकूट वंश सहुलाकी पुत्री थी। सभामंडपके खंभे पर ४ लेख हैं–१ है सं० १२३६ कार्तिक वदी २ बुधे कल्हणदेवके राज्यमें थंथाके पुः रल्हाका और पल्हाने श्री पार्श्वनाथजीके लिये दान किया।

(२८) कोरता–संदेरवासे दक्षिण पश्चिम १६ मील। यह तीन जैन मंदिर हैं जो १४ वीं शताव्दीके हैं।

(२९) जालोर–नगर जि० जालोर। जोधपुरसे दक्षिण ८० मील। यहां एक किला है उसमें तोपखाना तथा मसजिद है जो जैन और हिन्दू मंदिरोके ध्वंशोंसे वनाई गई है। यहां बहुतसे लेख हैं व तीन जैन मंदिर श्री आदिनाथ, महावीर व पार्श्वनाथके हैं जो इनके लेखोंसे प्रगट है। ये लेख हैं–

(१) सं० १२३९ चाहमान वंशी कीर्तिपालके पुत्र समरसिंहके राज्यमें आदिनाथका मंदिर श्रीमाल वनिया यशोवीरने वनवाया। (२) सं० १२२१में श्री पार्श्वनाथके मंदिरमें चालुक्य राजा कुमारपालने जवालीपुर (जालोर) के कंचनगिरिके किलेपर श्री हेमसूरिकी आज्ञासे कुवेरविहार वनवाया। (३) सं० १२४२ चाहमान वंशी समरसिंहदेवकी आज्ञासे यशोवीर भंडारीने मंदिरका जीर्णोद्धार किया। (४) सं० १२९६ श्री पार्श्वनाथ मंदिरके तोरण और ध्वजाकी प्रतिष्टा पूर्णदेवाचार्यने की। (५) एक लेख सं० ११७४ परमार राजा विशालके समयका है। किला ८०० गजसे ४०० गज है। यहां दो जैन मंदिर और हैं एक सं० १६८३

में जयमल्लने बनवाया, इसमें विशाल आकारकी एक कुन्थुनाथजीकी मूर्ति है इसको विजयदेवसूरिकी आज्ञासे सामीदारक ओसवालने स० १६८४में प्रतिष्ठा कराई। दूसरे जैन मंदिरमें तीन विशाल मूर्तियें श्री महावीर, चन्द्रप्रभु और कुंथुनाथजीकी हैं, इनपर लम्बा लेख है–प्रतिष्ठाकारक मुहनोत्र गोत्रकी वृहद शाखाके जयमल्ल ओसवाल स० १६८१ राठोड महाराज गजसिंहके राज्यमे।

(३०) केकिंद–मेरतासे दक्षिण पश्चिम १४ मील शिव मंदिरके पास एक जैन मंदिर श्री पार्श्वनाथका है। इसके खंभेपर लेख है–स० १६६५ राठौडवंशी मल्लदेवके परपोते उदयसिंह। इनके पोते सारसिंहके पुत्र गजसिंहके राज्यमें जोगा ओसवाल और उसके पोते नापीने सकुटुम्ब स० १६६९में श्री उज्जयंत और सेत्रुंजयकी यात्रा की व स० १६६४में अर्बुदगिरी (आबू), राणापुर (सादड़ीसे दक्षिण ६ मील) नारदपुरी (नाडोल जि० देसूरी) व शिवपुरी (सिरोही) की यात्रा की व मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा विजयदेवसूरिने कराई। मूल मंदिरके सम्बन्धमें एक छोटा लेख एक मूर्तिके आसनपर है स० १२३० आषाढ सुदी ९ किष्किन्धा (केकिंद) में (सु)विधिकी मूर्त्ति स्थापित की।

(३१) वारल्ल–वागोदियासे उत्तर ४ मील यहां १३ वीं शताब्दीका एक श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है।

(३२) ऊनोतरा–वारल्लसे पश्चिम ४ मील। यहां भी १२ वीं शताब्दीका एक जैन मंदिर है।

(३३) सुरपुरा–वारल्लसे उत्तर पूर्व ३ मील। यहां श्री नेमिनाथका जैन मंदिर है। लेख १२३९का है।

(३४) नदसर–सुरपुरासे उत्तरपूर्व ६ मील। यहा एक प्राचीन जैन मदिर है। १०वी शताब्दीके आश्चर्यजनक स्तभ हैं।

(३५) जासोल–जि० मल्लानी। जोधपुरसे दक्षिण पूर्व ६० मील। यह लूणी नदीपर है। एक जैन मदिर है। यहा एक हिंदू मदिर है जो जैन मदिरके पुराने सामानसे बनाया गया है। एक पाषाण जो सभामण्डपकी भीतपर लगा है वह खेडके जैन मदिरसे लाया गया है उसपर लेख स० १२४६ है। इस जैन मदिरमें दो मूर्तियें श्री सम्भवनाथकी हैं जिनकी प्रतिष्ठा सह देवके पुत्र सोनीगरने कराई थी। यह भानुदेवाचार्यके गच्छके श्री महावीरस्वामीके मदिरकी हैं जो खेतलापर है। इस जैन मदिरको देवी देहरा कहते हैं। इसमें एक लेख सवत १६५९ रौला विक्रमदेनके राज्यका है।

(३६) नगर–जासोलसे दक्षिण ३ मील। यहा तीन जैन मदिर हैं (१) नाकोडा पार्श्वनाथका (२) लासीबाई ओसवाल कृत श्री रिषभदेवका (३) जेसलमेरके पटवा वशके सेठ मालासा कृत शातिनाथका, यह १३वी शताब्दीका है।

रिषभदेवके मदिरमें तीन लेख हैं–(१) स० १९४८ रौला कुस्करणके राज्यमें नजग गच्छके स्वामी भट्टारक प्रभु हेम विमल सूरिके शिष्य पडित चारित्रसाधगणिकी सम्मतिसे वीरमपुर (नगरका प्राचीन नाम)के सघने श्री विमलनाथके मदिरमें रङ्ग मण्डप बनवाया(२) स० १६३१ रौला मेघराज राज्यमें परम भट्टारक श्री हीरविजयसूरि तपगच्छीयके शिष्य विजयसेनसूरि (३)स० १६६७।

शातिनाथजीके मदिरमें लेख है–स० १६१४ रौला मेघराज

राज्ये जिनचन्दसूरि खरतर गच्छीय । श्री पार्श्वनाथके मंदिरमें दो लेख हैं–(१) सं० १६८१ गैला जगमल राज्ये पल्लिपाल गच्छके यशोदेव सूरिकी आज्ञामें पल्लीगच्छके जयसिंहने निगमचतुष्टिका बनवाई । (२) सं० १६७८ वर्ष नाम है ।

(३७) खेड़–नगरसे उत्तर ५ मील। यह मल्लानाकी राज्य धानी थी । यहां रणछोड़जीके मंदिरमें हातेके भीतपर दो जैन मूर्तियां लगी हैं जिनमें एक बैठे व दूसरी खडे आसन हैं ।

(३८) तिवरी–ओसियासे दक्षिण १३ मील। यहां बहुतसे ध्वंश मंदिर हैं उनमें एक बड़ा जैन मंदिर श्री महावीरस्वामीका है । मंदिरके सामने मानस्तम्भ है । उसके मध्यमें ८ जैन तीर्थंकरकी मूर्तियां पद्मासन हैं। नीचे चार खडे आसन मूर्तियां हैं। उसके नीचे ४ बैठे आसन हैं। इस स्तम्भपर लेख है उसमें वि० सं० १०७५ आषाढ सुदी १० है–यह २८ लाइनका है। यह मंदिर उस समय मौजूद था जब प्रतिहारवंशी राजा वत्सराज सन् ७७०–८०० के करीब यहां राज्य करता था । इसका नाल मंडप वि० सं० १०१३में बनाया गया था ।

(३९) फालोदी–यहां प्राचीन श्री पार्श्वनाथका मंदिर है । यहांकी मूर्ति एक वृक्षके नीचे मिली थी जहां एक जैनकी गाय नित्य दूधकी धार डाला करती थी ।

---

(५) जसलमेर राज्य ।

इसकी चोहद्दी इस प्रकार है । उत्तरमें बहावल्पुर, उत्तरपूर्वमें बीकानेर, पश्चिममें सिंध, दक्षिण व पूर्व जोधपुर । यहां

१६०६२ वर्गमील जगह है जिसमें एक बडा भारतीय रेतीला जगल है। इसका राजा कृष्णवशी यदुवशी है, सालिवाहनका पोता भाटी जादो बहुत वीर था व प्रसिद्ध हुआ है। जैसवाल रावलने जैसलमेर सन् ११९६में बसाया था।

यहा विरसिलपुरका किला दूसरी शताब्दीका व तनातका किला ८वीं शताब्दीका है।

(१) **जैसलमेर नगर**—बार्मेर स्टेशनसे ९० मील है। यहा २३२ जैनी है। पहाडीपर किला है, किलेके भीतर ८ जैन मदिर हैं, जो बहुत सुन्दर हैं व इनमें अच्छी खुदाई है, इनमें कई मदिर १४०० वर्षके पुराने हैं। श्री पार्श्वनाथजीका मन्दिर बहुत ही बढिया है जिसको जैसिह चोलाशाहने सन् १३३२मे बनवाया था। यहा प्राचीन जैन शास्त्रोंके भडार हैं जिनकी अच्छी तरह खोज नहीं की गई है।

(२) *लोडरवा*—जैसलमेरसे १० मील। यहा एक जैन मदिर श्री पार्श्वनाथजीका १००० वर्षके करीब प्राचीन है।

---

(६) सिरोही राज्य।

इसकी चौहद्दी इस प्रकार है—उत्तर पश्चिम जोधपुर, दक्षिणमें पालनपुर, दाता, ईडर, पूर्वमें उदयपुर, आबू पहाड व चद्रावतीका प्राचीन नगर। यहा १९६४ वर्गमील स्थान है। पिंटवाराके पास वसन्तगढ नामका पुराना किला है इसमें राजा वर्मलातका लेख सन् ६२९ का है। इस राज्यमें ११ सैकडा जैनी हैं कुल सख्या १७२२६ (१९०१ के अनुसार) है।

(१) **नांदिया**–पिंडवारासे पश्चिम ५ मील। यहा एक बहुत सुरक्षित जैन मंदिर श्री महावीर स्वामीका ९०० वर्षका पुराना है। बाहरकी भीतमें लेख सन् १०७३का है।

(२) **झारोली**–ग्राम सिरोहीसे पूर्व १४ मील व पिंडवारासे २ मील। यहा श्री शातिनाथका जैन मदिर है जिसके स्तम्भ व मिहराव आबूके विमलशाहके मंदिरसे मुकाबला करते हैं। एक श्री रिषभदेवकी मूर्तिपर सन् ११७९का लेख है प्रतिठाकारक देवचन्द्रसूरि हैं। इस मदिरमें एक शिलालेख है जिसमें परमार राजा धारावर्ष स० १२५१ है। यह मूलमे श्री महावीर मदिर था। धारावर्षकी रानी शृंगार देवीने कुछ भूमि दान की थी। यह शृंगारदेवी नाडोलके चौहान राजा केल्हणदेवकी पुत्री थी।

(३) **मीरपुर**–सिरोहीसे दक्षिण पश्चिम ९ मील। यहा गोडीनाथके नामसे एक जैन मदिर १४वीं शताब्दीका है। इसके पास तीन नाए जैन मदिर हैं जिनमें कुछ मूर्तिया पुरानी हैं उनमे नीनपर स० ११९९ व दोपर १२८९ हैं। ये दूसरे मदिरसे लाई गई हैं।

(४) **मुंगथल**–खराडीसे दक्षिण पश्चिम ५ मील। यहा १० वीं शताब्दीका जैन मदिर है। जो श्री महावीर स्वामीका है, खभोंपर लेख हैं। सबसे पुराना है स० १२१६ वैसाख वदी ९ सोमे, यह कहता है कि वीसलने जासाताहुदेवीकी स्मृतिमें एक स्तभ बनवाया। दो और लेख हैं–१ स० १४२६ वैसाख सुदी ८ रवौ श्रीपाल पोड्वाडने कुछ जीर्णोद्धार किया। दूसरा कहता है कि नन्नाचार्यकी सतानमें ककसूरिके पट्टमे सत्यदेवसूरिने मूर्ति

स्थापित की। आबूके मंदिरके लेख नं० २ में इस स्थानको मंद-स्थल लिखा है।

(५) पतनारायण–मुंगथलसे उत्तर पश्चिम ६ मील। यहां पतनारायणका गिरवार मंदिर है जिसमें द्वार पुराना है जो जैन मंदिरसे लाया गया है।

(६) ओर–कीवरली स्टे० से ४ मील दक्षिण व खराड़ीसे उत्तर पूर्व ३ मील। इसका प्राचीन नाम ओद ग्राम है। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है। लेख संवत् १२४२ है उसीमें नाम ओद ग्राम है व महावीर स्वामी मंदिर लिखा है। यहां विड-लानीके मंदिरके द्वारपर जैन मूर्ति है। यह द्वार जैन मंदिरका है जो चंद्रावतीसे लाया गया।

(७) नीतोरा–राहड़े स्टे० से उत्तर पश्चिम ४ मील है। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर है। एक प्रतिमा संगमर्मरकी है जिसके आसनपर चक्रका चिह्न है। इस प्रतिमाको बाबाजी कहते हैं। यहां क्षेत्रपालकी मूर्तिके ऊपर एक बैठे आसन मूर्ति है इसपर लेख है सं० १४९१ वैसाख सुदी २ गुरु दिने यक्ष बाबा मूर्ति।

(८) कोजरा–नीतोरासे उत्तरपूर्व १० मील। यहां १२वीं शताब्दीका संभवनाथजीका जैन मंदिर है। खंभेपर लेख है। सं० १२२४ श्रावण वदी ४ सोमे श्री पार्श्वनाथदेव चैत राणाराव। यह मूलमें श्री पार्श्वनाथ मंदिर था।

(९) वामनवारजी–कोजरासे १० मील व पिंडवारा स्टे०से ४ मील। यहां मुख्य मंदिर श्री महावीरजीका १४वीं या १५वीं शताब्दीका है जिसको वामनवारजी कहते हैं। एक छोटे मंदिरपर

लेख है स० १९१९ प्राग्वाट (पोडवाड) वनिया वीरवातकका (वीरवाडा यहासे १ मील) ।

(१०) वलदा–वामनवारजीसे ६ मील। यहा १४वी वा १५वीं शताब्दीका जैन मदिर है। मुख्य वेदीमें श्री महावीरस्वामीकी मूर्ति है सं० १६९७ है। मदिर मूर्तिसे प्राचीन है। द्वारके आलेपर एक लेख है स० १४८३ जेठ सुदी ७ गुणभद्रने अपने बुजुर्ग वलदेवसे बनाए हुए मदिरका जीर्णोद्धार किया।

(११) कलार–सिरोहीसे उत्तरपूर्व ९ मील। यहा आदि नाथका मदिर १५वीं शताब्दीका है १४ स्वप्न बने है। महाराणी सोई हुई है। लिखा है महाराणी उसालादेवी चतुर्दशस्वप्नानि पश्यति।

(१२) पालदी–सिरोहीसे उत्तरपूर्व १० मील। यहा सात स्तम्भोंपर लेख है स० १२४८ आपाढ वदी १ शुक्र व दीवालके वाहर एक पापाणपर है स० १२४९ माव सुदी १० गुर महाराज श्री केल्हणदेव और उसके पुत्र जयल्सिहदेव।

(१३) वागिन–पालोदीसे १ मील। २ जैन मदिर श्री आदिनाथजीके है। एक वडा १२ या १३ शताब्दीका है। दो स्तंभोपर लेख स० १२६४के है। मुख्य मदिरके द्वारपर है स० १३५९ सामतसिंहदेवके राज्यमें वाघसेनका दान हुआ।

(१४) उथमन–पालोदीके उत्तरपूर्व १॥ मील। यहा जैन मदिर है, जिसमें १ सुन्दर सगमर्मरकी मूर्ति है। यहा आलेमें एक लेख स० १२११का है कि धनासरके पुत्र देवधरने अपनी स्त्री धारामतीके द्वारा श्री पार्श्वनाथके मदिरको दान कराया।

(१५) लास–पालोदीसे उत्तर पश्चिम १० मील यहां २ जैन मंदिर हैं एक श्री आदिनाथजीका है।

(१६) जावल–यहां १४वीं शताब्दीका श्री महावीरजीका जैन मंदिर है।

(१७) कातन्द्री–मुख्य मंदिरमें एक लेख है कि वि० स० १३८९ फागुण सुदी ८ सोमे सर्व संघने समाधिमरण किया। नाम दिये हुए हैं।

(१८) उदरत–धन्धापुरसे २ मील। यहां एक जैन मंदिर है।

(१९) जीरावल–रेवाधरसे उत्तर पश्चिम ९ मील। पर्वतके नीचे जैन मंदिर है जो नेमिनाथका प्रसिद्ध है। यह मूलमें पार्श्वनाथ मंदिर था। पुराना लेख सं० १४२१का व पिछला सं० १४८३ का ओसवाल वनिया विशालनगर व कल्वनगर।

(२०) वरमन–देवधर और मनधारके मध्य सुकली नदीके पश्चिम एक प्राचीन नगर था। ग्रामके दक्षिण श्रीमहावीरस्वामीका जैन मंदिर सं० १२४२ का है।

(२१) सिरोही या सिरणवा–पिंडवाड़ा स्टे० से १६ मील महाराव सैंसमलने सन् १४२५ में वसाया। जैन मंदिर देरासरीके नामसे प्रसिद्ध है। चौमुखजीका मंदिर मुख्य है। जो वि० सं० १६३४में बना था।

(२२) पिंडवाड़ा–यहां श्री महावीर स्वामीका जैन मंदिर सं० १४६५ का है।

(२३) अजारी–पिंडवाड़ासे ३ मील दक्षिण। श्री महावीर स्वामीका जैन मंदिर। एक सरस्वतीकी मूर्तिके नीचे सं० १२६९ है।

(२४) वसंतगढ़–अजारीसे ३ मील दक्षिण। यहां टूटे हुए जैन मंदिर हैं–एक तहखानेमें मूर्तियां मिलीं। एकपर लेख है सं० १५०७ राणा श्री कुंभकरण राज्ये वसंतपुर चैत्ये। यहां कुछ धातुकी मूर्तियां निकली थी जो पिंडवाडाके जैन मंदिरमें हैं, एकपर सं० ७४४ है।

(२५) वाग़ा–रोहडा टे०से १॥ मील उत्तरपूर्व। यहां जगदीश नामका शिवालय है इसपर एक जैन मूर्ति है। यह पहले जैन मंदिर था।

(२६) कालागरा–वासासे २ मील। यहां श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर था, अब पता नहीं है। एक लेख सं०१३००का मिला है। उस समय चंद्रावतीका राजा अल्हणदेव था।

(२७) कामद्रा–कीवरली स्टे०से ४ मील उत्तर। आबूके निकट। यहां प्राचीन जैन मंदिर है, चौतरफ जिनालय है। एकके ऊपर सं० १०९१ का लेख है। एक और प्राचीन जैन मंदिर था जिसके पत्थर गेहेडाके जैन मंदिरमें लगे हैं।

(२८) चंद्रावती-आबूरोड स्टे०से ४ मील दक्षिण। यह प्राचीन नगर था, दूर२ तक खंडहर है। यह परमार राजाओंकी राज्यधानी था। आबूके दिलवाडेके प्रसिद्ध नेमनाथ मंदिरके बनानेवाले मंत्री वस्तुपालकी स्त्री अनुपम देवी यहांके पोरवाड महाजन गागाके पुत्र धरणिगकी पुत्री थी।

(२९) गिरवर–मधुसूदनसे करीब ४ मील पश्चिम। मूंगथलीसे १ मील मधुसूदन है। यहां टूटा हुआ जैन मंदिर है। विष्णु मंदिरका द्वार चन्द्रावतीसे लाया गया है, ऊपर जैन मूर्ति है।

(३०) दताणी–गिरवरसे ६ मील उत्तरपश्चिम। यहां १ जैन मंदिर है।

(३१) हणाद्री–आबूके पश्चिम पर्वतसे ११ मील। वस्तुपालके मंदिरके शिलालेखोंमें सं० १२८७में इस गावका नाम हडा-उद्रा आया है। यहा १ जैन मंदिर है।

(३२) सणापुर–हणाद्रेसे १२ मील उत्तरपूर्व, यहां जैन मंदिर १२वीं शताब्दीका है।

(३३) पालडीगांव–सिरोहीसे १२ मील उत्तरपूर्व। जैन मंदिर है उसमें चौहान राजा केल्हणदेवके कुंवर कीतसिंहका लेख सं० १२३९का है।

(३४) वागीण–पालडीसे २ मील। जैन मंदिरमें लेख चौहान रा० सामतसिंह सं० १३५९।

(३५) सीवरा–सिरोहीसे १२ मील पूर्व झालोरीसे ३ मील उत्तर। श्री शांतिनाथका जैन मंदिर, लेख सं० १२८९ देवडा विजयसिंह।

(३६) आबू पर्वत–आरावला (अर्वली) सिरोहीसे दक्षिण पूर्व। ऊंचाई ५६५० फुट व समान भूमिसे ४००० फुट ऊंचा, ऊपर लम्बा १२ मील, चौडा करीब ३ मील। आबूरोड स्टेशनसे १८ मील सडक ऊपर है। यहा दिलवाडामें श्री जैन प्रसिद्ध मंदिर श्री आदिनाथ और नेमनाथके हैं। इनमें पुराना व सुन्दर विमलशाह पोडवाडका बनवाया विमलवसही नामका श्री आदिनाथ मंदिर है जो वि० सं० १०८८में समाप्त हुआ था। उस

गुजरातके सोलंकी राजा भीमदेवका सामंत था। कुछ अनबन होनेसे धंधुक रूठकर मालवाके राजा भोजके पास चला गया तब भीमदेवने विमलशाह जैनको दंडनायक (सेनापति) नियत कर आबू भेजा, इसने धंधुकको बुलाकर उसका मेल भीमदेवसे करा दिया। तब धंधुकसे दिलवाडाकी भूमि लेकर विमलशाहने यह जिन मंदिर बनवाया। इसमें मुख्य मूर्ति श्री रिषभदेवकी है जिसके दोनों तरफ कार्योत्सर्ग मूर्तियें हैं। सामने हस्तिशाला है, वहीं विमलशाहकी पाषाण मूर्ति अश्वारूढ विराजमान है। हस्तिशालामें दस हाथी हैं—जिनमें ६ हाथियोंको सं० १२०५में फागुण वदी १०को नेढक, आनंदक, पृथ्वीपाल, धीरक, लहरक, मीनकने बनवाया था जो महामात्य थे। एक हाथीको परमार ठाकुर जगदेवने, एकको महामात्य धनपालने वि० सं० १२३७ आषाढ सुदी ८को बनवाया। १को महमात्य धवलकने बनवाया। (नोट—इसमें ९ हाथीके बननेका वर्णन है।) हस्तिशालाके बाहर परमारोंसे आबूका राज्य छीननेवाले चौहान महाराव लुंढा (लुभा) के दो लेख वि० सं० १३७२ और १३७३के हैं।

इस मंदिरके १ भागको मुसल्मानोंने तोडा था तब लल्ल और बीजाड साहूकारोंने सं० १३७८ चौहान महाराणा तेजसिंहके राज्यमें जीर्णोद्धार कराया था और तब एक ऋषभदेवकी मूर्ति स्थापित की। दीवारमें एक लेख सं० १३५० माघ सुदी १ बघेल (सोलंकी) राजा सारंगदेवके समयका है।

(२) लूणवसही—यह नेमनाथका मंदिर है। इसको वस्तुपाल और तेजपाल मंदिर भी कहते हैं। ये दोनो वस्तुपाल

तेजपाल अनहिलवाड पाटनके पोडवाड़ महाजन अश्वराज (आस राज) के पुत्र थे । धोलकाके सोलकी राणा (विघेलवशी) वीर धवलके मत्री थे । तेजपालने अपने पुत्र लूणसिंह व स्त्री अनुपम देवीके हितार्थ करोडो रुपये लगाकर नि० स० १२८७ मे यह मदिर बनवाया । इन मदिरोकी छतोमें जैन कथाओंके भी चित्र हैं । इस नेमनाथ मन्दिरोंमें दो बड़े [illegible] । पृष्ठ ७४

सुतमहं श्री तेजःपालेन श्रीमत्पत्तन वास्तव्य मोढ़ जातीय ठ० जाल्हण सुत ठ० आससुतायाः ठकुराज्ञी संतोषाकुक्षि संभूताया महं श्री तेजःपाल द्वितीय भार्या मह श्री सुहड़ादेव्याः श्रेयोर्थ.... (आगेका भाग टूट गया है)।

इस मंदिरकी हस्तिशालामें संगमर्मरकी १० हथनियां हैं जिनपर १० सवारोंकी मूर्तियां थीं, अब नहीं रही हैं। इस संबंधी वंशवृक्ष नीचे प्रकार है—

चंडप
|
चंडीप्रसाद
|
सोमसिंह
|
अश्वराज
|

लूणिक	मल्लदेव	वस्तुपाल	तेजःपाल
१		जैत्रसिंह	लवणसिंह

इन हथनियोंके पीछेकी पूर्व भीतिमें १० आले हैं उनमें इन १० पुरुषोंकी स्त्रियोंकी मूर्तियें पत्थरकी खड़ी हैं, हाथोंमें पुष्प-माला हैं। वस्तुपालके सिरपर पाषाणका छत्र है। मूर्तिके नीचे प्रत्येक पुरुष व स्त्रीका नाम है। पहले आलेमें चार मूर्तियां खड़ी हैं वे आचार्य उदयसेन, विजयसेन हैं व तीसरी मूर्ति चंडप व चौथी चंडपकी स्त्री चामलदेवीकी है। उदयसेन विजयसेनके शिष्य थे। यह नागेन्द्रगच्छके साधु व वस्तुपालके कुल गुरु थे। मंदिरजीकी

प्रतिष्ठा विजयसेन हीने कराई थी। इस अपूर्व मंदिरको शोभन नाम शिल्पीने बनवाया था। मुसल्मानोंने इसको भी तोड़ा तब पेथड़ संघपतिने जीर्णोद्धार कराया। लेख स्तम्भपर है संवत नहीं है।

वस्तुपालके मंदिरसे थोड़े अंतरपर भीमासाह (या भैंसासाह) का बनवाया हुआ मंदिर है। इसमें १०८ मन तौलकी सर्व धातुकी श्री आदिनाथकी मूर्ति है जो वि०सं० १५२९ फागुण सुदी १को गुर्जल श्रीमाल जातिके मंत्री मंडनके पुत्र पुत्री सुन्दर तथा गंदाने स्थापित की। इसके सिवाय दो मंदिर श्वे० व दो मंदिर दिगंबरी हैं। आबूके मंदिर संगमर्मरकी अपूर्व खुदाईके हैं, करोड़ों रुपयोंकी लागतके हैं। जगतभरमें प्रसिद्ध हैं।

(३७) अचलगढ़–दिलवाड़ासे ५ मील उत्तरपूर्व। यहां सोलंकी राजा कुमारपाल कृत शांतिनाथका जैन मंदिर है उसमें तीन मूर्तियां हैं। एक पर वि० सं० १३०२ है। पर्वतपर चढ़के कुंथुनाथका जैन मंदिर है। इसमें पीतलधातुकी मूर्ति स० १५२७की है और ऊपर जाके पार्श्वनाथ, नेमनाथ व आदिनाथके मंदिर हैं। आदिनाथका मंदिर चौमुखा है व प्रसिद्ध है नीचे व ऊपर चार पीतलकी बड़ी मूर्तियां हैं। कुल १४ मूर्तियां हैं तौल १४४ मन है। इनमें सबसे पुरानी मूर्ति मेवाड़ राजा कुंभकर्ण (कुंभ) समय वि० सं० १५१८की प्रतिष्ठित है।

(३८) ओरिया–अचलगढ़से २ मील उत्तर। इसे कनख तीर्थ कहते हैं। यहां श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर है। एक ओ पार्श्वनाथ व दूसरी ओर श्री शांतिनाथ हैं।

(७) जैपुर राज्य--(जैपुर रेजिडेन्सी)।

इसमें राज्य जैपुर, किशनगढ़ व लावी शामिल हैं। इसकी चौहद्दी यह है--उत्तरमें बीकानेर, पंजाब; पश्चिममें जोधपुर, अजमेर; दक्षिणमें शाहपुर, उदयपुर, बुन्दी, ग्वालियर; पूर्वमें करौली, भरतपुर, अलवर। यहां १६४५६ वर्गमील स्थान है।

जैपुर राज्य--यहां १५५७९ वर्गमील जगह है। यहां रामचंद्रके वंशज कचवाहा राजपूत राज्य करते हैं। पहला राजा ग्वालियरका वज्रदामन था। इसने जैपुर राज्यको कन्नौज राज्यसे ले लिया, आप स्वतंत्र हो गया। ऐसा ग्वालियरके लेख सन् ९७७से प्रगट है। पहले आंबेरमें राज्यधानी थी, सवाई जैसिंह द्वि० आंबेरमें सन् १६९९में हुआ। इसका मरण सन् १७४३में हुआ। इसने राज्यधानी आंबेरसे जैपुरमें सन् १७२८में बदली। यह राजा वैज्ञानिक ज्ञान और कलाके लिये प्रसिद्ध था। इसने बहुतसे गणितके ग्रंथ संस्कृतमें उलथा कराए और ज्योतिषचक्रके दृश्यके मकान जैपुर, दिहली, बनारस, मथुरा, उज्जैनमें बनवाए जिसमें इसने डी० लाहाइर अंग्रेजके ज्योतिषके हिसाबको शुद्ध कर दिया। यह राजा एक अपूर्व विद्वान् था।

पुरातत्व--आंबेर, बैराट, चाटसू, दौसा, व रणथंभोरके किलेमें हैं।

यहां ७ फीसदी जैनी हैं। १९०१ में ४४६३० थे।

यहांके मुख्य स्थान

(१) आम्बेर–जैपुरसे उत्तरपूर्व ७ मील। यह बहुत प्राचीन जगह है। यहां सन् ९५४का लेख मिला है। कई जैन मंदिर हैं।

(२) वैराट–ता० वैराट–जैपुरसे उत्तरपूर्व ४२ मील। बहुत प्राचीन स्थान है। यहां महाराज अशोक (सन् ई०से २५० वर्ष पूर्व) के दो शिलालेख हैं। नगरके १ मीलकी हद्दमें बहुतसे तांबेके सिक्के मिले हैं। यहां पांच पांडव अपने परदेश भ्रमणके समय ठहरे थे। यह प्राचीन मत्स्य प्रान्तकी राज्यधानी थी। चीनी यात्री हुइनसांग यहां सन् ६१४ में आया था। यहां एक पार्श्वनाथका दि० जैन मंदिर है। यहां एक मूर्तिपर शाका १५०९ हीरविजय लिखा है।

(३) चाटसू या चाकसू–चादसू स्टे० से २ मील प्राचीन नगर है। सन् ई० से १७ वर्ष पहले प्रसिद्ध विक्रमादित्यका स्थान था। यहां तांबेकी भीत थी। इससे इसको ताम्बा नगरी कहते हैं। यहां सेसोदिया जातिके राजा राज्य करते थे।

(४) झुंझनू–शेखावाटीमें, जैपुरसे उत्तर पश्चिम ९० मील। यहां १००० वर्षका प्राचीन जैन मंदिर है।

(५) खंडेला–निजामत तोरावाटीमें जयपुरसे उत्तर पश्चिम ५५ मील। स० नोट–यह खंडेलवाल जातिकी उत्पत्तिका स्थान है।

(६) नरैना–निजामत सांभर। यहां दादूपन्थका स्थापक दादू अकबर बादशाहके समयमें रहता था। यह सन् १६०३में मरा है। इसका मरण स्थान वहां एक झीलके पास है। इसकी पुस्तकका नाम वाणी है।

(७) सांगानेर–जैपुरसे ७ मील। यहा सगमर्मरके जैनियोंके बढ़िया मदिर है।

(८) जैपुर शहर–वर्तमानमें जैपुरमें अनुमान १६० के दि० जैन मदिर व चैत्यालय है।

(९) आरसपहाड व ग्राम–सीकर राज्यसे ६ मील जाकर २ मील ऊची पहाडी है। सडक पक्की गई है। नीचे ग्राम है, दि० जैन मदिर है, ५–६ घर है। हम ता० १७ दिस० को पर्वतपर गए थे। ऊपर चढकर २ मील और जानेपर मनोहर पाषाणके खुदे हुए खडहर मिलते है जिनमें बहुत देवी देवताओंके चित्र है। कहते हैं यहा ८४ मदिर थे। देखनेसे मालूम होता है कि इनमें कई जैनोंके भी होंगे। यद्यपि पर्वतपर हमें कोई जैन मूर्तिका चिह्न नहीं मिला परन्तु पूछनेसे मालूम हुआ कि यहापर जैन मूर्तिया थीं जिनमेंसे कई इग्रेज लोग लेगए, दो मूर्तिया यहींकी गई हुई १ चौवीसी व १ और दि० जैन अखडित सीकरके बडे जिन मदिरजीमें स्थापित हैं तथा आरसग्राममें एक भैरोका स्थान है वहापर दो हाथ ऊची पद्मासन मूर्ति तीन छत्र इन्द्र आदि सहित विराजित है। मुखको आगे लगाकर व सेंदुर चिपकाकर भैरोजीके सदृश कर लिया गया है। ३०० वर्षका एक शिव मदिर है व एक भैरोंका है। ये मदिर जो टूटे हुए हैं वे अवश्य बहुत प्राचीन होंगे। एक संस्कृत शिला लेख है जिसमें सवत ग्यारहवीं शताब्दीका प्रारम्भ है।

(८) किशनगढ़ राज्य।

इस राज्यको महाराज किशनसिंहने सन् १६६८में स्थापित किया।

(१) रूपनगर–सलेमाबादसे उत्तरपूर्व ६ मील। इस नगरके दक्षिण १॥ मील ३ मानस्तम्भ जैनियोंके स्मारक हैं। सबमें लेख है, मध्यमे जैन तीर्थंकरकी मूर्ति है। इस मूर्तिके नीचे लेख है–सं० १०१८ जेठसुदी २ मेघसेनाचार्यकी निषेधिका उनके मरणके पीछे उनके शिष्य विमनसेन पंडितने बनाई (लेख नं० २९४०)। तीसरे स्तम्भका लेख है कि पद्मसेनाचार्य सं० १०७६ पौष सुदी १२को स्वर्ग प्राप्त हुए। इस स्तम्भको किसी चित्रनन्दनने स्थापित किया (नं० २९४२)।

(२) अराई–किशनगढ़से दक्षिणपूर्व १४ मील। यहां दिगंबर जैनियोंकी मूर्तियां १२वी शताब्दीकी भी मिली हैं।

(९) बूंदी (हाड़ौती या टोंक एजन्सी)

हाड़ौती एजन्सीमें बून्दी टोंक शाहपुरा शामिल हैं। यहां स्थान ९१७८ वर्गमील है।

बूंदी–की चौहद्दी है–उत्तरमे जैपुर, टोंक; पश्चिममें उदयपुर, दक्षिणपूर्व कोटा। यहां २२२० वर्गमील स्थान है।

केशरिया पाटन–चम्बलसे उत्तर कोटासे १२ मील। यह प्राचीन स्थान है। यहां सबमे पुराना शिलालेख एक सतीके मंदिरमें है जो नदी तटपर है। इसपर सन् ३९ और ९३ है (नोट–यहां जैन मंदिर भी है)।

(१०) टौंक।

इसकी चौहद्दी है–उत्तरमें इन्दौर, पश्चिममें झालावाड़, दक्षिण व पूर्व ग्वालियर। यहां स्थान २५५३ वर्गमील–यहां १९ सैकड़ा जैनी हैं। खास टोंकके जैन मंदिरमें ११ वीं शताब्दीका लेख है।

सिरोंजनगर–टोंकनगरसे दक्षिण पूर्व २०० मील। केथोरा स्टेशनसे जाया जासक्ता है। पुराने कालमें यह बडा नगर था। दक्षिणमे आगरा जाते हुए मार्गमें पडता था–ध्वंश प्राप्त सुन्दर मकान हैं। टेवरनियर इंग्रेज यात्री यहां १७वी शताब्दीमे आया था वह यहांका हाल लिखता है कि यह नगर व्यापारी और कारी-गरोंसे भरा हुआ है। तनजेव और छींटके लिये प्रसिद्ध है। यहांकी तनजेवें इतनी महीन बनती थीं कि पहननेमे सर्व वदन दिखता था। ये सब तनजेवें खास बादशाह और उसके दरबारियोंके लिये दिहली भेजी जाती थीं। अब यह कारीगरी नष्ट हो गई है।

---

(११) भरतपुर राज्य।

इनकी चौहद्दी यह है। उत्तरमें गुड़गांव, पश्चिममें अलवर, दक्षिण पश्चिम जेपुर, दक्षिणमें जैपुर और धौलपुर, पूर्वमें आगरा। यहां १९८२ वर्गमील स्थान है।

यहां पुरातत्व बयाना, कामा और रूपबासमें है।

(१) बयाना-प्राचीन नाम श्रीपथ है। दो पुराने हिन्दू मंदिर हैं जिनको मुसल्मानोंने मसजिद बना लिया है। हरएकमें संस्कृतमें शिलालेख हैं-एकमें है सन् १०४३ जादोवंशी राजा विजयपालने यहां दक्षिण पश्चिम २ मीलपर विजयगढ़का किला बनवाया जिसको विदलगढ़ किला कहते हैं। किलेमें पुराना मंदिर है उसके लाल खंभेपर एक लेख राजा विष्णुवर्द्धनका है जो सन् ३७२में समुद्रगुप्तके आधीन था। राजा विजयपाल जिसकी संतान करौलीमें राज्य करती है ११वीं शताब्दीमें महमूद गजनीके भतीजे मसूद सालारसे मारा गया। यहां जैन मंदिर है जिसमें नरोलीसे निकली हुई १० दिगम्बर जैन मूर्तियां विराजित हैं, ये कूप खोदते निकली थीं। वि० सं० ११९३ है। जो चिन्ह स्पष्ट हैं उनसे झलकता है कि वे ऋषभदेव, संभवनाथ, पुष्पदंत, विमलनाथ, कुंथनाथ, अरहनाथ, नेमिनाथकी मूर्तियां हैं।

(२) कामा-भरतपुरसे ३६ मील उत्तर। यहां पुराना किला है। हिंदू मूर्तियोंके बहुतसे खण्ड एक मसजिदमें हैं जिसे चौरासी खंभा कहते हैं। हरएक खंभेपर कारीगरी है। एकपर संस्कृतमें लेख है। इसमें सूरसेनोंका वर्णन है। ता० नहीं है। शायद ८वीं शताब्दीका हो। एक विष्णुके मंदिर बनानेका वर्णन है। सं० नोट-यहां जैन मंदिर है व संस्कृतका प्राचीन शास्त्र भंडार है।

---

[१२] कोटा (कोटा झालावाड एजन्सी)

कोटा—इसकी चौहद्दी है। उत्तरमें जैपुर, पश्चिममें बूंदी, उदयपुर, दक्षिण-पश्चिम रामपुर भानपुर, इंदौरका झालावाडा, दक्षिणपूर्व खिलचीपुर, राजगढ़। यहां ९६८४ वर्गमील स्थान है।

पुरातत्त्व—सबसे प्राचीन चौरी और मुकुन्द द्वारापर हैं जो ९वीं शताब्दीके हैं।

(१) कंसवा ग्राम—प्राचीन नाम कनवाश्रम। कोटासे दक्षिण पूर्व ४ मील। सन् ७४० का लेख मौर्यवंशका है जिसमें धवल और शिवगन राजाओंका वर्णन है।

(२) रामगढ़—मंगरोलसे पूर्व ६ मील। यहां बहुतसे पुराने जैन मंदिर हैं।

(३) बारां—यहां श्री कुन्दकुन्दाचार्य जैनाचार्यकी पादुका हैं।

(४) मऊ—प्राचीन नगर। झालरापाटन शहरसे दक्षिणपूर्व १२ मील। यह चन्द्रवती नगरसे दूसरे नं० पर था। पाव मील तक सब तरफ प्राचीन मकान हैं।

(५) मुकंद्वारा—कोटासे दक्षिण पूर्व ३२ मील। १५०० फुट ऊंची मुकुंद्वारा पहाड़ीपर ग्राम। यहां प्राचीन बड़े२ मकान हैं जो सन् ई० ४५० के करीबके होंगे। १० फुट ऊंचे खुदे हुए खंभे हैं।

(१) बीकानेर शहर—यहां जैनियोंके कई उपासरे व १९९ मंदिर हैं जिनमें बहुतसे संस्कृतके लेख हैं।

(२) रेणी—बीकानेरसे उत्तरपूर्व १२० मील। यहां बहुतसे सुन्दर जैन मंदिर हैं जिनमें एक मंदिर बहुत मजबूत कारीगरीका सन् ९४२ का है।

(१५) अलवर राज्य।

इसकी चौहद्दी है—उत्तरमें गुड़गांव, उत्तर पश्चिममें नारनौल, पश्चिम दक्षिणमें जैपुर। पूर्वमें भरतपुर। उत्तरपूर्व गुड़गांव। यहां ३,१४१ वर्गमील स्थान है।

(१) राजगढ़ नगर—अलवरसे २२ मील दक्षिण। रेल्वे ष्टेशनसे १ मील। यहांसे पूर्व आधमील पर एक पुराने नगरके अवशेष हैं जो दूसरी शताब्दीमें राजपूतोंकी वरगूजर जातिके राना बाघसिंह द्वारा बसाया गया था। बघेला सरोवर अभीतक प्रसिद्ध है। इस सरोवरके तटपर तीन पुरुषाकार बड़ी जैन मूर्तियें नग्न खड़े आसन हैं। एक मंदिरके खुदे हुए द्वारके दो भाग पड़े हैं व कुछ खंडित जैन मूर्तियां हैं। जब नया राजगढ़ बनाया था तब ये मूर्तियां खुदाईमें निकली थीं।

(२) पारनगर—अलवरसे ८ मील पश्चिम। यह वरगूजर राजपूतोंकी पुरानी राज्यधानी है। यहां नीलकंठ महादेवका मंदिर है जिसको अजयपालने सन् ९५३ में बनाया था। एक ध्वंश मंदिरमें एक विशाल जैन मूर्ति १३ फुट ऊंची है जिसके ऊपर २॥ फुटका छत्र है, दो हाथी रक्षा कर रहे हैं।

(१३) झालावाड़ा राज्य।

इसकी चौहद्दी यह है-उत्तर पूर्व कोटा, पश्चिम रामपुर। भानपुर, आगरा; दक्षिण पश्चिम सीतामऊ, जावरा; दक्षिण देवास, पूर्वमें धिरावा। यहां ८१० वर्गमील स्थान है।

चंद्रावती-झालरापाटन नगरके निकट अति प्राचीन नगर चन्द्रावती है। वर्तमान नगरके दक्षिण ओर है। कहते हैं इस नगरको मालवाके राजा चन्द्रसेनने बसाया था जो अबुलफजलके कथनानुसार प्रसिद्ध विक्रमादित्य राजाके पीछे राजा हुआ था। कनिंघम साहब कहते हैं कि यहां सन् ई०से ५००से १००० वर्ष पूर्वके प्राचीन ताम्बेके सिक्के मिले हैं। चन्द्रभागा नदीके तटपर जो ध्वंश हैं उनमें सीतलेश्वर महादेवका बहुत बड़ा मंदिर सन् ६००का है। इन ध्वंसोंके उत्तर सन् १७९६में नया नगर बसाया गया। इसमें एक जैन मंदिर है जो पहले पुराने नगरमें सामिल था। सं० नोट-झालरापाटण नगरमें कई जैन मंदिर हैं व श्रीशांतिनाथकी दर्शनीय मूर्ति व कई दि० जैन मुनियोंके समाधिस्थान हैं।

[१४] बीकानेर राज्य।

चौहद्दी है-उत्तर पश्चिम बहावलपुर, दक्षिण पश्चिम जैसलमेर दक्षिण-माड़वाड़, दक्षिण पूर्व जेपुर शेखावाटी, पूर्वमें लाहौर-हिसार यहां २२८११ वर्गमील स्थान है। इसको सन् १४६१ माड़वाड़के राना बीकाने बसाया था। यहां चार दादी जैनी हैं। कु संख्या १९०१ में २३४०२ थी।

(१) बीकानेर शहर–यहां जैनियोके कई उपासरे व १९९ मंदिर हैं जिनमें बहुतसे संस्कृतके लेख हैं।

(२) रेणी–बीकानेरसे उत्तरपूर्व १२० मील। यहां बहुतसे सुन्दर जैन मंदिर हैं जिनमें एक मंदिर बहुत मजबूत कारीगरीका सन् ९४२ का है।

(१५) अलवर राज्य।

इसकी चौहद्दी है–उत्तरमें गुड़गांव, उत्तर पश्चिममें नारनौल, पश्चिम दक्षिणमें जैपुर। पूर्वमें भरतपुर। उत्तरपूर्व गुडगांव। यहां ३१४१ वर्गमील स्थान है।

(१) राजगढ़ नगर–अलवरसे २२ मील दक्षिण। रेलवे टेशनसे १ मील। यहांसे पूर्व आधमील पर एक पुराने नगरके अवशेष हैं जो दूसरी शताब्दीमें राजपूतोंकी वरगूजर जातिके राजा बाघसिंह द्वारा बसाया गया था। बघेला सरोवर अभीतक प्रसिद्ध है। इस सरोवरके तटपर तीन पुरुषाकार बड़ी जैन मूर्तियें नग्न खड़े आसन हैं। एक मंदिरके खुदे हुए द्वारके दो भाग पड़े हैं व कुछ खंडित जैन मूर्तियां हैं। जब नया राजगढ़ बनाया था तब ये मूर्तियां खुदाईमें निकली थी।

(२) पारनगर–अलवरसे ८ मील पश्चिम। यह वरगूजर राजपूतोंकी पुरानी राज्यधानी है। यहां नीलकंठ महादेवका मंदिर है जिसको अजयपालने सन् ९५३ में बनाया था। एक ध्वंश मंदिरमें एक विशाल जैन मूर्ति १३ फुट ऊंची है जिसके ऊपर २॥ फुटका छत्र है, दो हाथी रक्षा कर रहे हैं।

नं० १६का अवशेष।

राजपूताना म्यूजियम, अजमेर।

इसकी रिपोर्टें सन् १९०८ से १९२४ तक जो देखनेमें आई उनसे नीचे लिखे समाचार विदित हुए-

सन् १९०८-९ कटरा-जि० भरतपुरसे एक दि० जैन मूर्ति श्री महावीरस्वामी सं० १०८१ मस्तकरहित, एक आसन सं० १०११ व दूसरा आसन प्राप्त हुए।

मुंगथला-जि० टोंकसे एक छोटी पीतलकी जैन मूर्ति सं० १६७२ मिली।

नीचे लिखे लेख नकल किये गए-

सिरोही राज्य-(१) पिंडवारा श्री महावीर मंदिरमें-श्री वर्द्धमानस्वामीकी मूर्ति सं० १४६९ राना सोहन (देवरसोमा) सिरोहीके राज्यमें।

(२) झरोली-श्री शांतिनाथ मंदिर-राजा केल्हनकी कन्या व राजा धारावर्षकी रानी श्री रंगदेवीने सं० १२५५में मंदिरको भूमि दान दी तथा देवर विजयसिंहके समयमें अन्न दिये।

(३) मुंगथला-जैन मंदिरमें एक स्तम्भपर राजा वीरदेव कृत सं० १२१६ व राजा करणदेवके पुत्र राजा विशालदेवने दान किया सं० १४४२।

(४) कपदरन-जैन मंदिरकी मूर्तिपर लेख, जज्जाके पुत्र गुणाढ्य द्वारा सं० १०९१।

(५) पालरी-एक मूर्तिपर केल्हणदेवके पुत्र राजा जैतसिंह

सं० १२३९ (?) अन्यपर नड्लके राजा सावंतसिंह स० १२९९ व एकपर स० १२९१।

सन् १९१०-११-सिरोही राज्य-(१) दम्मानी-यह ग्राम आबूजीके नेमिनाथ मंदिर या लूणवसहीके आधीन है। यहा एक पाषाण पर लेख है। तेजपालकी स्त्री अनूपमदेवीके कुशलार्थ महनसीह व अन्योंने दान किया स० १२९६।

(२) कालागरा-चन्द्रावतीके महाराजाधिराज आल्हनसिंहके राज्यमें स० १३०० खेता आदिने श्रीपार्श्वनाथ मंदिरको दान किया।

सन् १९११-१२ वारली-(अजमेर) के भुलतामाताके मंदिरमेंसे एक स्तमका भाग पाषाण मिला जिसके अक्षर सन् ई०से पूर्वके हैं। पहली लाइनमे है "वीराय भगवते", दूसरीमें है "चउ-रासीवसे"। चौथीमें है "रामनीविट्ठा माज्झमिके"। इससे प्रगट है कि यह किसी जैन मंदिरका है। श्री महावीर सवत ८४ है। माज्झमिकसे मतलब माध्यमिकसे है जो अब नगरी कहलाती है व जो चित्तौरसे उत्तर ८ मील है। यह लेख अजमेर जिलेमें सबसे प्राचीन मिला है।

भरतपुर राज्य गोवर्द्धन-से एक जैन मूर्तिका आसन मिला है जिसपर जैनाचार्य सुरत्नसेन और यश कीर्ति लिखित है।

टांटोटी-राज्य (अजमेर) टाटोटीसे श्री शांतिनाथकी पद्मासन मूर्ति २॥ फुट ऊची मिली है. मध्यमें आदिनाथजी भी है।

वघेरा राज्य-वघेरामें करीब ३ फुट ऊची कायोत्सर्ग श्री पार्श्वनाथकी मूर्ति मस्तकरहित मिली है व एक पाषाण मिला है जिस पर ८ तीर्थंकर अंकित हैं और एक जैन मूर्तिका आसन मिला है

शिलालेख।

सिहोर राज्य-(१) गट्याली-एक जैन मंदिरके स्तम्भमें-घनियाविहार नामके जैन मंदिरको भामावती नामका खेत नोनाने सं० १०८९में दान किया।

(२) नांदिया-जैन मंदिरके स्तम्भपर इस स्तम्भको स० १२९८में भीमने अपने पिता रौरकमणके हितार्थ स्थापित किया जो गैर पुनसिंहके पुत्र थे।

सन् १९१२-१३।

झाल्रापाटन शहर-सात सलाकी पहाडीपर स्तम्भ हैं (१) समाधि स्थान सं० १०६६ नेमिदेवाचार्य और बलदेवाचार्य। (२) सं० ११६६ समाधि श्रेष्ठी पापा। (३) सं० ११७० समाधि श्रेष्ठी सांधला, (४) सं० १२९९ मूलसंघ देवसंघ (लेख अस्पष्ट)।

राज्य गंगधार-जैन मूर्तियोंपर नीचेके लेख हैं।

(१) सं० १३३० कुम्भके पुत्र सा फादुआ द्वारा।

(२) सं० १३९२ सा आहदके पुत्र देदा द्वारा।

(३) सं० १५१२-श्री अभिनंदन मूर्ति भंडारी गजा द्वारा।

(४) स० १९२४ श्रीश्रेयासमूर्ति जयताके पुत्र श्रावक मंडन „

सन् १९१४ भरतपुर बयाना-यादव राजा विजयपाल करौलीका एक स्तंभ मिला है। इसपर काम्यकगच्छके जैन श्वेतांबर आचार्य विष्णुसूरि और माहेश्वरसूरीके नाम हैं। सं० ११०० में माहेश्वरसूरीकी समाधि हुई।

मेवाड-अहार-जैन मंदिरके आलेमें-जिसको बावन देवरान कहते हैं-गुहिलराज नरवाहाके समयका अनुमान सं० १०१० और १०३४ का लेख है।

सन् १९१५। नीचे प्रकार जैन मूर्तियें मिलीं–

डूंगरपुर राज्य वरोड़ासे—

(१) जैन मूर्ति १। फुट ऊंची मस्तक रहित सं० १२ (xx)
(२)　,,　१। फुट ऊंची　सं० १२६४
(३)　,,　मस्तक रहित १ फुट　सं० १७१२
(४)　,,　१ फुट सं० १७३०　मस्तक रहित
(५)　,,　||| फुट सं० १६३२　,,
(६)　,,　||| फुट सं० १६९४　,,
(७)　,,　१। फुट सुमतिनाथ सं० १६९४
(८)　,,　१ फुट सं० १६(xx)
(९)　,,　१। फुट सं० १६५०
(१०)　,,　,, पार्श्वनाथ मस्तक रहित संवत १५७३
(११) दि० जैन मूर्तिका भाग १। फुट।

वांसवाड़ा राज्य–कलिंजरासे–

(१) दि०जैन मूर्तिका निम्न भाग　सं० १६४०
(२)　,,　,, चंद्रप्रभुका ,,　सं० १६२५
(३)　,,　,, सुमतिनाथ मस्तकरहित　सं० १६४८
(४)　,,　,, श्रेयांसनाथ　,,　सं० १६४८

तलवाड़ासे–(१) दि०जैन मूर्ति कायोत्सर्ग १। फुट सं० ११३०
(२)　,,　,,　२|||,, सं० ११३७
(३)　,,　,,　३ ,,

डूंगरपुर राज्य वरोड़ासे–मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १६६१।

शिलालेख नीचे प्रमाण लिखे गए।

वांसवाड़ा–अरथूणाके जैन मंदिरमें लेख सं० ११९९ पर-
ार राजा चामुंडराजके राज्यमें।

डूंगरपुर आंत्री–के जैन मंदिरकी भीतमें सं० १५२५
ंगरपुरके रावल सोमदासके समयमें।

सन् १९१६–

डूंगरपुर राज्य ऊपरगांव–जैन मंदिरकी भीतमें लेख, मंदिर
नवाया प्रल्हादने जो डूंगरपुरके रावल प्रतापसिंहका मंत्री था
ं० १४६१।

सन् १९१७–

वांसवाड़ा राज्य–नोगमा–(१) श्रीशांतिनाथजीके जैन मंदि-
की भीतपर १ लेख सं० १५७१ महाराजाधिराज उदयसिंह डूंगर-
रके समयमें–श्री शांतिनाथजीके मंदिरको हूमड़ श्रीपाल और उसके
ई राया, मांका, रुड़ा, भन्ना, लाड़का और वीर दासने बनवाया।

(२) एक स्मारक स्तम्भपर अंकित–सन् १५३७ समाधि
न गुरु डूंगरपुरके राजाधिराज सोमदासके समयमें।

सन् १९१८–नीचे लिखे लेख जाने गए।

उदयपुर केलवा–सीतलनाथजीके मंदिरमें सं० १०२३।

वांसवाड़ा अरथूणा–(१) गोदीजीके जैन मंदिरके आलेमें
ो मुनिसुव्रतनाथ मूर्ति सं० ११६९।

(२) जगानी तलेसराके जैन मंदिरमें पार्श्वनाथजीकी मूर्तिपर
० १६९९ उकेश जातीय साहनीता तलेसराके।

वांसवाड़ा–राजनगर–राजसमुद्र झीलके ऊपर पहाडीपर

चतुर्मुख जैन मंदिरमें श्री रिषभदेवकी मूर्तिपर सं० १७३२, जगतसिंहके पुत्र महाराणा राजसिंहके राज्यमें मूरपुरिया ओसवाल साह दयालसाहने मंदिर बनवाया ।

सन् १९१९–

अजमेरके अढ़ाई दिनके झोपड़ेसे एक जैन मूर्तिका मस्तक प्राप्त हुआ । नीचे लिखे लेख जाने गए–

अलवरराज्य–अजबगढ़–(१) दि० जैन मंदिरकी मूर्तिके आसनपर सं० ११७० श्रावक अनंतपाल ।

(२) श्री चंद्रप्रभुकी पीतलकी मूर्तिपर उसी मंदिरमें सं० १४९३, मूर्ति स्थापित श्रीमाल जातीय साह करण भा० कामलदेके पुत्र साहनवेदा भा० अमकू इनके पुत्र भीमासिंह और खेतानी तपगच्छीय रत्नप्रभसूरिके उपदेशसे ।

अलवर–धर्मशाला–पश्चिम द्वारपर संभवनाथजीकी जैन मूर्ति सं० १५१०, गोपाचल (ग्वालियर)के राजाधिराज डूंगरसिंहदेवके राज्यमें उकेश जातीय पंचालौत गोत्र-भंडारी देवराज भा० देल्हा-नादेके पुत्र गंजरीनाथ और उसकी स्त्री रूपाईने खरतरगच्छीय जिनचंद्रसूरिके शिष्य जिनसागरसूरि द्वारा ।

अलवर–अजबगढ़–दि० जैन मंदिरमें–(१) पीतलकी मूर्ति श्री धर्मनाथ सं० १५१९ श्रीमाल जाति ब्राह्मण गच्छके व्यवहारी पुन्ना भा० देड़ाके पुत्र दाहक भा० लखा, उसके पुत्र नरसिंह और सीहाने विमलसूरिके उपदेशसे। (२) पीतलकी मूर्ति श्री पार्श्वनाथ सं० १५५९ श्रेष्ठी गोविन्द स्त्री हिरदेने मूलसंघ जिनप्रभसूरि भ० के शिष्य विजयकीर्ति गुरुके उपदेशसे । (३) एक पाषाणमूर्तिपर सं०

१८२६ मंगही नंदलाल द्वारा जैपुरके सवाई पृथ्वीसिंहके राज्यमें सवाई माधोपुरके भ० सुरेन्द्रकीर्तिके उपदेशसे।

सन् १९२०—

अजमेर पुष्करसे—एक दि० जैन मूर्ति मस्तकरहित मिली सं० ११९९ प्रतिष्ठित आचार्य गोतानंदीके शिष्य गुणचंद्र पंडित द्वारा। नीचेके लेख जाने गए—

अलवरराज्यमें—(१) नौगमा—तहसील रामगढ़—दि० जैन मंदिरमें कायोत्सर्ग अनंतनाथके आसनपर सं० ११७५ आचार्य विजयकीर्तिके शिष्य नरेन्द्रकीर्ति द्वारा।

(२) मुन्दाना—जैन मंदिरमें एक पाषाण मूर्तिपर सं० १३४८ मूलसंघ लम्बलम्बकान्वय (लमेचू) मंतराज भा० अंजड़के पुत्र लाखन द्वारा।

(३) खेड़ा—जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति २४ तीर्थंकरकी सं० १४७९ वाघोरी ग्राममें साह देहल (भा० कोहला और पीरी) पुत्र जिनदासने सहसकीर्तिदेव और पंडित लक्ष्मीधर द्वारा।

(४) नौगमा—दि० जैन मंदिरमें एक पाषाण मूर्तिपर सं० १५०९ भ० काष्टासंघी माथुरान्वय पुष्करगण क्षेमकीर्ति हेमकीर्ति और कमलकीर्ति।

(५) मौजीपुर—श्वे० जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति सुमतिनाथ सं० १५२५। ओसवाल जाति स्वयंभ गोत्र साहसाला भा० गांगी, साह मोहता भा० गली सा० गोल्हा भा० खेतू और उनके पुत्र धानाने बड़ागच्छके गुणचंद्रसूरिके शिष्य विनयप्रभसूरि द्वारा।

(११) लक्ष्मणगढ़-रिषभनाथके दि० जैन मंदिरमें श्री कुन्थनाथकी पीतलकी मूर्तिपर सं० १७००, जोधपुरके बृहत् उकेसा जातीय शाह लक्ष्मणक और जिनदास, अक्षयराज, तपागच्छीय, भ० विजयसिंहसूरि और विजयदेवसूरिकी आज्ञासे उपाध्याय धर्मचंद्रने।

सिरोहीराज्य-सिरोही-(१) चौमुखजीके जैन मंदिरकी भीतपर-आदिनाथजीकी मूर्ति सं० १६३४ सीपा भा० सरूपदे और पुत्र असपाल आदिने तपागच्छके हीरविजयसूरि और विनयसेनसूरि।

(२) उसी मंदिरमें जैन मूर्ति सं० १७२१ सिरोहीके महाराज श्री अक्षयराज राज्ये प्राग्वाद जातिकी वृद्ध शाषाके गुणराजके पुत्र वीरपाल द्वारा।

सन् १९२१ नीचे प्रमाण मूर्तियें आदि मिलीं-

(१) अजमेर-चार जैन मूर्तियोंका एक स्तम्भ, हर्बेंड मेमोरियल हाईस्कूलके निकट एक कूएमेंसे चिन्ह पद्मका है सं-११३७।

(२) धारके बधनोर-ग्राममें जैन मूर्तिका आसन सं० १२१६ लाड़ बागड़ संघके आचार्य कुमारसेन।

(३) जैपुर-में शहरसे ३ मील पूरणघाटपर बालाजी हनूमान मंदिरके पास-शिवमंदिरके आलेपर एक विनामितीका लेख। यह वास्तवमें जैन मंदिरका है उसको तोड़कर यह मंडप बनाया गया है। इसपर लेख है जिन नाभि श्रावक पुष्कर जाति, पंडित निष्कलंकसेन् यह १२ वीं शताब्दीका मालूम होता है।

सन् १९२२-

नीचेके लेख जाने गए।

सिरोही राज्य-सिरोही-(१) शांतिनाथस्वामीके मंदिरमें पीतलकी मूर्ति पार्श्वनाथ सं० ११३९ सेजहाके पुत्र साहूका।

(६) खेड़ा–जैन मंदिरकी एक पाषाण मूर्तिपर सं० १९३१ मूलसंघ सरस्वतीगच्छ महाराज कीर्तिसिंहदेव।

(७) नौगमा–श्री अनंतनाथके दि०जैन मंदिरमें सं. १९४४ साहिलवाल जातिके साहवलिय, मूलसंघ कुंद० भ० पदमनंदिदेवके शिष्य भ० शुभचंद्रदेवके शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वारा।

(८) नौगमा–वहीं एक पाषाण मूर्तिपर सं० १९४८ भ० जिनचंद्र मूलसंघ, जीवराज पापड़ीवाल।

(९) लक्ष्मणगढ़–जैन मंदिरमें पीतलकी मूर्ति पार्श्वनाथ सं० १९९९ साहसंग्राम भा० कनकारदे पुत्र साह लहुआ स्त्री पूंगीने, मूलसंघ भ० शुभचंद्रदेव द्वारा।

(१०) अलवर शहर–एक पाषाण जो अब एक ठाकुरके घरमें है पहले जैन मंदिरकी भीतपर था। यह लिखता है कि अलवरमें श्री पार्श्वनाथका जैन मंदिर योगिनीपुर (दिहली)के हीरानंदने जो सं० १६८९में अंगलपुर (आगरा) में रहते थे, ओसवालवंशीय बृहत् खरतरगच्छके जिनचंद्रसूरिके शिष्य वस्तक-रंगकलश द्वारा बनवाया।

(११) मौजीपुर–श्वे० जैन मंदिरमें सीतलनाथकी पाषाण मूर्तिपर–सं० १६९४ हाड़ोयावासी हूमड़ जाति उत्तरेश्वर गोत्र मिहता साधारणके पुत्र लाला और गलाने, मूलसंघ कुंद० सर० गच्छ बलात्कारगण भट्टारक वादिभूषण गुरुद्वारा।

(१२) लक्ष्मणगढ़–दि० जैन मंदिर–पाषाण मूर्ति सं० १६६० खंडेलवाल साह गोत्र छाजूके पुत्र सारणमलके पुत्र गूजरने मूलसंघ नंद्याम्नाय भ० चंद्रकीर्ति द्वारा।

(११) लक्ष्मणगढ़-रिषभनाथके दि० जैन मंदिरमें श्री कुन्थनाथकी पीतलकी मूर्तिपर सं० १७००, जोधपुरके वृहत उकेसा जातीय शाह लक्ष्मणक और जिनदास, अक्षयराम, तपागच्छीय, भ० विजयसिंहसूरि और विजयदेवसूरिकी आज्ञासे उपाध्याय धर्मचंद्रने।

सिरोहीराज्य-सिरोही-(१) चौमुखजीके जैन मंदिरकी भीतपर-आदिनाथजीकी मूर्ति सं० १६३४ सीपा भा० सरूपदे और पुत्र असपाल आदिने तपागच्छके हीरविजयसूरि और विनयसेनसूरि।

(२) उसी मंदिरमें जैन मूर्ति सं० १७२१ सिरोहीके महाराज श्री अक्षयराज राज्ये प्राग्वाद जातिकी वृद्ध शाषाके गुणराजके पुत्र वीरपाल द्वारा।

सन् १९२१ नीचे प्रमाण मूर्तियें आदि मिलीं-

(१) अजमेर-चार जैन मूर्तियोंका एक स्तम्भ, हस्बेंड मेमोरियल हाईस्कूलके निकट एक कूएमेंसे चिन्ह पद्मका है सं.११३७।

(२) धारके वघनोर-ग्राममें जैन मूर्तिका आसन सं० १२१६ लाड़ बागड़ संघके आचार्य कुमारसेन।

(३) जैपुर-में शहरसे ३ मील पूरणघाटपर बालाजी हनूमान मंदिरके पास-शिवमंदिरके आलेपर एक विनामितीका लेख। यह वास्तवमें जैन मंदिरका है उसको तोड़कर यह मंडप बनाया गया है। इसपर लेख है जिन नाभि श्रावक पुष्कर जाति, पंडित निष्कलंकसेन् यह १२ वीं शताब्दीका मालूम होता है।

सन् १९२२—

नीचेके लेख जाने गए।

सिरोही राज्य-सिरोही-(१) शांतिनाथस्वामीके मंदिरमें पीतलकी मूर्ति पार्श्वनाथ सं० ११३९ सेजहाके पुत्र साहऊका।

(२) उसी मंदिरमें पीतल मूर्ति नेमिनाथ २४ जिनसहित सं० १५२२ साधु केल्हा उकेसाजाति वापना गोत्र, कक्कसूरिद्वारा।

(३) वहीं धर्मनाथकी पीतल मूर्ति सं० १५२४ वर्षे माघ वदी ६ भौमे उकेशवंशे बलाहि गोत्रे सा० जेसा भार्या नीरू चि० देयू पुत्र साहजीवड़श्रावके सा० भा० जइतलदे परिवार युतेन श्री धर्मनाथ बिंबका० प्र० श्री खरतर गच्छेश श्री जिनचन्द्रसूरिभिः।

नोट-इस लेखके ऊपर रायबहादुर पंडित गौरीशंकर ओझाजीका नोट है कि ओसवाल जातिमें बलाही गोत्र प्रगट करता है कि आजकल भी मिलनेवाली अस्पृश्य बलाही जातिको जैनी बनाकर बलाही गोत्र स्थापित किया गया होगा। उनका अनुमान है कि ओसानगरके सब निवासियोंको जैनी बनाकर ओसवाल वंश स्थापित किया गया।

परतापगढ़ राज्य-गुमानजीका जैन मंदिर-(१) पीतल मूर्ति श्री रिषभदेव सं० १३६३ रत्नपुरावासी रानी भा० रत्नादेवी पुत्र तेजाक और उसके पुत्र विजयसिंहने अपनी माता जयतल्देवीके हितार्थ वृहद् गच्छीयसूरि द्वारा।

(२) वहीं पीतल मूर्ति सं० १४६२ धर्मनाथ, हूमड़ जेसाने हूमड़ गच्छके सर्वानन्दसूरिके शिष्य सिंहदत्तसूरि द्वारा।

(३) वहीं शांतिनाथकी पीतलकी मूर्ति सं०१४६४ पारीक्षव बजेसी भा० रानीके पुत्र हूमड़ लिम्बाकने मूलसंघीसूरि द्वारा।

(४) परतापगढ़ नया जैन मंदिर-पीतल मूर्ति सं. १३७३ गांधीकड़ा भा० तेझी।

(५) वहीं-पद्मप्रभुकी पीतलमूर्ति सं० १५११, संघपति महिपाल श्रीमालिकी भार्या श्राविका अमीने सुरेश्वरसूरि द्वारा।

(६) परतापगढ़ देवलिया—श्वे॰ जैन मंदिरमें पार्श्वनाथकी पीतलकी मूर्ति सं॰ १३७३ ढंढलेश्वरावटकू नगरके श्रीमाल ठाकुर सेताकने अजितदेवसूरि द्वारा

(७) वहीं—शांतिनाथकी पीतलकी मूर्ति सं॰ १३९३ प्राग्वाट (पोडवाड़) ज्ञातिके व्यवहारी आल्हा मा॰ सुमलदेवीने।

(८) वहीं—शांतिनाथ मूर्ति सं॰ १३९४ वदालम्वी नगरके श्रीमाल प्रभाकने।

(९) वहीं—मूर्ति पार्श्वनाथ सं॰ १४९२ श्रेष्ठी करमसिंहे पंचतीर्थके पुत्र जैताकने साधु पूज्य पसचन्द्रसूरि।

(१०) वहीं—पीतलमूर्ति पार्श्व॰ सं॰ १४७९ हूमड़ श्रेष्ठी गोइन्दा मा॰ गौरादेवी तपागच्छ सोमसुन्दर सूरि।

(११) वहीं—पीतल मूर्ति विमलनाथ सं॰ १४८३श्रीमाल ठाकुर सादाके पुत्र वेला, वरिया, मेड़ाने नागेंद्रगच्छके पदमसूरिद्वारा।

(१२) वहीं—सीतलनाथकी पीतलमूर्ति सं॰ १९०९ हूमड़ ठाकुर तेजाने मूलसंघ म॰ सकलकीर्तिद्वारा।

(१३) वहीं—पीतल मूर्ति पद्मप्रभु सं॰. १९१८ श्रेष्ठी साभाके पुत्र गड़कने प्राग्वाद जाति, तपागच्छ पंथौली ग्रामके लक्ष्मीसागर सूरिद्वारा।

(१४) वहीं—पीतल मूर्ति आदिनाथ पंचकल्याणी सं॰१९२१ हूमड़ श्रेष्ठी नासल मूलसंघी म॰ सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति।

(१९) परतापगढ़—साधवारा मंदिर—पीतल मूर्ति २४ जिन सं॰ १४४६ व्यवहारी गंगाने पीपलगच्छके गुणरत्नसूरि द्वारा।

(१६) परतापढ़—झांसदी—रिषभदेवका दि॰ जैन मंदिर,

आदिनाथकी मूर्ति सं० १९२१ हूमड़ श्रेष्ठी पाता मूलसंघ भुवनकीर्तिदेव—

सन् १९२३—

नीचे लिखे लेख जाने गए।

चित्ताड़-(१) गभीरी नदीके पास एक पुलकी मिहराबमें पत्थर लगा है-यह लिखता है कि चित्रकूट महादुर्गकी पहाड़ीके नीचे तलहटिकामें श्री महावीरस्वामीका जैन मंदिर बनाया गया सं० १३२४में मेवाडके महाराज तेजसिंहदेवके राज्यमें-चैत्रगच्छी हेमचंद्रसूरि द्वारा।

(२) वहीं पर है-उसी जैन मंदिरके सम्बन्धमें गुहिलराना समरसिंहके समयमें जयतल्लदेवीने भूमिदान की। मर्तृपूरिय गच्छ साध्वी सुमला द्वारा।

(३) चित्तौरगढ़का एक शिलालेख उदयपुरके म्यूजियममें है। यह जैन मंदिरमें था-सं० १३३५-श्याम पार्श्वनाथजीका मंदिर चित्रकूटपर मेड़पात (मेवाड़) के राजा तेजसिंहकी रानी जयतल्लदेवीने बनवाया व महारानकुल समरसिंहदेव (गुहिलपुत्र) ने प्रद्युम्नसूरिको मठके लिये मंदिरके पश्चिम भूमि दान की।

(४) चितौरगढ़-चौमुखाके पास जैन मंदिर-जैन मूर्तिका आसन सं० १९४३ चित्रकूट राज्य श्री राजमल्ल राजेन्द्रके समयमें संघने स्थापित खरतरगच्छके जिनचंद्रसूरि द्वारा।

(५) महरोली-दिह्लीके पास कुतुबमीनारके पास एक पाषाणपर सं० १९३३ सुलतान बहलोल लोधी राज्ये, सिचालस जाति जाभगड़ वंशके श्रावक योगिनीपुर (दिहली) वासी इन्द्वारणमं

मा० सती। यह चौधरी पिथौराके पोते थे जो चौधरी वनवीरके पोते व चौधरी रूपचन्दके पुत्र थे।

सन् १९२४–

नीचे लिखे लेख जाने गए।

(१) सिरोहीराज्य नांदिया–एक वापीपर सं० ११३० जिसको नंदयक चैत्यके द्वारके निकट शिवगणने बनाई।

(२) वहीं–एक जैन मंदिरका स्तम्भ सं० १२९८ इसे राठोड़ पूर्णसिंहके पुत्र कमनके पुत्र भीमने बनाया।

(३) सिरोही–वसंतगढ़–जैन मंदिरकी एक जैन मूर्तिपर सं० १५०७ राणा कुम्भकरण राज्ये, वसंतपुर चैत्य मंदिर बनाया शांतिके पुत्र मादाकने--मुनि सुन्दरसूरि द्वारा।

(४) उदयपुर दिलवाड़ा–एक जैन मठमें खुला पाषाण सं० १४९१में राणा कुम्भकरण मेवाड़ने धर्मचिंतामणि मंदिरको दान किया।

अजमेर मड़वाड़ा गजटियर सन् १९०४ व अजमेर-इतिहास सन् १९११से विशेष यह विदित हुआ कि अजयपालका पुत्र अणा था। इसका लेख सन् ११९० का मिला है। इसने अजमेरमें अनासागर सरोवर बनवाया। इसपर संगमर्मरका चबूतरा बादशाह शाहजहांने बनवाया था। अणाका पुत्र विग्रहराज तृ०या विशालदेव था, यह बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इसने तूआर लोगोंसे दिहली लेलिया व सन् ११६३ में विशाल सागर बनवाया। इसीका भतीजा प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज था।

अढाई दिनके झोपड़ेके सम्बन्धमें कर्नल टॉडने लिखा है कि यह जैन मंदिर था। (नोट–यहां जैन मंदिर हो सक्ता है क्योंकि सन् १९१९के राजपूताना म्यूजियम अजमेरकी रिपोर्टमें यहां एक जैन मूर्तिका मस्तक मिला था ऐसा लेख है) जो ढ़ाई दिनमें बनवाया गया था। यहां २५९ वर्गफुटमें एक कालेज था, इसे विशालदेवने सन् ११५३में बनवाया था। यहां संस्कृतके शिलालेख मिले हैं।

एकमें है "श्रीविग्रहराजदेवेन कारितमायतनमिदं" चार लेखोमें संस्कृत और प्राकृतके दो प्राचीन नाटकोंके अंश हैं।

(१) ललितविग्रहराज नाटक सोमदेव महाकविकृत।

(२) हरकेली नाटक विग्रहराज कृत।

एक लेखमें चौहान वंशकी प्रशस्ति है।

अजमेरसे ७ मील पुष्कर बहुत प्राचीन स्थान है। यहां ग्रीक, क्षत्रप व गुप्तोंके सिक्के सन् ई०से चौथी शताब्दी पूर्वके मिले हैं। नासिकके पांडु लेना लेखके अनुसार उषभदत्त यहां आया था उसने बांनस नदीपर घाट बनवाया। दूसरी या तीसरी शताब्दीमें पुष्करमें जो पुराना लेख मिला है वह सन् ९२५ का राजा दुर्गराजका है।

दिगम्बर जैन डायरेक्टरी (मुद्रित सन् १९१४) से

अवशेष वर्णन–

मध्यप्रदेश, मध्यभारत, राजपूताना।

आहार–ओरछा रियासत, टीकमगढ़से पूर्व १९ मील तीन ० जैन मंदिर हैं। मुख्यमूर्ति श्री शांतिनाथजीकी २१ फुट ड्गासन है। लेख सं० १२३७ राजा देवपाल रत्नपाल, आचार्य तसागर, पद्मभास्कर शुद्धकीर्ति आदि।

कुंडलपुर–जि० दमोह–मुख्य मंदिरमें पर्वतपर श्री महावीर- ामीकी मूर्ति है। यह ४॥ गज ऊंची पद्मासन बहुत प्राचीन है। मंदिरके द्वारपर एक पत्थरमें इस मंदिरके जीर्णोद्धारका लेख है, कृत भाषामें है जो पूरा सार्थ डायरेक्टरीमें दिया हुआ है। र यह है सं० १७५७ में मूलसंघ ब० गणे सरस्वती गच्छे [० यशकीर्ति महामुनि, फिर ललितादिकीर्ति, फिर धर्मकीर्ति ापुराणके कर्ता फिर भानुकीर्ति फिर पद्मकीर्ति फिर सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० नेमिसागरके उपदेशसे जिनधर्म महिमामें रतदेव- शास्त्र पूजनमें तत्पर महाराजा श्री छत्रसालके राज्यमें।

क्षेत्र कुंडनपुर–जि० अमरावती–आर्वीसे ६ मील धामण- र स्टेशनसे १२ मील। यह प्राचीन् कौंडिरायपुर है, यह विदर्भ ार)के राजा भीष्मकी राज्यधानी थी। यहांपर तीन मंदिर हैं। नमें दि० जैनोका है उसमें प्रतिमा पार्श्वनाथकी बहुत प्राचीन ठोबाका जो अब वैष्णव मंदिर है वह प्राचीन जैन मंदिर था विठोबाकी मूर्ति है वह खड्गासन नेमनाथस्वामीकी प्रतिमा है।

प्यावला–राज्य दतिया–दि० जैन मंदिरमें १२ फुट

गासन श्री शांतिनाथ व आदिनाथजीकी मूर्तियें हैं। भोहरेमें पार्श्वनाथजीकी ४॥ फुट पद्मासन प्राचीन मूर्ति है।

गदावल ग्वालियर राज्य–सोनकच्छसे ३ कोस, प्रा वस्ती। दि०जैन मंदिर जीर्ण है उसमें ३०–४० खंडित प्रति है। कोई कोई १९ फुट ऊंची पद्मासन है। प्राचीन नाम च वती है, यहांसे २ मील एक पर्वतपर जैन मंदिरोंके खंडहर हैं

तालनपुर–रियासत इन्दौर कुकसीसे ३ मील। एक जैन मंदिर है, मूलनायक श्री मल्लिनाथजी ३॥ फुट पद्मासन १३२९–शेप ४ प्रतिमाए लेखरहित है, ये भूमिसे निकली थ

वैनेड़ा–इन्दौर त० देपालपुर अतिशयक्षेत्र एक दि० मंदिर है। चैत्र सुदीमें मेला भरता है।

गासन श्री शांतिनाथ व आदिनाथजीकी मूर्तियें हैं। भोंहरेमें श्री पार्श्वनाथजीकी ४॥ फुट पद्मासन प्राचीन मूर्ति है।

गंदावल ग्वालियर राज्य-सोनकच्छसे ३ कोस, प्राचीन वस्ती। दि० जैन मंदिर जीर्ण है उसमे ३०-४० खंडित प्रतिमाएं हैं। कोई कोई १६ फुट ऊंची पद्मासन हैं। प्राचीन नाम चंपावती है, यहांसे २ मील एक पर्वतपर जैन मंदिरोंके खंडहर हैं।

तालनपुर-रियासत इन्दौर कुकसीसे ३ मील। एक दि० जैन मंदिर है, मूलनायक श्री मल्लिनाथजी ३॥ फुट पद्मासन सं० १३३९-शेष ४ प्रतिमाएं लेखरहित हैं, ये भूमिसे निकली थीं

वैनेड़ा-इन्दौर त० देपालपुर अतिशयक्षेत्र एक दि० जै मंदिर है। चैत्र सुदीमें मेला भरता है।

चांदखेड़ी-कोटा निजामत खानपुर-यहांसे २ मील। यह प्राचीन मंदिर श्री आदिनाथ स्वामीका है। प्रतिमा ९ हाथ पद्मासन है। बगलमें शांतिनाथजीकी दो प्रतिमाए ७ हाथ ऊंची है। मंदिर द्वारपर मानस्तंभ १० फुट ऊंचा है उसपर लेख है-सं० १७४ मूलसंघे भ० सुरेन्द्रकीर्तिके उपदेशसे बघेलवार टोडरमल आदि।

चौवलेश्वर-शाहपुरा रियासत पर्वतपर मंदिर श्री पार्श्वनाथ

मक्सी पार्श्वनाथ-ग्वालियर राज्य-प्राचीन मंदिर मूलना पार्श्वनाथजी ढाई फुट पद्मासन। चतुर्थकालके हैं, यह

महोवा-यहां पठान मुहल्लेमें कुआं खोदते समय २४ जैन प्रतिमाएं निकली थीं जो वादा व ललितपुरमें गिर॥ उनमें श्री पार्श्वनाथजीकी पद्मासन सं० ८२१, व पद्मप्रभु ८२२ व महावीरस्वामी सं० ११९४ आदि हैं।